हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# कादम्बिनी

अक्तूबर 2017



- नशाख़ोरी का बढ़ता कुप्रभाव
  —अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव
- शांति सद्भाव देश की विशिष्टता
  —श्यामनारायण चौहान
- आर्थिक विकास और इस्लाम
  —डॉ॰ फ़रहत हुसैन
- एशियाई खेलों का इतिहास
  —संपादन प्रभाग

अल्लाह के रसूल ( सल्ल० ) ने
इरशाद फ़रमाया–
''यदि कोई व्यक्ति घर से वुज़ू करके नमाज़ पढ़ने की
नीयत से मस्जिद की तरफ़ जाता है,
तो उसका एक क़दम एक गुनाह को ख़त्म करता है
और दूसरा क़दम नेकी बढ़ाता है ।''
( मुस्लिम )

*A WELL WISHER*

**M/S. WADI BHANDRA**
**NAGPUR**

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# कान्ति

वर्ष 27 अंक 4 अक्तूबर 2017

**कह दो : मैं तो तुम्हीं जैसा एक मनुष्य हूं । मेरी ओर प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य प्रभु बस अकेला पूज्य प्रभु है । अतः तुम सीधे उसी का रुख़ करो और उसी से क्षमा-याचना करो ।** –क़ुरआन

**संपादक**

**डॉ० मुहम्मद अहमद**

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

**सहयोग राशि**

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'कान्ति'** के नाम से बनवाएं

## नअत

क्या बताए कोई मर्तबा[1] आपका
मद्हख़्वां[2] है ख़ुदा, मुस्तफ़ा आपका

फ़तहे-मक्का[3] भी एक मोजिज़ा[4] आपका
कुफ़्र मुंह देखता रह गया आपका

रहबरी[5] है तो बस रहबरी आपकी
रास्ता है तो बस रास्ता आपका

उम्मते-मुस्लिमा[6] कुछ मक़ामी[7] नहीं
कायनाती[8] है यह दायरा आपका

आपको क़त्ल करने जो आया था वह
आपको देखकर हो गया आपका

आज की उलझनों में फंसी ज़िन्दगी
पूछती फिर रही है पता आपका

देख लो मुंह के बल गिर पड़ा वह निज़ाम[9]
जो उड़ाता रहा मुज़हका[10] आपका

एक लम्हा न ठहरेंगे झूठे नबी
नाम तो लीजिएगा ज़रा आपका

आपकी नुक्तासंजी[11] से ऐसा लगा
मस्अले[12] मानते हैं कहा आपका

एक कसक एक तड़प मांगता है 'हफ़ीज़'
दे के अल्लाह को वास्ता आपका

● **हफ़ीज़ मेरठी**

1. दर्जा 2. प्रशंसक 3. मक्का-विजय 4. चमत्कार 5. नेतृत्व 6. मुस्लिम समुदाय 7. स्थानीय 8. विश्वव्यापी 9. जीवन-व्यवस्था 10. खिल्ली, उपहास 11. किसी चीज़ के मर्म और बारीकियों को समझना 12. समस्याएं ।



## कहां क्या है ?


| | | |
|---|---|---|
| नअत | –हफ़ीज़ मेरठी | 3 |
| क़ुरआन ज्योति | | 5 |
| नरमी का व्यवहार (हदीस मंजरी) | | 6 |
| हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) : शांति-सद्भाव के अग्रदूत (संपादकीय) | | 7 |
| खट्टी-मीठी बातें (आपके पत्र) | | 9 |
| ग़ज़ल | –कमलेश भट्ट | 9 |
| डॉ० यायावर को सम्मान (साहित्य समाचार) | | 11 |
| आर्थिक विकास का इस्लामी दृष्टिकोण (अर्थ-उपभोक्ता) | –डॉ० फ़रहत हुसैन | 13 |
| शांति सद्भाव देश की विशिष्टता (दृष्टिकोण) | –श्यामनारायण चौहान | 17 |
| सलीक़ेमन्दी और सुघड़ता सबसे क़ीमती ज़ेवर (महिला जगत) | –फ़रज़ाना अहमद | 21 |
| ग़ज़ल | –दुष्यंत कुमार | 22 |
| कुफ़्र, काफ़िर और शिर्क (विचारणीय) | –संपादन प्रभाग | 23 |
| नशाख़ोरी का बढ़ता कुप्रभाव (विशेष आयोजन) | –डॉ० अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव | 26-27 |
| नशे की लत से बढ़े अपराध (विशेष आयोजन) | –सवाई सिंह | 29 |
| इस्लाम में पूर्ण नशा-निषेध (विशेष आयोजन) | –डॉ० मुहम्मद अहमद | 30 |
| जनसरोकार के चितेरे धूमिल (साहित्यिकी) | –मुहम्मद इलियास हुसैन | 33 |
| सरवरे आलम (कविता) | –कौसर आज़मी | 35 |
| अनुभवी दादा जी (कहानी) | –देवेन्द्र कुमार मिश्रा | 37 |
| कैसा होगा 2022 का न्यू इंडिया ? (दृष्टिकोण) | –वेदव्यास | 41 |
| आंखों की नियमित देखभाल (स्वास्थ्य चर्चा) | –राखी बंसल | 42 |
| माता-पिता का बंटवारा (लघुकथा) | –डॉ० धीरज भाई वणकर | 43 |
| राह में रुकना मना है (कविता) | –डॉ० राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर' | 43 |
| मदारी (संस्मरण) | –चांद ख़ां रहमानी | 44 |
| एशियाई खेलों का इतिहास | –संपादन प्रभाग | 45 |
| हाथी के बारे में रोचक तथ्य (बालवीथी) | | 49 |

# कुरआन ज्योति

**(39) सच तो यह है कि जो चीज़ इनके ज्ञान की पकड़ में नहीं आयी और जिसका नतीजा भी इनके सामने नहीं आया, उसको इन्होंने (अकारण) झुठला दिया।[47] इसी तरह तो इनसे पहले के लोग भी झुठला चुके हैं, फिर देख लो उन ज़ालिमों का क्या परिणाम हुआ। (40) इनमें से कुछ लोग ईमान लाएंगे और कुछ नहीं लाएंगे, और तेरा रब उन बिगाड़ पैदा करने वालों को ख़ूब जानता है।[48] (41) अगर ये तुझे झुठलाते हैं तो कह दे कि "मेरा कर्म मेरे लिए और तुम्हारा कर्म तुम्हारे लिए, जो कुछ मैं करता हूं उसकी ज़िम्मेदारी से तुम बरी हो और जो कुछ तुम कर रहे हो उसकी ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूं।"[49]**

**–क़ुरआन, 10 : 39-41**

47. झुठलाना या तो इस आधार पर हो सकता था कि इन लोगों को इस किताब का एक जाली किताब होना खोज के आधार पर मालूम होता या फिर इस आधार पर वह उचित हो सकता था कि जो सच्चाइयां इसमें बयान की गयी हैं और जो ख़बरें इसमें दी गयी हैं, वे ग़लत सिद्ध हो जाएं, लेकिन झुठलाने के इन दोनों कारणों में से कोई कारण भी यहां मौजूद नहीं है। न कोई आदमी यह कह सकता है कि वह ज्ञान की दृष्टि से जानता है कि यह किताब गढ़कर अल्लाह से जोड़ दी गयीं है, न किसी ने ग़ैब (अप्रत्यक्ष) के परदे के पीछे झांककर यह देख लिया है कि सच में बहुत से ख़ुदा मौजूद हैं और यह किताब ख़्वाहमख़्वाह एक अल्लाह की ख़बर सुना रही है या वास्तव में अल्लाह और फ़रिश्तों और वह्य आदि की कोई वास्तविकता नहीं है और इस किताब में ख़्वाहमख़्वाह यह कहानी गढ़ ली गयी है। न किसी ने मरकर यह देख लिया है कि दूसरा जीवन और उसके हिसाब-किताब और बदले-सज़ा की सारी ख़बरें, जो इस किताब में दी गयी है, ग़लत हैं, लेकिन इसके बाद भी निरे सन्देह और अटकल के आधार पर इस शान से उसे झुठलाया जा रहा है कि मानो ज्ञान-स्तर पर उसके जाली और ग़लत होने की जांच कर ली गयी है।

48. ईमान न लाने वालों के बारे में फ़रमाया जा रहा है कि "अल्लाह इन बिगाड़ पैदा करने वालों को भली-भांति जानता है।" अर्थात वे दुनिया का मुंह तो ये बातें बनाकर बन्द कर सकते हैं कि साहब ! हमारी समझ में यह बात नहीं आती, इसलिए हम नेक नीयती के साथ उसे नहीं मानते, लेकिन अल्लाह जो मन और अन्तरात्मा के छिपे हुए भेदों तक को जानता है, वह इनमें से एक-एक व्यक्ति के बारे में जानता है कि किस-किस तरह उसने अपने दिल व दिमाग़ पर ताले चढ़ाए, अपने आपको ग़फ़लतों में गुम किया, अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ को दबाया, अपने दिल में सत्य की गवाही को उभरने से रोका, अपने मन से सत्य स्वीकार करने की क्षमता को मिटाया, सुनकर न सुना, समझते हुए न समझने की कोशिश की और सत्य के मुक़ाबले में अपने पक्षपातों को, अपने सांसारिक स्वार्थ को, असत्य से उलझे हुए अपने स्वार्थों को और अपने मन की इच्छाओं और रुचि को प्राथमिकता दी। इसी कारण वे 'निर्दोष पथ-भ्रष्ट' नहीं हैं, बल्कि वास्तव में उपद्रवी हैं।

49. अर्थात अकारण झगड़े और कठहुज्जतियां करने की कोई आवश्यकता नहीं। अगर मैं झूठी बातें गढ़ रहा हूं तो अपने कार्य का मैं स्वयं ज़िम्मेदार हूं, तुम पर कोई ज़िम्मेदारी इसकी नहीं, और अगर तुम सच्ची बात को झुठला रहे हो तो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ते, अपना ही कुछ बिगाड़ रहे हो।

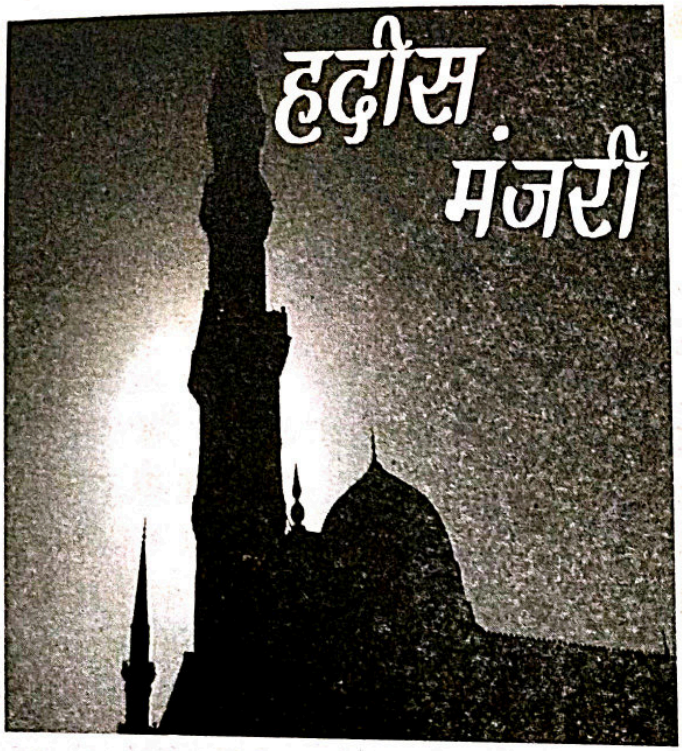


# जनता के साथ नरमी का व्यवहार

● हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते हुए सुना : "तुम में से प्रत्येक व्यक्ति ज़िम्मेदार है और तुम में से हर एक व्यक्ति से जो भी उसकी ज़िम्मेदारी में है, उसके विषय में उससे पूछा जाएगा । शासक ज़िम्मेदार है और उससे जो कुछ उसकी ज़िम्मेदारी में है, उसके विषय में पूछा जाएगा और पुरुष अपने घर वालों का ज़िम्मेदार है और जो उसकी ज़िम्मेदारी में हैं, उसके विषय में उससे पूछा जाएगा, और स्त्री अपने पति के घर की ज़िम्मेदार है और उससे जो उसकी ज़िम्मेदारी में है, उसके विषय में उससे पूछा जाएगा । और सेवक अपने मालिक के माल का ज़िम्मेदार है और उससे जो कुछ उसकी ज़िम्मेदारी में है, उसके विषय में उससे पूछा जाएगा और तुम में से प्रत्येक व्यक्ति ज़िम्मेदार है और जो कुछ उसकी ज़िम्मेदारी में है, उसके विषय में उससे पूछा जाएगा ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू याआला माक़िल बिन यसार (रज़ि॰) से रिवायत है । वह कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते सुना : "जिस बन्दे को भी अल्लाह ने लोगों पर अधिकारी बनाया और वह जिस दिन भी मरे इस हाल में मरे कि वह अपने लोगों के साथ छलकपट करने वाला हो, तो अनिवार्यतः अल्लाह उस पर जन्नत हराम कर देगा ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

एक रिवायत में है : "फिर वह उन्हें अपनी शुभेच्छा और हितैषिता की छाया में नहीं लेता, तो वह जन्नत की सुगंध भी न पाएगा ।"

और मुस्लिम की एक रिवायत में है : "जो व्यक्ति भी मुसलमानों के मामलों का अधिकारी बनता है, फिर वह उनके लिए प्रयास नहीं करता और उनका हित नहीं चाहता तो वह उनके साथ जन्नत में प्रवेश न करेगा ।"

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहती हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को अपने इस घर में यह कहते हुए सुना : "ऐ अल्लाह, जो व्यक्ति मेरे समुदाय के किसी मामले में हाकिम हो और उसका व्यवहार लोगों के साथ कठोरता का हो, तो तू भी उसके साथ कठोरता का व्यवहार कर । और जो व्यक्ति मेरे समुदाय के किसी मामले में हाकिम हो, फिर लोगों के साथ उसका व्यवहार नरमी का हो, तो तू भी उसके साथ नरमी का व्यवहार कर ।"

–मुस्लिम

● हज़रत अबू मरयम अजदी (रज़ि॰) से रिवायत है कि उन्होंने हज़रत मुआविया (रज़ि॰) से कहा : मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते हुए सुना : "जिस व्यक्ति को अल्लाह मुसलमानों के किसी मामले में हाकिम बनाए और उनकी आवश्यकता और उनकी अपेक्षा और उनकी मोहताजी के सिलसिले में अनदेखी करे, तो अल्लाह भी क़ियामत के दिन उसकी आवश्यकता और उसकी अपेक्षा और उसकी मोहताजी पर दृष्टिपात न करेगा ।" यह सुनकर हज़रत मुआविया (रज़ि॰) ने एक व्यक्ति को इस पर नियुक्त किया कि वह लोगों की ज़रूरतों पर निगाह रखे ।

–अबू दाऊद, तिरमिज़ी

(रियाज़ुस्सालिहीन' से)

**इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें**

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

# हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) : शांति-सद्भाव के अग्रदूत

इस्लाम के अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के मानव कल्याण के महान कारनामों की इतनी लंबी सूची है, जिनका उल्लेख मात्र ही किसी एक संपादकीय लेख में संभव नहीं है । अभी पिछले दिनों 'कान्ति' के एक पुराने शुभचिंतक डॉ० वेद प्रकाश पाण्डेय ने फ़ोन करके हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पवित्र जीवन पर हिंदी में पुस्तक पढ़ने की इच्छा प्रकट की । ऐसे बहुतेरे लोग हैं, जो इस्लामी साहित्य का ठीक से अध्ययन करना चाहते हैं । इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म सन 570 ईसवी में अरब के पवित्र शहर मक्का में हुआ था । आपका जीवन सबके लिए था और आज भी है । आप (सल्ल०) स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़कियों, वृद्धजनों, कमज़ोरों, अनाथों, असहायों, मुहताजों, मज़दूरों यहां तक कि सबलों एवं अमीरों के बड़े उपकारक और हितैषी थे । शांति और सद्भाव के अग्रदूत थे । आपका पूरा जीवन 'सादा जीवन, उच्च विचार' वाला था । जो उपदेश देते, उसे अपने जीवन में पूरी तरह बरतते भी थे । पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के विषय में गांधी जी के विचार बड़े स्वाभाविक और उल्लेखनीय हैं । वे कहते हैं–

''इस्लाम अपने अति विशाल युग में भी अनुदार नहीं था, बल्कि सारा संसार उसकी प्रशंसा कर रहा था। इस समय, जबकि पश्चिमी दुनिया अंधकारमय थी, पूर्व क्षितिज का एक उज्ज्वल सितारा चमका, जिससे विकल संसार को प्रकाश और शान्ति प्राप्त हुई । इस्लाम झूठा मज़हब नहीं है । हिन्दुओं को भी इसका उसी तरह अध्ययन करना चाहिए, जिस तरह मैंने किया है । फिर वे भी मेरे ही समान इससे प्रेम करने लगेंगे । मैं पैग़म्बरे-इस्लाम की जीवनी का अध्ययन कर रहा था । जब मैंने किताब का दूसरा भाग भी ख़त्म कर लिया, तो मुझे दुख हुआ कि इस महान प्रतिभाशाली जीवन का अध्ययन करने के लिए अब मेरे पास कोई और किताब बाक़ी नहीं...अब मुझे पहले से भी ज़्यादा विश्वास हो गया है कि यह तलवार की शक्ति न थी, जिसने इस्लाम के लिए विश्व-क्षेत्र में विजय प्राप्त की, बल्कि यह इस्लाम के पैग़म्बर का अत्यन्त सादा जीवन, आपकी निःस्वार्थता, प्रतिज्ञा-पालन और निर्भयता थी । यह आपका अपने मित्रों और अनुयायियों से प्रेम करना और ईश्वर पर भरोसा रखना था । यह तलवार की शक्ति नहीं थी, बल्कि वे विशेषताएं और गुण थें, जिनसे सारी बाधाएं दूर हो गयीं और आप (सल्ल०) ने समस्त कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर ली । मुझसे किसी ने कहा था कि दक्षिण अफ़्रीक़ा में जो यूरोपियन आबाद हैं, इस्लाम के प्रचार से कांप रहे हैं, उसी इस्लाम से जिसने मोरक्को में रोशनी फैलाई और संसारवासियों को भाई-भाई बन जाने का सुखद-संवाद सुनाया । निस्संदेह दक्षिण अफ़्रीक़ा के बारे में यूरोपियन इस्लाम से नहीं डरते हैं, बल्कि वास्तव में वे इस बात से डरते है कि अगर अफ़्रीक़ा के आदिवासियों ने इस्लाम क़बूल कर लिया तो वे श्वेत जातियों से बराबरी का अधिकार मांगने लगेंगे । आप उनको डरने दीजिए । अगर भाई-भाई बनना पाप है, तो यह पाप होने दीजिए । अगर वे इस बात से परेशान हैं कि

उनका नस्ली बड़प्पन, क़ायम न रह सकेगा तो उनका डरना उचित है, क्योंकि मैंने देखा है अगर एक जूलों ईसाई हो जाता है तो वह फिर भी सफ़ेद रंग के ईसाइयों के बराबर नहीं हो सकता, किन्तु जैसे ही वह इस्लाम ग्रहण करता है, बिल्कुल उसी समय वह उसी प्याले में पानी पीता है और उसी प्लेट में खाना खाता है, जिसमें कोई और मुसलमान पानी पीता और खाना खाता है, तो वास्तविक बात यह है जिससे यूरोपियन कांप रहे हैं''।

('जगत महर्षि', पृष्ठ 2)

हम यहां हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की कुछ ऐसी शिक्षाओं का उल्लेख करेंगे, जो आज बहुत प्रासंगिक हैं। पिछले कुछ वर्षों से इस्लाम को आतंकवाद से जोड़ने का अनुचित प्रयास किया जाता है, जबकि यह पूरी तरह से इसका विरोधी है । जीवहत्या, बलात्कार, अश्लीलता की ओर उन्मुखता, स्त्री-असुरक्षा और ऐसे ही कितने विकारों से व्यावहारिक रूप में समाज को पवित्र किया आप (सल्ल०) ने । पवित्र क़ुरआन की उद्घोषणा है कि किसी निर्दोष की हत्या पूरी मानवता की हत्या के सदृश है (5:32)। एक हदीस में है–हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से उल्लिखित है कि आपने कहा–''बड़े गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह ईश्वर का सहभागी ठहराना है और (अकारण) जीवहत्या, माता-पिता की अवज्ञा एवं झूठ बोलना है''। एक हदीस में है–क़यामत के दिन बंदे का जिस चीज़ का हिसाब लिया जाएगा वह नमाज़ है और पहली चीज़ जिसका निर्णय लोगों के मध्य किया जाएगा, वे ख़ून के दावे हैं''। हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) से उल्लिखित है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि ''ईमान वाला अपने धर्म की विस्तीर्णता में उस समय तक रहता है, जब तक वह कोई अवैध रक्तपात नहीं करता''। पवित्र क़ुरआन में है–''ऐ नबी, उनसे कहो कि आओ मैं तुम्हें बताऊं कि तुम्हारे रब ने तुम पर क्या-क्या पाबंदियां लगाई हैं–यह कि उसके साथ किसी को साझीदार न बनाओ, और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो एवं अपनी संतान को निर्धनता के भय से क़त्ल न करो । हम तुमको भी रोज़ी देते हैं और उनको भी देंगे, और अश्लील बातों के निकट भी न जाओ चाहे वे खुली हुई हों या छिपी हुई'' (6:151)। एक बार एक व्यक्ति आप (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने पूछा, सबसे बड़ा गुनाह कौन-सा है ? हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने जवाब दिया, ''यह कि तू किसी को ईश्वर के समकक्ष और प्रतिद्वंद्वी ठहराए, जबकि उसने तुझे पैदा किया ''उसने फिर पूछा, इसके बाद कौन-सा बड़ा गुनाह है ? आप (सल्ल०) ने उत्तर दिया, ''यह कि तू अपने बच्चे की हत्या कर दे, इस विचार से कि वह तेरे खाने में साझीदार होगा''। उसने कहा, इसके बाद कौन-सा गुनाह है ? नबी (सल्ल०) ने जवाब दिया, ''यह कि तू अपने पड़ोसी की पत्नी से व्यभिचार करे''। आपकी शिक्षाओं के द्वारा अल्पसमय में ही अरब का कायाकल्प हो गया । हिंसक अरबों में सभ्य संस्कार विकसित हुए । उनमें दूसरों के प्राण-सम्मान एवं शांतिप्रियता का ऐसा गुण पैदा हो गया कि पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की भविष्यवाणी के अनुसार ऐसा ही हुआ कि महिलाएं क़ादसिया से सनआ तक अकेली सफ़र करती थी और कोई उनकी जान-माल, इज़्ज़त-आबरू पर हमला नहीं करता था । जबकि यही वह देश था, जहां पचीस वर्ष पूर्व बड़े-बड़े क़ाफ़िले भी निश्चिंत होकर नहीं गुज़र सकते थे ! निश्चय ही आज के मुसलमानों की स्थिति कई दृष्टियों से विचारणीय है । एक तो वे सही इस्लामी शिक्षाओं से अनभिज्ञ हैं, उन पर अमल का भी प्रश्न है । इसकी एक बड़ी वजह इस्लामी साहित्य के अधिकांश भाग का अरबी भाषा में होना है । इसलिए यह प्रयास किया जाता रहा है कि हिंदी और अन्य भाषाओं के साहित्य में वे चीज़ें समाहित हो, जिनसे देश में शांति-सद्भाव का वातावरण न सिर्फ़ बने, बल्कि परवान चढ़े । डॉ० पाण्डेय का यह कथन नितांत उचित और सहमति योग्य है कि ''सभी को सभी धर्मों के ग्रंथ पढ़ने चाहिए ताकि सांप्रदायिक सद्भाव और बढ़े ।''

# खट्टी मीठी बातें

भारत में बेरोज़गरी और बीमारी ये दो जटिल गंभीर बीमारियां जिनको नेताओं ने ही असाध्य बनाया है, लेकिन विडंबना यही कि इनसे निबटने के लिए भी अनुभवी व्यावहारिक योग्य और दक्ष डॉक्टर यानी नेतृत्व की आवश्यकता है । रोज़गार मांगने वाले दलाल कहे जाएं, जी॰एस॰टी॰ नोटबंदी से जी॰डी॰पी॰ गिरे या उठे या सरकार की तिजोरी भरे या आयकरदाता बढ़ें घटें लेकिन जिस एक सौ पच्चीस करोड़ लोगों के हितों की दुहाई दी जाती है, उसी आम जनता को तो सारी ही वस्तुएं अब महंगे दामों पर मिल रहीं हैं । राजनीतिक शुचिता की ललकार वहीं दम तोड़ देती है जब व्यभिचारी, अत्याचारी, बलात्कारी अंगूठा छाप पार्खंडियों का आशीर्वाद सत्ता पाने की सीढ़ी बन जाता है ।

नवरात्र पर्व शुरू होते ही सोशल मीडिया से लेकर न्यूज़ मीडिया तक में नेताओं-अभिनेताओं के व्रतोपवास की ख़बरें सुर्ख़ियां बन जाती है लेकिन उत्तर-पूर्व भारत में आज भी बहुत से ग़रीब तालाबों पर जमी काई को भूनकर खाते हैं, वृक्षों की छाल खाते हैं, कीड़े-मकोड़े भूनकर खाते हैं लेकिन आठ लाख वार्षिक आय वाले ओ॰बी॰सी॰ को सरकार नौकरी में आरक्षण देना सामाजिक न्याय है ।

सामाजिक संगठनों द्वारा संचालित और ग़ैर-सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में सिफ़ारिश से रखे सामान्य श्रेणी के पोस्ट ग्रेजुएट बी॰एड॰ शिक्षक को अधिकतम पांच-छह हज़ार रुपया मासिक वेतन लेकिन काम पूरे दिन और सरकारी प्राइमरी स्कूलों में ग्रेजुएट बी॰एड॰ टीचर को न्यूनतम चालीस हज़ार रुपया मासिक वेतन लेकिन काम कुछ नहीं ? लोग भूल जाते हैं कि यू॰पी॰ के निकटवर्ती प्रदेश में पिछली सरकार में शिक्षा मंत्री अनपढ़ थीं और कॉन्वोकेशन में डी॰लिट उपाधि लेने वाले शोधार्थी ने उपाधि लेने से ही मना कर दिया था और कुछ वर्ष पहले आई॰आई॰टी॰ संस्थान में भी मानव संसाधन मंत्री से उपाधि लेने से इन्कार हुआ था, यह विरोध राजनीतिक नहीं बल्कि शिक्षा विद्या का अपमान था ।

अभी कुछ ही दिन पहले ईश्वरचंद विद्यासागर की पुण्यतिथि पर कई नेताओं ने ट्वीट किये तो क्या उनसे प्रेरणा लेकर नेतागण अब वेतन लेना छोड़ देंगे, क्योंकि ईश्वरचंद विद्यासागर तो निशुल्क सेवा करते थे ? नेतागण जनता को कभी जागरूक होने नहीं देंगे, क्योंकि अगर कोई आवाज़ उठी भी तो समर्थक सेवा कर देंगे । सभी पहलू को राजनीतिक हित से नहीं बल्कि देशहित से भी देखना ज़रूरी है और यही वास्तविक राष्ट्रप्रेम है ।

देश का एक नागरिक भूखा मरे लेकिन उसकी भूख को राजनीतिक व्यंजन बनाकर नेता संसद की केंटीन में मुफ़्त के से दाम पर आनंदभोज करे । ई-रिक्शा वालों पर तरस आता है तो उनका आर॰टी॰ओ॰ रजिस्ट्रेशन मुफ़्त कर दिया जाए, सब्ज़ियों की भी एम॰आर॰पी॰ फिक्स कर दी जाए, ग़रीबों के स्वास्थ्य की बहुत चिंता है तो संसद में बैठे डॉक्टर अपने चुनाव क्षेत्र में जाकर स्वयं मुफ़्त चिकित्सा सेवा दें ? लेकिन उपदेश तुम्हारे और फ़र्ज़ हमारे !!!

**रचना रस्तोगी**
मेरठ

## ग़ज़ल

दूध लिखा दूध को, पानी को पानी लिख सके,
सिर्फ़ कुछ ही वक़्त की अस्ली कहानी लिख सके ।
झूठ है जिसका शग़ल, दामन लहू से तर-बतर,
कौन है जो नाम उसका राजधानी लिख सके ।
उम्र लिख देती है चेहरों पर बुढ़ापा एक दिन,
कोई-कोई ही बुढ़ापे में जवानी लिख सके ।
उसको ही हक़ है कि सुबहों से करे कोई सवाल,
जो किसी के नाम कुछ शामें सुहानी लिख सके ।
मुश्किलों की दास्तां के साथ ये अक्सर हुआ
कुछ लिखी काग़ज़ पे हमने, कुछ ज़बानी लिख सके ।
मौत तो कोई भी लिख देगा किसी के भाग्य में,
बात तो तब है कि कोई ज़िन्दगानी लिख सके ।

● **कमलेश भट्ट 'कमल'**

## कहीं दीवाली की उमंग फीकी न पड़ जाए...

गत वर्ष दीवाली के दिन 12 वर्षीय मुकेश आतिशबाज़ी में मस्त था । स्वभाव से शरारती होने के कारण उसने एक राकेट को थोड़ा कोण बनाकर छोड़ा । देखते ही देखते राकेट सामने खड़े उसके साथी निशांत से जा टकराया । बस फिर क्या था, उस बेचारे के कपड़ों में आग लग गयी । उसे तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन डॉक्टर अपनी पूरी कोशिश के बाद भी उसे नहीं बचा सके ।

दीवाली के दिन राजू भी बड़ी मस्ती और शरारत के मूड में था । वह फुलझड़ी जलाकर अपनी छोटी बहन सीमा के सिर के ऊपर से घुमा रहा था । सीमा डर कर रो रही थी, लेकिन वह तो खुशी से फूला न समा रहा था । इतने में फुलझड़ी सीमा के नायलोन की फ्रॉक से छू गयी । बस देखते ही देखते फ्रॉक जल उठी और उसकी छह वर्षीया बहन का पूरा शरीर जल गया । उसे तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया । डॉक्टरों ने उसे बचा तो लिया, लेकिन बेचारी सीमा के सारे बदन पर जलने के दाग़ हो गये और वह कुरूप हो गयी ।

बच्चों की असावधानी, मस्ती और जल्दबाज़ी के कारण न जाने इस खुशी वाले त्योहार के दिन कितने ही घरों में इस प्रकार की दुखद घटनाएं हो जाती हैं । इस वर्ष आप संकल्प करें कि ऐसा कोई काम नहीं करेंगे, जिससे अपना या किसी का भी कोई नुक़सान हो ।

इस दीवाली अतिशबाज़ी से तौबा । त्योहार की खुशी को शोक में न बदलें ।

**डॉ॰ अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव**

जी॰ 9, सूर्यपुरम, नंदनपुरा, झांसी

## बेजोड़ पत्रिका

'कान्ति' मासिक पत्रिका अपने-आप में बेजोड़ है । क्योंकि इसमें इस्लाम धर्म की जागरूकताओं को दर्शाने के साथ-साथ हिन्दू-मुस्लिम एकत्तव-भाव पर ज़ोर दिया जाता है । हिन्दी और उर्दू का समनव्य दिखाया जाता है जो आज के दौर में बेहद प्रशंसनीय काम है ।

मेरा आग्रह है कि इस पत्रिका को माह में दो बार प्रकाशित करने की दिशा में विचार करें ।

**दिलीप कनौजिया**

(पता नहीं लिखा)

**अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–**

**"घर में नमाज़ पढ़ना एक नमाज़ के बराबर है,**
**जबकि मस्जिद में नमाज़ पढ़ना**
**पच्चीस नमाज़ों के बराबर है ।"**

**(इब्ने माजा)**

★★★★★★★

A WELL WISHER

# MD. AMEENUL HASAN

# NAGPUR

# डॉ॰ यायावर सम्मानित

विश्व आयुर्वेद परिषद भारत और विश्व हिन्दी मंच भारत के संयुक्त तत्वावधान में मलेशिया की राजधानी कुआलालम्पुर के अरेना स्टार लक्जरी होटल के हॉल में पिछले दिनों एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ । जिसमें सम्मिलित चिकित्सकों तथा साहित्य धर्मियों के सम्मुख डॉ॰ रामसनेही लाल 'यायावर' ने आयुर्वेद व साहित्य के अंत:संबंधों पर प्रकाश डाला । उन्हें सम्मानित भी किया गया ।

इसमें देश व प्रदेशों के 68 प्रतिभागियों का एक भ्रमण, पर्यटन, शिक्षा व आयुर्वेद व हिन्दी के प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम आयोजित किया गया । श्रीलंका, सिंगापुर तथा मलेशिया के इस भ्रमण कार्यक्रम में 20 जून 2017 को मलेशिया की राजधानी कुआलालम्पुर के अरेना स्टार लक्जरी होटल में एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ । संगोष्ठी की अध्यक्षता बरेली कॉलेज बरेली के प्राचार्य डॉ॰ एन॰एल॰ शर्मा मुख्य अतिथि द्वय, डॉ॰ नितिन अग्रवाल एवं डॉ॰ मंगला रानी तथा विशिष्ट अतिथि डॉ॰ धनन्जय श्रीवास्तव, डॉ॰ रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' एवं डॉ॰ प्रणव शर्मा रहे ।

काव्यमय सरस संचालन डॉ॰ रंजन विशद ने किया । अनेक विद्वानों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये जिनमें अनेक बड़े विचारोत्तेजक थे । सारे आलेख 'पाथेय' नामक स्मरिका में संकलित है । डॉ॰ 'यायावर' ने विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए भतृहरि एवं गीता को उद्धृत करते हुए आयुर्वेद व साहित्य के अंत:संबंधों की व्याख्या की । उन्होंने कहा आयुर्वेद तन के स्वास्थ्य की चिंता करता है साहित्य मन के स्वास्थ्य की, दोनों रस की साधना करते हैं तथा दोनों सुखी जीवन के लिए संयम को आवश्यक मानते हैं ।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ॰ बुद्धदेव आर्य ने की मंच पर डॉ॰ योगेन्द्र दत्त शर्मा, डॉ॰ दशरथ पाण्डेय, डॉ॰ सन्नी एन॰एम॰, डॉ॰ रस्तोगी आदि रहे । संचालन डॉ॰ प्रणव शर्मा ने किया ।

अखिल भारतीय स्वरूप के इस आयोजन में हरियाणा से डॉ॰ बुद्धदेव आर्य, बिहार से डॉ॰ मंगलारानी, उत्तराखंड से डॉ॰ रेणु शुक्ला और डॉ॰ धनंजय श्रीवास्तव, उड़ीसा से डॉ॰ लक्ष्मी पी॰ देई, राजस्थान से डॉ॰ नीरज सोनी, मध्य प्रदेश से डॉ॰ बबिता शर्मा और उत्तर प्रदेश से डॉ॰ यायावर, डॉ॰ प्रांजल त्रिपाठी, डॉ॰ सारंगा आदि अतिरिक्त अन्यों की उपस्थिति महत्वपूर्ण रही ।


## दारुल मुसन्निफ़ीन का हिन्दी प्रकाशन

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | अरब और हिन्द के ताल्लुक़ात | –मौलाना सैयद सुलैमान नदवी | 200/- |
| 2. | अल-फ़ारूक़ | –अल्लामा शिब्ली नोमानी | 450/- |
| 3. | रहमत-ए-आलम | –सैयद सुलैमान नदवी | 60/- |
| 4. | उत्तम आदर्श | –मौलाना सैयद सुलैमान नदवी | 125/- |
| 5. | मुहम्मद शिब्ली नोमानी | –डॉ॰ बाबर अशफ़ाक़ ख़ान | 80/- |
| 6. | हज़रत आयशा (रज़ि॰) की जीवनी | –मौलाना सुलैमान नदवी | 230/- |
| 7. | भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की निष्पक्षता, भाग-1 | –सैयद सबाहुद्दीन | 125/- |
| 8. | भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की निष्पक्षता, भाग-2 | –सैयद सबाहुद्दीन | 180/- |
| 9. | भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की निष्पक्षता, भाग-3 | –सैयद सबाहुद्दीन | 225/- |

पता : दारुल मुसन्निफ़ीन शिब्ली एकेडमी, आज़मगढ़ (यू॰पी॰) 276008

Cont. : Fakharul Islam Sb., Mob. : 9935233940

# हमारी अहम पुस्तकें

| | | |
|---|---|---|
| आवागमनीय पुर्नजन्म | डॉ० मुहम्मद अहमद | 50.00 |
| अनेकेश्वरवाद की वास्तविकता | मौलाना अमीन अहसन इस्लाही | 70.00 |
| एकेश्वरवाद की वास्तविकता | मौलाना अमीन अहसन इस्लाही | 35.00 |
| एक ईश्वर की धारणा | मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ | 40.00 |
| परलोक की छाया में | मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ | 90.00 |
| पहेली जीवन की | मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ | 12.00 |
| रिसालत | मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ | 45.00 |
| लोगोः हिसाब का समय निकट आ चुका है | मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी | 14.00 |
| खुदा की गुलामी इंसान की बुलन्दी | मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी | 18.00 |
| जीवन मृत्यु के पश्चात् | मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी | 12.00 |
| बनाव और बिगाड़ | मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी | 12.00 |
| शान्ति-मार्ग | मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी | 16.00 |
| सोचने की बातें | मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी | 10.00 |
| प्यारी माँ के नाम इस्लामी संदेश | मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही | 10.00 |
| मानव जीवन और परलोक | शोबा-ए-दावत | 24.00 |
| मुक्ति-मार्ग | इनामुर्रहमान ख़ाँ | 10.00 |
| मौत के बाद क्या? | डॉ० शाहिद अली | 10.00 |
| मरने के बाद क्या होगा? | बिन्तुल इस्लाम | 60.00 |
| सत्य की खोज | मौलाना वहीदुद्दीन खाँ | 22.00 |
| नबी करीम (सल्ल०) की दुआएँ (पाकेट साइज़) | मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी | 64.00 |
| रमज़ान कैसे गुज़ारें? | खुर्रम मुराद | 26.00 |
| रोज़ा और उसका असली मक़्सद | मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी | 10.00 |
| इबादत | मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी | 16.00 |
| इस्लाम में पाकी और सफाई | मौलाना नसीम ग़ाज़ी फलाही | 20.00 |
| नमाज़ में आप क्या पढ़ते हैं? | मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी | 18.00 |
| इमान की कसौटी | मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी | 08.00 |
| खुतबाते हरम | मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी | 18.00 |
| नमाज़ | मौलाना नसीम ग़ाज़ी फलाही | 14.00 |

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS
MMI PUBLISHERS
D-307,Dawat Nagar,Abul Fazal Enclave,Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Fax: 26987858
E-mail:mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

# आर्थिक विकास का इस्लामी दृष्टिकोण

■ डॉ॰ फ़रहत हुसैन

एक कल्याणकारी व्यवस्था के नाते इस्लाम ने ऐसे वातावरण के निर्माण के लिए रास्ता साफ़ किया है जिसमें लोग अपने कल्याण पर ध्यान दें और आर्थिक विकास हो सके । ईश-पूजा के बाद धनोपार्जन की दौड़-धूप को कुरआन में मुस्लिम के कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है–"फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल (आजीविका) तलाश करो ।" (63:10)

**भय व उपद्रवरहित वातावरण का निर्माण**

मक्के के कुरैशवंश को काबा की सेवा के कारण अरब में विशिष्ट सम्मान प्राप्त था, जिससे वे अपने व्यापारिक कार्य में सुविधा पाते थे । इसका उल्लेख कुरआन में अल्लाह की नेमत के रूप में किया गया है–

"चूंकि कुरैश हिलमिल गये थे अर्थात जाड़े और गर्मियों की (व्यापारिक) यात्राओं से हिलमिल गये थे, उनको चाहिए कि इस घर (काबा) के प्रभु की पूजा-बन्दगी करें, जिसने उन्हें भूख से बचाकर खाने को दिया और भय से बचाकर निश्चिंतता प्रदान की ।" (106:1-4)

अर्थात एक भयरहित वातावरण के कारण ही वे तिजारत कर सके । एक अन्य स्थान पर शांतिभंग करने को हत्या से अधिक जघन्य अपराध माना गया है–"और फ़ितना (उपद्रव) हत्या से भी अधिक संगीन चीज़ है ।" (2:191)

फ़ितने से मुराद अत्याचार, ज़ोर-ज़बरदस्ती और अशांति का माहौल है । आशय यह है कि हत्या तो बुरी चीज़ है ही, उससे अधिक बुरी चीज़ यह है कि पूरा माहौल ही बिगाड़ कर रख दिया जाए । स्पष्ट है कि आर्थिक क्रियाएं बहुत कुछ शांति एवं अनुकूल वातावरण पर निर्भर करती हैं, इसलिए इस फ़ितने को कुचलने के लिए कुरआन बल प्रयोग की अनुमति देता है–"उनसे जंग (युद्ध) करो, यहां तक कि फ़ितना शेष न रहे ।" (2:193)

**अपव्यय पर रोक**

आर्थिक विकास के अवरोधों में से एक बड़ा अवरोध अपव्यय और क्षय है । जिस पर कुरआन रोक लगाता है–

"अपव्यय न करो, अल्लाह अपव्यय करने वालों को पसन्द नहीं करता ।" (6:141)

"अपव्यय करने वाले लोग शैतान के भाई हैं ।" (17:27)

**कंजूसी भी नहीं**

दूसरी ओर कंजूसी करने और धन व साधनों को रोक रखने की मनाही की गयी है, क्योंकि इससे साधन निष्क्रिय होकर रह जाते हैं और आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । कुरआन में कहा गया है–"तबाही है हर उस व्यक्ति के लिए जो लोगों पर ताना मारने और पीठ पीछे बुराइयां करने का अभ्यस्त है, जिसने माल इकट्ठा किया और उसे गिन-गिनकर रखा ।" (104:1-3)

"जो लोग सोना-चांदी इकट्ठा करके रखते हैं और उसे ईश मार्ग में ख़र्च नहीं करते उन्हें पीड़ाजनक यातना की सूचना दे दो ।" (9:34)

"जिन लोगों को अल्लाह ने अपनी उदार अनुकम्पा से दिया है फिर वे कृपणता (कंजूसी) से काम लेते हैं । वे यह न समझें कि यह कृपणता उनके लिए अच्छी है; नहीं, यह उनके लिए बहुत ही बुरी है ।" (3:180)

**व्यापार-चक्र**

वर्तमान समय की जटिल आर्थिक समस्याओं में से एक यह है कि अर्थव्यवस्था पर तेज़ी-मन्दी के दौरे पड़ते रहते हैं, जिन्हें व्यापार-चक्र कहा जाता है । उपर्युक्त शिक्षाएं अर्थव्यवस्था को इस रोग से बचाने के कारगर उपाय हैं । मन्दी आती ही उस समय है जब लोग अपनी मांग को कम करने लगते हैं जिससे धन बाज़ार में नहीं आता । इस संदर्भ में कुरआन की इस शिक्षा पर विचार बड़ा सार्थक होगा–

"लोग तुम से पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें, कह दीजिए, जो कुछ भी बच जाए ।" (2:219)

**प्रसंविदा एवं लिखित प्रमाण का प्रचलन**

कुरआन ने प्रसंविदा एवं लिखित क़रार का प्रचलन करके व्यापारिक लेन-देन को आधार प्रदान किया–

"ऐ ईमान लाने वालो ! जब किसी निश्चित समय के लिए तुम आपस में ऋण का लेन-देन करो, तो उसे लिख लिया करो । दोनों पक्षों के बीच न्यायपूर्वक एक व्यक्ति दस्तावेज़ लिखे । जिसे अल्लाह ने लिखने-पढ़ने की योग्यता दी हो उसे लिखने से इन्कार नहीं करना चाहिए । लिखने वाला लिखे और बोलकर वह व्यक्ति लिखवाए जिस पर दायित्व बनता हो (अर्थात ऋणी)। उसे अपने प्रभु, अल्लाह, से डरना चाहिए कि जो मामला निश्चित हो गया है, उसमें कमी-बेशी न करे । परन्तु यदि ऋण लेने वाला नादान या कमज़ोर हो या बोलकर न लिखा सकता हो तो उसका संरक्षक बोलकर लिखाए...मामला छोटा या या बड़ा अवधि के निर्धारण के साथ उसकी दस्तावेज़ लिखवाने में सुस्ती न करो । अल्लाह की दृष्टि में यह नियम तुम्हारे लिए अधिक न्यायसंगत है, इससे गवाही स्थापित होने में आसानी होती है और संदेहों में पड़ने की आशंका कम हो जाती है, हां जो, व्यापारिक लेन-देन हाथ के हाथ तुम आपस में करते हो उसको न लिखा जाए तो कोई दोष नहीं । मगर व्यापारिक मामले तय करते समय गवाह कर लिया करो...यदि तुम किसी यात्रा पर हो और दस्तावेज़ लिखने की कोई व्यवस्था न हो तो गिरवी रखकर मामला करो ।" (2:282,283)

### नियम-क़ानून

आर्थिक विकास में अवरोध करने वाली सामाजिक बुराइयों को सशक्त ढंग से रोकने संबंधी नियम-क़ानून बना दिये गये हैं । चोरी, डकैती, व्यभिचार, झूठ, धोखा, शराबख़ोरी, जुआ खेलने आदि पर रोक लगा दी गयी है । (देखिए तृतीय अध्याय में प्रस्तर 3.5)

### ब्याज पर रोक

ब्याज आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, उत्पादन की गति पर रोक लगाता है, आर्थिक असमानता को बढ़ाता है, वर्ग संघर्ष की प्रवृत्ति पैदा करता है । इसी लिए क़ुरआन ब्याज पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाता है ।

### नैतिक मूल्यों का महत्व

मानवीय व्यवहार बड़ी हद तक सामाजिक मान्यताओं एवं मूल्यों से नियंत्रित होता है । आर्थिक क्रियाओं को इससे अलग करके अध्ययन करना उचित नहीं है । दुर्भाग्यवश आधुनिक अर्थशास्त्र ने नैतिक मूल्यों और उद्देश्यों के प्रति तटस्थता तथा उदासीनता को आधार बनाया, परिणामतः अर्थशास्त्र ने स्वार्थपरता को बढ़ावा दिया और मानवीय मूल्यों की महत्ता कम हुई । लाभ को अधिकतम करने के नाम पर अनेक घृणित कृत्यों को बढ़ावा दिया गया । यद्यपि पाश्चात्य अर्थशास्त्रियों को भी अब नैतिक मूल्यों के महत्व का आभास होने लगा है । यह अलग बात है कि परलोक की धारणा के अभाव में ईमानदारी मात्र एक नीति बनकर रह गयी है, विश्वास या आस्था का स्थान नहीं ले सकी । इस्लाम ने आर्थिक क्रिया को संपूर्ण मानवीय जीवन का एक अंग स्वीकारते हुए उसे जीवन-मूल्यों से जोड़ दिया है ।

### सामान्य सिद्धांत

क़ुरआन ने सच्चाई पर बहुत बल दिया है (33:70)। न्याय करने, न्याय पर डटे रहने, इन्साफ़ के साथ गवाही देने का आदेश दिया । (4:135, 4:58, 16:90,91)। अपने हक़ से कम पर राज़ी हो जाने तथा दूसरे को उसके हक़ से अधिक देकर एहसान करने पर उकसाया है । माता-पिता तथा अन्य लोगों से अच्छे व्यवहार करने की शिक्षा दी । (2:83, 2:177, 2:215, 4:36, 6:15, 6:152, 17:23, 17:34, 37:26 आदि) अमानत को अदा करने और उसमें ख़ियानत न करने की शिक्षा अनेक स्थानों पर मिलती है । (2:283, 4:58)। इन नैतिक मूल्यों के अभाव में व्यापार, व्यवसाय, उद्योग के लिए अनुकूल वातावरण बन ही नहीं सकता ।

क़ुरआन भाईचारे को बढ़ावा देता है, रंग, नस्ल, जाति, वंश, भाषा, क्षेत्र तथा पेशे के आधार पर मनुष्य-मनुष्य में भेदभाव को अवैध घोषित करता है । (49:13)

वर्तमान औद्योगिक संघर्षों की पृष्ठभूमि में इस नैतिक सिद्धांत की सार्थकता कितनी है विचार किया जा सकता है । एक अन्य नैतिक और मानवीय गुण सब्र, धैर्य और संतोष है जिसको क़ुरआन में कई प्रकार से समझाया गया है । इस गुण के अभाव में व्यापारी जोखिम नहीं उठा सकता (2:155,156, 3:186 आदि)। यह गुण शोषण, अत्याचार, घृणा, भेदभाव, लोभ-लालच से इन्सान को रोकने की शिक्षा देता है ।

### विशिष्ट सिद्धांत

उपर्युक्त सभी शिक्षाएं सामान्य हैं जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू होती हैं । इसलिए वे आर्थिक क्षेत्र में भी लागू होती हैं । इन सामान्य शिक्षाओं के अतिरिक्त आर्थिक जगत के लिए कुछ विशिष्ट सिद्धांत भी दिये गये हैं–

**1. प्रसंविदों को पूर्ण करना :** क़ुरआन की आयतों (2:281-283) में दस्तावेज़ तैयार करने संबंधी जो आदेश दिया गया है वह हम पिछले अध्याय-7 के प्रस्तर 7.7 पर

दर्ज कर चुके हैं। कुरआन ने सभी अनुबंधों को पूर्ण करने की ताकीद की है–"ऐ ईमान लाने वालो ! अपने अनुबंधों एवं प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करो।" (5:1)

ईमान लाने वालों के अनेक गुणों में से यह भी है कि–

"वे अपनी अमानतों और अपने अनुबंधों का ध्यान रखते हैं।" (23:8)

इस प्रकार एक मुस्लिम व्यवसायी ग्राहकों, कर्मचारियों और सरकार से किये गये अनुबंधों, समझौतों और वादों को पूर्ण करने के लिए बाध्य है।

**2. मिथ्या वर्णन एवं झूठे विज्ञापन नहीं :** वर्तमान युग में मिथ्यावर्णन, झूठे विज्ञापन का चलन एक सामान्य बात है। यहां तक कि उपभोक्ता संरक्षण के लिए नित नये क़ानून बनाने पड़ रहे हैं। कुरआन ने इसे धरती के बिगाड़ की संज्ञा दी है–

"लोगों को उनकी चीज़ें देने में घाटा या गड़बड़ी न करो और धरती में बिगाड़ फैलाते न फिरो।" (11:85)

### उचित नाप-तौल

आर्थिक जगत की एक पुरानी ख़राबी नाप-तौल द्वारा धोखा है, जिससे हम आज भी दोचार हैं। इस्लाम ने इस ख़राबी को दूर करने के लिए जहां क़ानूनी उपाय किये हैं वहीं परलोक की यातना से भी डराया है। कुरआन में है–

"नाप-तौल न्यायपूर्वक पूरा-पूरा किया करो।" (11:85)

"जब नाप कर दो तो पैमाने (मापक) को पूरा भरो ओर जब तौलो तो ठीक तराजू से तौलो, यही उत्तम है और इसका नतीजा भी भला है।" (17:35)

"तुम पूरा-पूरा नापो-तौलो और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न पहुंचाओ और धरती में बिगाड़ न फैलाओ। जबकि सुधार किया जा चुका हो।" (7:85)

"तुम तुला (तराजू) में गड़बड़ी न करो और इन्साफ़ के साथ ठीक तौलो, कम न तौलो।" (55:8,9)

नाप-तौल की गड़बड़ी की निंदा कितने सख़्त अंदाज़ में की गयी है–"तबाही है डंडी मारने वालों की, जो लोगों से नापकर लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं और जब उन्हें नापकर या तौलकर देते हैं तो घटाकर देते हैं। क्या ये लोग नहीं समझते कि उन्हें एक बड़े दिन के अवसर पर जी उठना है (और हिसाब देना है)।" (83:1-6)

### उत्पादन को नष्ट करने की अनुमति नहीं

मूल्यों को गिरने से रोकने के लिए उत्पादित माल को नष्ट करने की कुप्रथा दुनिया में बढ़ रही है। भारत के महाराष्ट्र राज्य के एक समाचार पत्र (नवम्बर 93) के अनुसार वहां इसी भय के कारण दूध को नालियों में बहाया गया। कुरआन उत्पादन के नष्ट करने का फ़साद और बिगाड़ घोषित करता है–

"जब (सच्चाई के दुश्मन) को सत्ता मिलती है तो धरती में उसकी सारी दौड़-धूप इसलिए होती है कि उसमें बिगाड़ पैदा करे। खेती और नस्ल को तबाह करे, हालांकि अल्लाह बिगाड़ को पसन्द नहीं करता।" (2:205)

इस विशिष्ट शिक्षा के अतिरिक्त प्रत्येक प्रकार के अपव्यय को रोका गया है जिसका विवरण पूर्व के अध्यायों में आ चुका है।

### ब्याज

ब्याज आर्थिक, सामाजिक और मानवीय दृष्टि से अनुचित एवं अन्यायपूर्ण है, अत: इसे अवैध घोषित किया गया (विवरण चौथे अध्याय के प्रस्तर 4.4 में देखें)

### कारोबार के घाटे पर मनोबल न गिरे

व्यापारिक गतिविधियों में लाभ और हानि साथ-साथ चलती है। किसी हानि की स्थिति में दिल छोटा करने या हतोत्साहित होने से बचाने के लिए कितनी क़ीमती बात कही गयी है–"निस्संदेह हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे कुछ भय से, कुछ भूख से, कुछ जान-माल और पैदावार के घाटे से। तो सब्र करने वालों को शुभ-सूचना दे दो। ये वे लोग हैं कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुंचती है तो कहते हैं कि बेशक हम अल्लाह ही के लिए है और हमें उसी की ओर पलट कर जाना है।" (2:155,156)

कुरआन में सब्र करने की बात अनेक स्थानों पर अलग-अलग संदर्भों में दोहराई गयी है। प्रस्तुत आयत में इसे साहसपूर्ण कार्य बताया है–

"तुम सब्र और नेकी की रीति निभाते रहो निश्चय ही यह बड़े साहस का काम है।" (3:186)

इस प्रकार हम देखते हैं कि कुरआन ने मानवीय मूल्यों पर आधारित अर्थव्यवस्था का ढांचा प्रस्तुत किया है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इसे व्यापार, व्यवसाय, दुकान, बाज़ार और कारीगर तथा कृषक पर सामान्य रूप से लागू किया और देखते-देखते आर्थिक रूप से दरिद्र-क्षेत्र समृद्धिशाली हो गया। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के कथनों और आदेशों को कुरआन की इन शिक्षाओं के साथ अध्ययन करने पर इस्लामी आर्थिक प्रणाली का पूर्ण स्वरूप सामने आ सकता है।

# मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीबाग, (झारखण्ड)

## नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

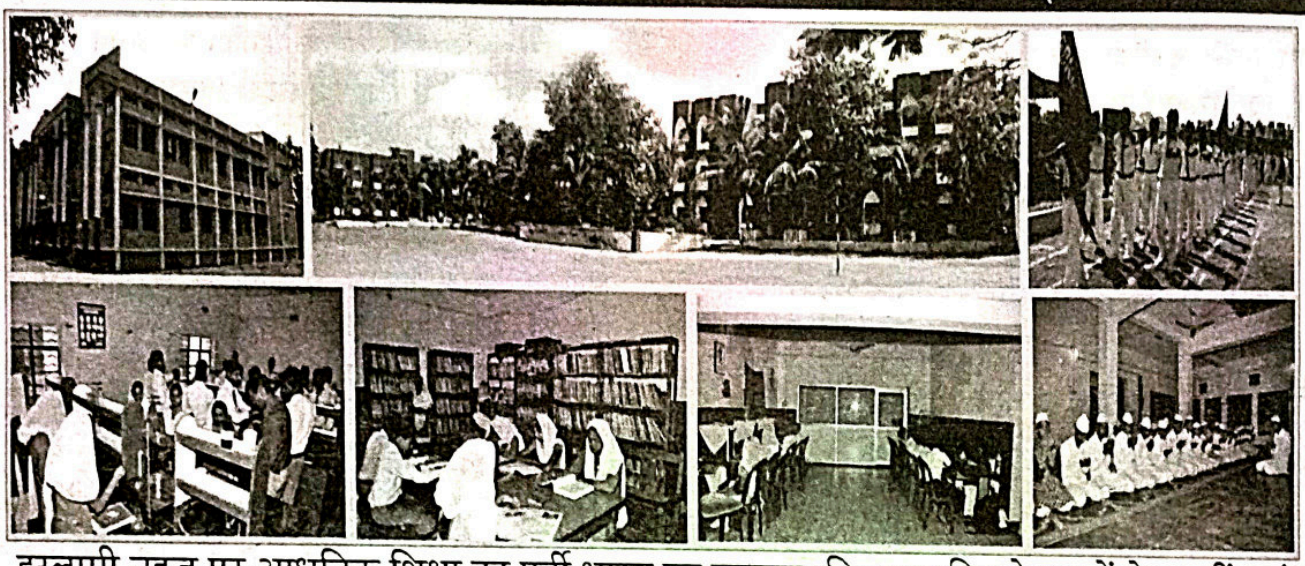

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की।

## उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

**नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016**

| एस॰एम॰ नईम | साद राशिद ख़ान नदवी | वकील अहमद |
|---|---|---|
| एम॰ए॰, बी॰एड॰ए (अलीग॰) | फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ | एम॰एस॰सी॰, बी॰एड॰ |
| निदेशक | छात्रावास अधिक्षक | प्राचार्य |

**विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें**

मोबाइल : 09431530878/7739748279, वेबसाइट : munammission.org

ई॰मेल : hmpt.mission@gmail.com

# शांति-सद्भाव देश की विशिष्टता एवं अद्वितीय विशेषता

■ श्यामनारायण चौहान

हमारा देश भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है । विविधता इस देश की अद्वितीय विशेषता है । संसार के सभी महत्वपूर्ण धर्म जैसे इसाईयत, यहूदियत, इस्लाम, हिन्दू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी आदि के मानने वाले यहां मौजूद हैं । हमारे देश में लगभग 1700 भाषाएं मातृभाषा के रूप में बोली जाती हैं । एक सौ तीस करोड़ इन्सानों वाले इस देश में लगभग 6000 जातियां पायी जाती हैं । संसार के महत्वपूर्ण वांशिक वर्गों में से छह वांशिक वर्ग के लोग इस देश में मौजूद हैं । जो बात संसार में बहुत-से लोगों के लिए आश्चर्यजनक है वह यह है कि इतनी विविधताओं के बावजूद इस देश में लोग अम्न व शांति के साथ रहते रहे हैं । एक ही गांव में विभिन्न धर्मों एवं वांशिक वर्ग के लोग रहते हैं । वे एक-दूसरे के दुख-दर्द में सम्मिलित होते हैं और मिल-जुलकर संयुक्त समस्याओं का सामना भी करते हैं। भाषा, धर्म, वंश आदि विविधता के बावजूद मानवता का रिश्ता उन्हें आपस में जोड़े रखता है ।

**मूल सिद्धांत एक**

1. यहूदी और ईसाई धर्म के अनुसार : ओ (इसराईल) याक़ूब पैग़म्बर के बच्चो, सुनो हमारा मालिक ईश्वर है, वह एक है । (बाइबल 6:4)

2. इस्लाम धर्म के अनुसार : (1) ऐ नबी, कहो वह अल्लाह एक है । (2) अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है और सब उसके मुहताज हैं । (3) न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान । (4) और कोई उसके बराबर का नहीं यानी उसके जैसा नहीं ।

3. सिख धर्म के अनुसार : श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पहले खंड में जीपोजी साहब का पहला पद है । एक ईश्वर है जो वास्तविक रचनाकार है, वह डर और द्वेषरहित है, उसे



किसी ने जन्म नहीं दिया, वह अमर है और वह पालता (संभालता) है, वह महान तथा दयालु है ।

4. हिन्दू धर्म (वैदिक सनातन धर्म) के अनुसार : स एक-एक एकवृदेक एव । अथर्ववेद 1:52:14 (ईश्वर एक है, अकेला है ।)

5. पारसी धर्म के अनुसार : पारसी ईश्वर को अहुरमजदा के नाम से पुकारते हैं, उनकी धार्मिक पुस्तक दासातीर कहती है कि ईश्वर एक है और कोई भी उसके बराबर नहीं है ।

देश के लगभग हर क्षेत्र में हिन्दू और मुसलमान साथ-साथ रहते हैं । यदि हम एक-दूसरे के धर्म को एवं एक-दूसरे के विचारों को नहीं जानेंगे, तो इन्सानियत विरोधी तथा समाज विरोधी तत्व आसानी के साथ हम लोगों के बीच भ्रम, संदेह और अविश्वास पैदा कर देंगे जैसा कि आजकल हो रहा है । यह देश की एक बहुत बड़ी समस्या है ।

अत: यह आवश्यक है कि मुसलमानों के धर्म इस्लाम को हिन्दू भाई जानें और वैदिक सनातन धर्म यानी वेद, उपनिषद और गीता आदि को मुसलमान भाई जानें ताकि धर्म के नाम पर कोई भी हमारे बीच भ्रम और ग़लतफ़हमी पैदा न कर सकें । यह एक हिकमत से भरी बात है । इस हिकमत से सत्य सामने आएगा भ्रम एवं संदेह दूर होगा । हिन्दुओं और मुसलमानों में एक दूसरे के प्रति विश्वास बढ़ेगा, सत्य के प्रति भी विश्वास बढ़ेगा और यही विश्वास भविष्य में लोगों के लिए एक नया रास्ता खोलेगा ।

कुरआन की हिकमतपूर्ण शिक्षा है कि "आओ एक ऐसी बात की ओर जो हमारे और तुम्हारे बीच समान है, यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करें, उसके साथ किसी को साझी न ठहराएं और हममें से कोई अल्लाह के सिवा किसी को अपना रब न बना ले ।

(कुरआन, 3:64)

इस हिकमत के अनुसार हम देखेंगे कि सनातन वैदिक धर्म और इस्लाम धर्म में क्या समानताएं हैं ।

1. पवित्र वेद में है : न तस्य प्रतिमा अस्ति ।

(यजुर्वेद 10:71:74)

ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं है ।

2. कुरआन में है : निगाहें उसको नहीं पा सकतीं और वह निगाहों को पा लेता है वह सूक्ष्मदर्शी और हर चीज़ से बाख़बर है । (कुरआन, 6:103)

3. उपनिषद में है :

अपाणि पादो जवनोग्रहीता ।

पश्यति चक्षु स सृणोत्कर्ण: ।।

(श्वेताश्वतरोपनिषद 3:19)

अर्थ : वह परमात्मा बिना पैर हाथ के ही बेग से चलंता है और ग्रहण करता है, बिना नेत्र के ही देखता है, बिना कानों के ही सुनता है अत: उसका स्वरूप अलौकि है ।

4. रामचरित मानस में है :

बिन पग चलै सुनै बिन काना ।

कर बिन कर्म करै विधि नाना ।। (बालकण्ड 117/5)

वह परमात्मा बिना पैरों के चलता है, बिना कानों के सुनता है, बिना हाथ के ही अनेकानेक कार्य करने की सामर्थ्य रखता है ।

5. गीता में है :

सर्वत: पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुरतम्

सर्वत: श्रुतिमल्लोके सर्वमाबृत्य तिष्ठति ।। 13:13

अर्थ : वह ब्रह्म सब ओर से हाथ-पैर वाला, सब ओर से नेत्र सिर और मुखवाला तथा सब ओर से कान वाला यानी सुनने वाला है । क्योंकि वह संसार में सबको व्याप्त करके स्थित है ।

6. कुरआन मजीद में है : पूरब और पश्चिम सब अल्लाह के हैं जिस ओर भी तुम रुख़ करोगे उसी ओर अल्लाह का रुख़ है । अल्लाह सर्वव्यापी है और हर चीज़ जानने वाला है । (2:15)

**ईश्वर ही पूजनीय एवं उपास्य है**

वेद में है :

भुवनस्य यस्पति के एव नमस्यो विक्ष्वीडय: ।

अर्थ : ब्रह्माण्ड का वह ही स्वामी सभी प्रजाओं द्वारा सिर झुकाने व उपासना करने योग्य है ।

गीता में है :

यत: प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानव: ।। (18:46)

अर्थ : जिस परमात्मा से संपूर्ण सृष्टि की रचना हुई है जिससे यह समस्त जगत व्याप्त है उस परमेश्वर को इन्सान अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा उपासना करके परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है ।

कुरआन मजीद में है : वह रब है आसमानों का और ज़मीन का और उन सारी चीज़ों का जो आसमानों व ज़मीन के बीच में है। अत: तुम उसकी बन्दगी करो और उसी की बन्दगी पर जमे रहो । क्या है कोई हस्ती तुम्हारी जानकारी में उसके बराबर की । (19:65)

**क्रोध आने की स्थिति में**

गीता में है :

क्रोधाद भवति सम्मोह: सम्मोहात स्मृति विभ्रम: ।

स्मृति भ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रण्श्यति ।। (2:63)

भावार्थ : क्रोध से विशेष मूढ़ता अर्थात अविवेक उत्पन्न होता है, नित्य-अनित्य का विचार नहीं रह जाता, अविवेक से स्मरण शक्ति भ्रमित हो जाती है स्मृति भ्रमित होने से बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि नष्ट होने पर आदमी अपने लक्ष्य से भटक जाता है ।

इस्लाम धर्म में है : गुस्सा (क्रोध) आदमी को बिगाड़ के रास्ते की तरफ़ ले जाता है । वह हमेशा नुक़सान में मुब्तिला करने वाला है ।

हदीस : हज़रत वहज़ बिन हकीम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि गुस्सा ईमान को इस तरह बिगाड़ देता है जैसे इल्वा (एक पेड़ का कड़वा रस) शहद को ख़राब कर देता है । (मिश्कात)

**परलोक की धारणा से रहित लोगों की स्थिति**

गीता में है :

चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिता: ।

कामोपभोगपरमा एतावदति निश्चिता : ॥ (16:11)

भावार्थ : वे अंतिम सांस तक अनंत चिंताओं को लिए रहते हैं और विषयों के भोगने में तत्पर वे "बस इतना ही आनन्द है" ऐसा मानते हैं । उनकी मान्यता रहती है कि जितना हो सके भोग संग्रह करो इसके आगे कुछ नहीं है ।

क़ुरआन मजीद में है : तुम लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा और एक दूसरे से बढ़कर दुनिया प्राप्त करने की धुन ने ग़फ़लत में डाल रखा है । यहां तक कि (इसी चिंता में) तुम क़ब्र के किनारे पहुंच जाते हो । (102:1,2)

**ईश्वर के सिवा अन्य की बन्दगी करने वाले**

गीता में है :

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञाना: प्रपद्यन्तेऽन्य देवता: ।

तं वं नियममास्थाय प्रकृत्या नियता: स्वया ॥ (7:20)

अर्थ : कामनाओं से जिनकी बुद्धि आक्रांत है ऐसे ही मूढ़ बुद्धि परमात्मा के अलावा अन्य देवताओं की पूजा करते हैं ।

क़ुरआन मजीद में है : इनमें एक दूसरा गिरोह अनपढ़ो का है जो किताब का तो ज्ञान रखते नहीं बस अपनी बेबुनियाद उम्मीदों और कामनाओं को लिए बैठे हैं और केवल अटकल पर चले जा रहे हैं । (2:78)

गीता में है :

य: शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्ततेकामकारत: ।

न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम ॥ (16:23)

अर्थ : जो व्यक्ति शास्त्र विधि को त्याग कर मनमाना आचरण करेगा वह न सिद्धि को प्राप्त होंता, न सुख को न परम गति को ।

क़ुरआन मजीद में है : इस आज्ञापालन (इस्लाम) के सिवा जो व्यक्ति कोई और तरीक़ा अपनाना चाहे उसका वह तरीक़ा कदापि स्वीकार न किया जाएगा और आख़िरत में वह असफल रहेगा । (3:85)

**एक ईश्वर की बन्दगी ही धर्म का मूल उद्देश्य**

गीता में है :

सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच: ॥ (18:66)

अर्थ : अर्जुन ! सभी धर्मों को त्याग कर तू केवल उस परम शक्ति परमेश्वर की शरण में आ जा । मैं तुम्हें समस्त पापों से मुक्त करा दूंगा, तू शोक मत कर ।

क़ुरआन मजीद में है : (विश्वास करो कि यहां ठेकेदारी किसी की भी नहीं है) मुसलमान हो या यहूदी, साबी हो या ईसाई, जो भी अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाएगा और भले कर्म करेगा निस्संदेह उसके लिए न किसी डर की जगह है, न दुख की । (5:69)

**एक ईश्वर के प्रति समर्पण भाव**

गीता में है :

तमेव शरणं गच्छ सर्व भावेन भारत ।

तत्प्रसादात्परां शांतिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम ॥ (18:62)

अर्थ : अर्जुन ! सब प्रकार से, सब भाव से उस परमात्मा की शरण में जो उसके कृपा प्रसाद से तू परमशांति शाश्वत धाम को प्राप्त होगा ।

क़ुरआन मजीद में है : हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने कहा : मैंने तो अपना रुख़ उस हस्ती की ओर कर लिया जिसने ज़मीन और आसमान को पैदा किया है और मैं कदापि शिर्क करने वालों में से नहीं हूं । (क़ुरआन, 6:79)


25 yrs. Service (Regd.)

**AL KAUSAR HOLY HERBAL**

HOSPITAL & RESERCH CENTRE

(A minority Unit of Islamic Medicine Under Art.30 (1) Const. of India)

Founder: **Al-Hajj Dr. ABDUR RASHEED**

*Ph.D. (HOLISTIC HERBAL)*

*Medicine of Hazrat Mohammad (S.A.W)*
*By faith of ALLAH*
*Shyamganj Road, B.Deoghar - 814112*
*(Jharkhand) India*

Kidney, Heart, Liver, Pancreas, Uterus, disorders, Pain Control, Asthama, Child Birth (Cardio, Uro, Nephro, Neuro, Gastroe, Gynae, Hemato, Diabeto Intercentral cardio, Bronco etc.)

Recharge your body, mind, psyco, soul, desire heart way of "Islamic medicine". Further treatment require or not feels within 7 to 19 days

(Rooms available)

Enquiry: 9955725769, E-mail: alkausarreached@gmail.com

Bank of India, Deoghar Branch A/c-446110100000871

IFS Code No. BKID 0004461

طبقات دوزخ سات ہیں۔ سقر۔ سعیر۔ فطی۔ حطمہ۔ جحیم۔ جہنم اور ہاویہ۔


# قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

## قادری قبض روجن ®

گیسٹک کے درد میں؟




بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے

## زعفرانی تیل ®

گھٹیا کے درد میں؟




کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گھٹیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

## پشٹک چورن ®

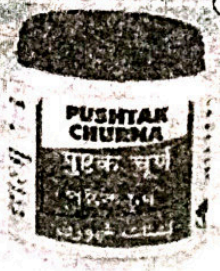


جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

## ذیابطیش سی ®

شوگر کی کامیاب دوا

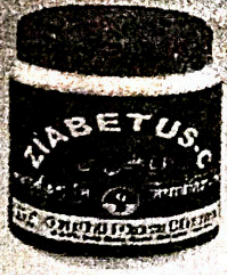


مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

## زعفرانی مالٹ

ہر عضو کی کمزوری کے لئے




دماغ و اعصاب کے لئے محرک ہے۔ ضعف باہ کو دور کرتی ہے اور اعلیٰ درجہ کا ممسک بھی ہے۔ اس کے متواتر استعمال سے مردانہ قوت اور خواہش میں اضافہ ہوتا ہے۔

مقدار خوراک۔ صبح وشام۔ ۵ گرام دودھ کے ساتھ

## کیسر فورٹ ®

قوت باہ کی طاقت میں اضافہ کے لئے




اگر مرد کی قوت میں مردانگی میں کمزوری واقع ہو تو اس کو ضعف باہ کہتے ہیں اور اگر وظیفہ زوجیت ادا کرنے کے بالکل قابل نہ ہو تو اس کو نامردی کہتے ہیں۔ ان کا تکالیف کو دور کرنے کے لئے ادارہ قادری دواخانہ نے چنتی یونانی جڑی بوٹیوں کے مرکب سے ایک ایسی کیسر فورٹ ایجاد کرلی ہے جو اعصاب کو طاقت دے کر باہ کی طاقت کو بڑھاتی ہے اور کمزوری کو دور کرنے میں بہت ہی مفید ہے۔

مقدار خوراک روزانہ ایک گولی سوتے وقت دودھ کے ہمراہ

**Qadri Dawakhana** ™
B-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24
(O) S-152, S.A. Farooque Road, (Akra Road) Kolkata- 700 018
Ph. No. 2469-3173-2489-3539 (M) 09200098107, 9674013169
Website : www.qadridawakhana.com
Email : qadridawakhana80@yahoo.co.in

STOCKIST

**Qadimi Dawakhana**
1397, Ballimaran, Delhi - 6
Ph : 011 23966395

**M/s. Shifa Clinic**
A-280, Moti Masjid Road,
P.O. Chikamberpur Shaheed Nagar,
Ghaziabad, Ph : 0120 - 2621286

# सलीक़ेमन्दी और सुघड़ता सबसे क़ीमती ज़ेवर

■ फ़रज़ाना अहमद

समझदार गृहणियां अपने घर को सुखकर बना लेती हैं। वे समस्याओं से हंसी-ख़ुशी गुज़रते हुए उनमें बहुत कुछ सीखती हैं। विपरीत से विपरीत परिस्थितियां भी उनके अनुकूल हो जाती हैं। उनमें जीवट और सलीक़ेमन्दी ऐसे ही नहीं पैदा होती है बल्कि निरंतर समस्याओं से जूझना और उन पर क़ाबू पाना, यह सब बातें गृहणियों को कुशल और कामयाब गृहणियां बनाती हैं।

एक सलीक़ेमन्दी और जीवट महिला ही अच्छी मां बन सकती है। अच्छी माएं ज़िम्मेदार और अच्छे बच्चे की बेहतरीन पाठशालाएं हैं। जो गृहणी घर को साफ़-सुथरी और सुव्यवस्थित रखेगी उसका असर उसके बच्चों पर अवश्य पड़ेगा। अगर घर की हरेक चीज़ सही और नियत जगह पर रखी रहे तो उसे स्वयं को भी तकलीफ़ नहीं होगी और घर के किसी भी सदस्य को परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। घर के दोगर सदस्यों को वह बता सकती हैं कि कहां पर कौन-सी चीज़ रखी जानी चाहिए। एक छोटी-सी माचिस रखने की जगह, साबुनदानी, सूई-धागा, पोस्टकार्ड, और क़लम-पेंसिल जैसे छतरी वग़ैरह। सभी मामूली चीज़ों का अपना-अपना महत्व है। अगर ये चीज़ें इधर-उधर पड़ी रहेंगी तो नुक़सान हो सकता है। उन्हें ढूंढ़ने की परेशानी हो सकती है। जो समझदार गृहणियां होती हैं वे हर एक चीज़ को संभाल कर नियत जगह पर रखने और उन्हें बेहतर तरीक़े से उपयोग करने के गुर जानती हैं।

फूहड़पन की वजह से कभी-कभी महिलाओं को बड़ी-बड़ी विपदाओं और परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बड़ी विपदाओं के बहुत के रूप हैं। आमतौर से महिलाएं ससुराल में जाकर वह स्थान नहीं ले पाती हैं जो उन्हें अपने मायके में मिला होता है, उसकी वजह एक यह हो सकती है कि वे अपने साथ दहेज नहीं लायी हों, ख़ूबसूरत नहीं हों लेकिन इन सब बातों के साथ महत्वपूर्ण कारण और भी है।

50 प्रतिशत महिलाओं की आत्म-हत्याओं के पीछे



स्वयं उनकी हीन भावना और अपने अन्दर सलीक़ेमन्दी का न होना पाया जाता है।

एक अच्छी मां अपनी बेटी को दहेज न देकर अगर उसे सलीक़ेमन्दी और बेहतर रख-रखाव की शिक्षा देती है, तो निस्संदेह वह एक सफल और प्रशंसनीय मां है और आज ऐसी मांओं की बहुत ज़रूरत है।

दहेज रूपी दानव को जिसे आज अख़बारों, पत्र-पत्रिकाओं में जगह मिल रही है, उसकी भयानकता और गन्देपन से किसे इन्कार हो सकता है। दहेज रूपी दानव तो ख़तरनाक और कुख्यात है ही, लेकिन उससे ज़्यादा ख़तरनाक और गंदी बात यह है कि मांएं अपनी बेटियों के लिए दहेज की चिंता करें और उन्हें जीवन में सलीक़ेमन्दी और सुघड़ता से दूर रखें।

एक अत्यंत शिक्षित, दौलतमंद और ख़ूबसूरत लड़की अगर अपने घर की साफ़-सफ़ाई, रख-रखाव, ससुराल में अपने नये रिश्तेदारों से मिलनसारिता और मृदुल स्वभाव और दूसरे के साथ-साथ अपने पति को ख़ुश रखने का गुर नहीं जानती तो उसकी शिक्षा-दीक्षा माल-दौलत उसका रंग-रूप कोई अर्थ और मूल्य नहीं रखता।

इससे उसका ग़रीब होना, अनपढ़ होना और बदसूरत होना ज़्यादा अच्छा है बशर्ते कि वह सलीक़ेमन्द और सुघड़

हो । निस्संदेह एक अच्छी गृहणी का सबसे क़ीमती जेवर और उसका सौंदर्य सलीक़ेमन्दी और सुघड़ता में छुपा हुआ है जो हर समय बेशक़ीमती है ।

## रसोई-घर की बातें

1. रोटी और पूरी अधिक मुलायम करना चाहती हैं, तो गरम पानी में आटा सानिये ।

2. सब्ज़ी में पहले खटाई मत डालिये, ऐसा करने से सब्ज़ी देर से गलेगी, आधी पकने के बाद ही सब्ज़ी में खटाई डालिये ।

3. चूल्हे-भट्ठी की आग बहुत धधक रही है, तो चुटकी भर नमक डालिये, आंच धीमी हो जाएगी ।

4. हरी सब्ज़ी बनाते समय चुटकी भर चीनी डालिये, सब्ज़ी का रंग बढ़िया रहेगा ।

5. खाने के कांटों में टमाटर फंसाकर आंच दिखाइये, छिलका आसानी से निकलेगा ।

6. मीठी चीज़ बनाते समय चौके में मक्खियां भिनभिनाने लगें, तो गरम तवे पर लौंग रखिये, मिनटों में मक्खियां उड़न-छू हो जाएंगी ।

7. हरी मिर्च काटते समय हाथ में जलन होती है तो मिर्च कैंची से काटिये अथवा लकड़ी के पाटे पर रखकर छूरी से काटें ।

8. नींबू प्रयोग में लाने से पूर्व गरम पानी में डालकर काटें, रस ज़्यादा निकलेगा ।

9. हरी धनियाँ गिलास अथवा किसी भी कांच बर्तन में गुलदस्ते के सामान रखिये 3-4 दिन धनियां तरोताज़ा रहेगी ।

10. पुराने आलू उबालते समय थोड़ा-सा दूध डाल दीजिए, आलू सफ़ेद रहेंगे ।

11. अल्युमिनियम के बर्तन कांले पड़ गये हों तो नींबू के रस से रगड़िये ।

12. सब्ज़ी का रस गाढ़ा करना है तो एक छोटा आलू पीस कर डाल दीजिये, स्वाद बदलेगा और काम भी बनेगा ।

## ग़ज़ल

देख, दहलीज से काई नहीं जाने वाली,
ये ख़तरनाक सच्चाई नहीं जाने वाली ।
कितना अच्छा है कि सांसों की हवा लगती है,
आग अब उनसे बुझाई नहीं जाने वाली ।
एक तालाब-सी भर जाती है हर बारिश में,
मैं समझता हूं ये खाई नहीं जाने वाली ।
चीख़ निकली तो है होठों से, मगर मद्धम है,
बन्द कमरों को सुनाई नहीं जाने वाली ।
तू परेशान बहुत है, तू परेशान न हो,
इन ख़ुदाओं की ख़ुदाई नहीं जाने वाली ।
आज सड़को पे चले आओ तो दिल बहलेगा,
चन्द ग़ज़लों से तन्हाई नहीं जाने वाली ।

● दुष्यन्त कुमार


Authorised Stockist

karmik concept lighting

Xperia

HARISONS THE ELECTRIC PEOPLE

IMPORTER & MANUFACTURER

LED WORLD

Exclusive LED Light Showroom

Deals in : ALS, Xperia Lights, Karmik LED, Harisons LED etc.

Ph. : 0657 - 2223045, 9204040112, 8226800810

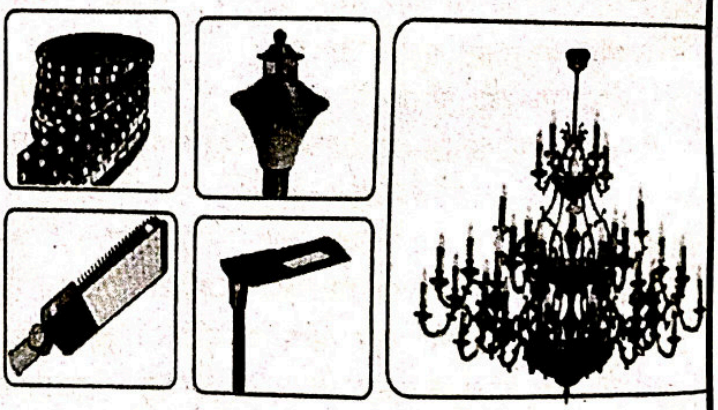

Shop # 2, Mahal Plaza Market, Aambagan, Sakchi, Jamshedpur - 831001, E- mail : techbreedtrading@gmail.com, www.techbreed.co.in

# कुफ़्र, काफ़िर और शिर्क

● संपादन प्रभाग

इस्लाम में 'कुफ़्र' और 'काफ़िर' कुछ विशेष पारिभाषिक शब्दों में से दो शब्द हैं। इसका एक विशेष अर्थ है, लेकिन दुख की बात यह है कि विभिन्न पारिभाषिक शब्दों की तरह इस शब्द को भी ग़लत अर्थ देकर ऐसा प्रभाव पैदा करने की कोशिश की जा रही है, जो इसके अस्ल (मूल) अर्थ से बहुत दूर है। शब्द 'काफ़िर' के बारे में इस तरह बताया जाता है जैसे इसमें ग़ैर-मुस्लिम भाइयों के लिए नफ़रत, तिरस्कार और अपमान का पहलू है। यह शब्द जैसे एक अपमान बोधक शब्द है। इस्लाम काफ़िर कहकर ग़ैर-मुस्लिम भाइयों को मूल मानव-अधिकारों से वंचित कर देता है और जीवित रहने का अधिकार भी देना नहीं चाहता। यह बात सच्चाई के बिल्कुल विपरीत है।

कुरआन में काफ़िर, कुफ़्र और शिर्क के शब्द बहुत-सी जगहों पर प्रयुक्त हुए हैं। कुफ़्र के अर्थ अवसर के अनुरूप विभिन्न होते हैं। जैसे इन्कार, अवज्ञा, कृतघ्नता, निरादर और नाक़द्री, सच्चाई को छिपाना और अधर्म आदि। कुफ़्र करने वाले को अरबी भाषा में 'काफ़िर' कहते हैं।

'काफ़िर' शब्द व्याकरण की दृष्टि से गुणवाचक संज्ञा है, यह अपमानबोधक शब्द नहीं है। यह शब्द उन लोगों के लिए भी प्रयुक्त हुआ है, जिनके सामने ईश्वरीय धर्म इस्लाम की शिक्षाएं पेश की गयीं और उन्होंने किसी भी कारण से उनको ग़लत समझा और उनका इन्कार कर दिया। कुफ़्र का शब्द उन लोगों के लिए भी प्रयुक्त हुआ है, जो अपने को इस्लाम का अनुयायी और मुसलमान कहते थे, परन्तु इस्लाम के प्रति निष्ठावान न थे। उदाहरणार्थ ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का कथन है–

"जिस (मुसलमान) ने जान-बूझकर नमाज़ छोड़ दी उसने कुफ़्र किया।" (हदीस)

कुरआन मजीद में कहा गया है–

"जो लोग अल्लाह के भेजे हुए निर्देशों के अनुसार फ़ैसला न करें वे काफ़िर (अधर्मी) हैं।"

(कुरआन, 5:44)

उपर्युक्त शिक्षाओं में संबोधन साफ़ तौर पर उन लोगों से है, जो इस्लाम के अनुयायी होने का दावा करते थे और अपने को मुसलमान कहते थे, परन्तु वे इस्लाम के प्रति निष्ठावान न थे।

कुरआन में एक जगह है–

"जिसने ताग़ूत (काल्पनिक देवों) का कुफ़्र (इन्कार) किया और अल्लाह को मान लिया उसने एक ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटने वाला नहीं।"

(कुरआन, 2:256)

कुरआन की इस आयत में शब्द 'कुफ़्र' इन्कार के अर्थ में है और मुसलमानों से ताग़ूत (काल्पनिक देवों) का इन्कार कराना अपेक्षित है।

'कुफ़्र' अरबी भाषा का शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ किसी चीज़ को छिपाना या ढांकना है। इसी तरह 'कुफ़्र' कृतघ्नता या नाशुक्री के अर्थ में भी आता है। अर्थात कोई व्यक्ति किसी की कृतघ्नता या एहसानफ़रामोशी करता है, तो जैसे वह अपने उपकार करने वाले के उपकार को छिपा देता है और उस पर परदा डाल देता है। इसी तरह 'कुफ़्र' का एक अर्थ यह भी है कि दुनिया को पैदा करने वाले ने अपने ईशदूतों को भेजकर अपने बन्दों के लिए सत्य मार्ग पर चलने का जो आदेश दिया है उस आदेश को मानने से इन्कार करना।

पवित्र कुरआन में 'कुफ़्र' शब्द का प्रयोग कई दूसरे अर्थों में भी हुआ है और ईमान तथा इस्लाम के मुक़ाबले में एक पारिभाषिक शब्द के रूप में भी। जैसे, किसान खेती के दौरान बीज को ज़मीन के अन्दर छिपा देता है, इसलिए किसान को भी काफ़िर (छिपाने वाला) कहा गया है। कुछ जगहों में कृतज्ञता (शुक्र) की तुलना में अकृतज्ञता (नाशुक्री) के अर्थ में भी प्रयोग हुआ है, इसलिए पैदा करने वाले के उपकारों के उत्तर में कृतघ्नता का रवैया (सुलूक) 'कुफ़्र' है और ऐसा करने वाला व्यक्ति 'काफ़िर' कहलाता है।

कुरआन में एक दूसरी जगह है–

"जान लो कि यह सांसारिक जीवन मात्र एक खेल और

तमाशा है और एक साज-सज्जा और तुम्हारा आपस में एक-दूसरे पर गर्व करना और धन और संतान में एक-दूसरे से बढ़ा हुआ ज़ाहिर करना । इसकी मिसाल ऐसी है कि बारिश हुई तो उससे पैदा होने वाली खेती से कुफ्फ़ार (किसान) ख़ुश हो गये । फिर वही खेती पक जाती है और तुम देखते हो कि वह पीली हो जाती है । फिर वह भुस बनकर रह जाती है ।" (कुरआन, 57:20)

कुरआन की इस आयत में शब्द कुफ्फ़ार (काफ़िरों) किसान के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ।

कुरआन में एक जगह परमेश्वर कहता है–

"तुम मुझे याद रखो, मैं तुम्हें याद रखूंगा और मेरा आभार प्रकट करते रहो और मेरे प्रति कुफ़्र (अकृतज्ञता) न दिखलाओ ।" (कुरआन, 2:152)

कुरआन की इस आयत में 'कुफ़्र' शब्द 'अकृतज्ञता' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ।

कुरआन में जहां कहीं भी ईश्वर और उसकी शिक्षाओं और उसके आदेशों का इन्कार करने वालों के लिए 'काफ़िर' शब्द प्रयुक्त हुआ है तो उसका उद्देश्य गाली, घृणा और निरादर नहीं है, बल्कि उनके इन्कार करने के कारण वास्तविकता प्रकट करने के लिए ऐसा कहा गया है । 'काफ़िर' शब्द हिन्दू का पर्यायवाची भी नहीं है जैसा कि दुष्प्रचार किया जाता है । 'काफ़िर' शब्द का लगभग पर्यायवाची शब्द 'नास्तिक' है ।

पवित्र कुरआन में अधिकतर कुफ़्र शब्द का प्रयोग ईमान के मुक़ाबले में इन्कार के अर्थ में हुआ है । धर्म पर विश्वास न रखने वाले लोगों के लिए हर धर्म ने विशेष शब्दावली का प्रयोग किया है । उदाहरण के लिए, जो व्यक्ति हिन्दू परिवार में पैदा हुआ है, लेकिन धर्म में विश्वास नहीं रखता है, उसे 'नास्तिक' कहते हैं ।

इसी तरह हर धर्म में उस धर्म की मौलिक धारणाओं एवं शिक्षाओं को मानने वालों और न मानने वालों के लिए अलग-अलग विशेष शब्द प्रयुक्त किये जाते हैं । जैसे हिन्दू धर्म में उन लोगों के लिए नास्तिक, अनार्य, असभ्य, दस्यु और मलिच्छ शब्द प्रयुक्त हुए हैं जो हिन्दू धर्म के अनुयायी न हों ।

कुफ़्र का एक अर्थ है सच्चाई पर परदा डालना । सारी नेमतें (कृपादान) अल्लाह, ईश्वर की दी हुई हैं । इस सच्चाई पर परदा डालकर इन नेमतों का संबंध दूसरों से जोड़ना, अल्लाह को छोड़कर दूसरों का आभारी बनना कुफ़्र का तरीक़ा है ।

'काफ़िर' शब्द वास्तव में ईश्वरीय सत्य धर्म को न मानने वालों और मानने वालों के बीच अन्तर को स्पष्ट करने के लिए है, न कि गाली देने या निरादर करने के लिए ।

अब यह बात स्पष्ट हो जाती है कि शब्द 'काफ़िर' में तिरस्कार और अपमान का कोई पहलू नहीं है । इस्लाम सैद्धांतिक रूप से सत्य धर्म (दीने-हक़) को मानने और न मानने वालों के बीच अन्तर स्पष्ट करता है, ताकि इस्लामी आदेशों को लागू करने के मामले में दोनों के साथ अलग-अलग बर्ताव किया जा सके । इस्लाम को मानने वालों को इसका पाबन्द (नियमबद्ध) बनाया जा सके और न मानने वालों को इसकी पाबन्दी (नियमबद्धता) से अलग रखा जाए ।

इस्लाम की मूल शिक्षाओं को न मानने वाले व्यक्ति को काफ़िर कहकर इस्लाम ने वास्तव में उसकी पोज़ीशन स्पष्ट कर दी है, लेकिन इससे इस्लामी राज्य या समाज में उसके मौलिक अधिकारों पर कोई आंच नहीं आती और दुनिया के मामलों में उसके साथ कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता ।

ईश्वर ने इन्सान को सबसे सुन्दर रूप-रंग में पैदा किया है । ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए हर प्रकार की सुविधाएं प्रदान कीं और सारी ज़रूरतें पूरी कीं । इन सारी नेमतों (कृपादानों) की मांग है कि लोग अल्लाह पर ईमान लाएं, जिसने उनको ये नेमतें दी हैं ।

इसी तरह अल्लाह के सभी पैग़म्बर (ईशदूत), विशेष रूप से आख़िरी ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर भी ईमान लाएं और मरने के बाद परलोक की हमेशा-हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी और वहां सभी इन्सानों के अच्छे-बुरे कर्मों के बारे में पूछताछ तथा हिसाब-किताब पर ईमान लाएं ।

विशुद्ध रूप से अल्लाह की इबादत (उपासना) और बन्दगी करें तथा उसके आदेशों का पालन करें, जो लोग अल्लाह की नेमतों (कृपादानों) से लाभ उठाते हैं, लेकिन उस पर ईमान नहीं लाते, या उसकी ख़ुदाई (ईश्वरत्व) में दूसरों को साझी ठहराते हैं, वही लोग अकृतज्ञ और नाशुक्रे हैं और कुफ़्र (इन्कार) का रवैया अपनाते हैं ।

अल्लाह के आदेशों को मालूम करने का साधन

अल्लाह के आख़िरी ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर अवतरित पवित्र क़ुरआन का अध्ययन करना है । पवित्र क़ुरआन की शिक्षाओं का व्यावहारिक उदाहरण ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की जीवनी में मिलता है । ये दोनों चीज़ें सुरक्षित और विशुद्ध रूप में आज भी मौजूद हैं, जो इसकी सत्यता का प्रमाण है ।

## शिर्क

शिर्क का अर्थ है शरीक करना या साझी ठहराना । क़ुरआन की परिभाषा में ईश्वर के अस्तित्व या उसके गुणों और अधिकारों में किसी को शरीक या साझी समझना 'शिर्क' है । शिर्क करने वाले को अरबी भाषा में 'मुशरिक' कहते हैं ।

जहां तक इस बात का संबंध है कि क़ुरआन में अनेकेश्वरवाद और मूर्तिपूजा की खंडन की गयी है और कुफ़्र तथा शिर्क करने वालों (अनेकेश्वरवादियों) और मूर्तिपूजकों को ईश्वर के प्रकोप से डराया गया है तो बहरहाल ईश्वर को इसका अधिकार प्राप्त है । जिस ईश्वर ने हमें पैदा किया, हमारी आवश्यकताएं पूरी कीं और कर रहा है । जिसने हमारे लिए हर प्रकार की सामग्री जुटाई और जुटा रहा है, वह वास्तविक स्रष्टा, स्वामी, जीविकादाता, पालनहार, दयावान और कृपाशील प्रभु अपने पैदा किये हुए जनसमूह से इसकी अपेक्षा करता है कि उसके साथ किसी को साझी न ठहराया जाए और उसकी अवज्ञा न की जाए । दुनिया में किसी मालिक को अपने नौकर की ग़लती, अवज्ञा और विद्रोह पर उसे डांटने या सज़ा देने का अधिकार होता है ।

इस दुनिया का कोई शासक अपनी सत्ता और अधिकारों में किसी दूसरे के हस्तक्षेप को सहन नहीं कर सकता । कोई देश ऐसे व्यक्ति को कोई मंत्री पद सौंप नहीं सकता, जो सिरे से उस देश के संविधान और संप्रभुता ही को स्वीकार न करता हो । ऐसे व्यक्ति को कोई मंत्री पद प्रदान करना तो अलग रहा, उसे सहन ही नहीं कर सकता । इस दुनिया में तो दयावान प्रभु का अनुग्रह नास्तिक और अवज्ञाकारी लोगों को भी प्राप्त है, क्योंकि यहां उनकी परीक्षा लेना अभीष्ट है, लेकिन मरने के बाद आने वाले पारलौकिक जीवन में प्रभु प्रत्येक व्यक्ति का हिसाब लेगा और इस दुनिया में उसने जो भी कर्म किये हैं उनके अनुसार बदला देगा । वह अपने आस्तिक तथा आज्ञाकारी बन्दे को सफलता प्रदान करेगा और अपने नास्तिक तथा अवज्ञाकारी, अत्याचारी और दुष्कर्मी बन्दों को सज़ा देगा । ईश्वर इन विभिन्न और विपरीत गुणों वाले व्यक्तियों के परिणाम में अन्तर रखेगा । अपने मानने वाले आस्तिकों, आज्ञाकारियों और सदाचारियों को इनाम (स्वर्ग) प्रदान करना और इन्कार करने वाले अवज्ञाकारियों, विद्रोहियों, अत्याचारियों और नास्तिकों को सज़ा (नरक) देना तो सर्वथा सत्य और न्यायसंगत है ।

अब हमें इस बात पर ग़ौर और चिंतन-मनन करने की बहुत ज़रूरत है कि अल्लाह के एहसानों और नेमतों (उपकारों और कृपादानों) से हम हर समय लाभ उठा रहे हैं । उसकी अनगिनत नेमतों से फ़ायदा उठाते हुए हमें क्या सुलूक अपनाना चाहिए ? क्या हम अल्लाह का इन्कार कर सकते हैं ? क्या एहसानों और नेमतों में अल्लाह के बजाय किसी दूसरी हस्ती/हस्तियों को साझी बना सकते हैं ? यह बहुत बड़ा पाप (गुनाह) होगा ।

अल्लाह क़ुरआन में फ़रमाता है–

"और जिन लोगों ने इन्कार (कुफ़्र) किया है उनके लिए जहन्नम (नरक) की आग है । न उनका क़िस्सा ख़त्म कर दिया जाएगा कि मर जाएं और न उनके लिए जहन्नम के अज़ाब में कोई कमी की जाएगी । इस तरह हम बदला देते हैं हर उस व्यक्ति को जो इन्कार (कुफ़्र) करने वाला हो । वे वहां चिल्ला-चिल्लाकर कहेंगे कि "ऐ हमारे रब, हमें यहां से निकाल ले, ताकि हम अच्छे कर्म करें उन कर्मों से भिन्न जो पहले करते रहे थे ।" (उन्हें जवाब दिया जाएगा) "क्या हमने तुमको इतनी उम्र न दी थी जिसमें कोई शिक्षा ग्रहण करना चाहता तो शिक्षा ग्रहण कर सकता था ? और तुम्हारे पास चेतावनी देने वाला भी आ चुका था । अब मज़ा चखो । ज़ालिमों का यहां कोई सहायक नहीं है ।"

(क़ुरआन, 35:36,37)

एक दूसरी जगह अल्लाह तआला क़ुरआन में फ़रमाता है–

अगर तुम इन्कार (कुफ़्र) करो तो अल्लाह तुमसे बेनियाज़ (निस्पृह) है, लेकिन वह अपने बन्दों के लिए इन्कार (कुफ़्र) को पसन्द नहीं करता, और अगर तुम कृतज्ञता दिखाओ तो उसे वह तुम्हारे लिए पसन्द करता है । कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा । अंततः तुम सबको अपने रब की ओर पलटना है, फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे हो, वह तो दिलों का हाल तक जानता है । (क़ुरआन, 39:7)

# नशाख़ोरी का बढ़ता कुप्रभाव

■ डॉ॰ अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव

हमारी युवा पीढ़ी पर मादक पदार्थों की निरंतर मज़बूत होती गिरफ़्त से जहां मानव समाज उद्वेलित है, वहीं युवतियों में ड्रग्स स्टेटस-सिंबल बन जाने से इस बुराई की समाप्ति और भी दुष्कर होती जा रही है । अब शिक्षालय भी नशे के कुप्रभाव से अछूते नहीं रहे । शरीर में घुलने वाला यह नशीला ज़हर है क्या ? वे पदार्थ जो व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक कार्यप्रणाली में परिवर्तन करते हैं, मादक पदार्थ कहलाते हैं । नारकोटिक्स सेल व अपराध अनुसंधान विभाग मादक पदार्थों को सामान्यतया चार भागों में विभक्त करता है । अफ़ीम व अफ़ीम से बने पदार्थ–मारफ़ीन, कोडीन, हेरोइन व ब्राउन शुगर, गांजा व गांजे से बने पदार्थ चरस व हशीश, कोकीन तथा सेंथेटिक ड्रग्स जैसे एल॰एस॰डी॰, मेंड्रोक्स व पी॰सी॰पी । ये सभी पदार्थ स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत ख़तरनाक हैं ।

युवा पीढ़ी शुरू में नशीले पदार्थों का सेवन स्वाद व आनंद प्राप्ति के लिए करती है । बाद में थकान कम करने व स्फूर्ति उत्पन्न करने के लिए किया जाने वाला इसका प्रयोग मनुष्य को इसका व्यसनी बना देता है । मादक द्रव्यों के अत्यधिक सेवन से व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रोग से पीड़ित हो जाता है ।

युवा पीढ़ी 'ड्रग्स' की प्राप्ति के लिए चोरी करने लगती है, जिसका अंत डकैती, लूट व हत्या जैसे जघन्य अपराधों में होता है । छोटे नगरों व ग्राम स्तर पर जहां सुल्फा, गांजा ने अपने हाथ-पैर पसार रखे हैं, वहीं बड़े नगरों में हेरोइन व ब्राउन शुगर ने अपनी जड़ें जमा ली हैं । मुंबई में इनका प्रयोग करने वालों में चौदह से पचीस आयु वर्ग के युवक-युवतियों की संख्या सबसे अधिक है ।

युवक-युवतियों में नशाख़ोरी का मुख्य कारण उनका समस्याग्रस्त होना है । आर्थिक दिक़्क़त, नौकरी की तलाश, असफल प्रेम, मनचाही सफलता न मिलना, परीक्षा में



अनुत्तीर्ण हो जाना, सुख-शांति की अप्राप्ति, परिवार में उपेक्षा तथा दैनिक कार्यों में मन न लगना जैसे कितने ही कारण हैं, जिनसे मुक्ति के लिए उन्हें मादक द्रव्यों का सेवन ही सहज व एकमात्र उपाय नज़र आता है । नशाख़ोरी किसी समस्या का हल नहीं है । यह एक ऐसी अंधी सुरंग है, जो शैतान की आंत के समान लंबी होती जाती है । युवा वर्ग जिस सुख की आशा में इसमें प्रवेश करता है, वास्तव में वह इसमें है ही नहीं । यह समस्या एक-दो दशक से नहीं, बल्कि हज़ारों वर्ष पुरानी है । मनुष्य मानसिक तनाव व शारीरिक पीड़ा से आराम के लिए ताड़ी, धतूरा व डोडा आदि का प्रयोग करता रहा है ।

कुछ युवतियां पुरुषों की देख-देखी फ़ैशन के तौर पर पहले सिगरेट को होंठों में दबाती हैं, तो कुछ मानसिक तनाव कम करने के लिए सिगरेट के साथ शराब का भी सेवन करने लगती हैं । बाद में यह सिलसिला ड्रग्स तक पहुंच जाता है । इस संबंध में कुछ का तर्क है कि पुरुषों के मुक़ाबले महिलाएं अधिक तनाव में रहती हैं । अत: ग़म भुलाने के लिए उन्हें नशे की अधिक आवश्यकता है ।

# नयी पीढ़ी को बचाएं

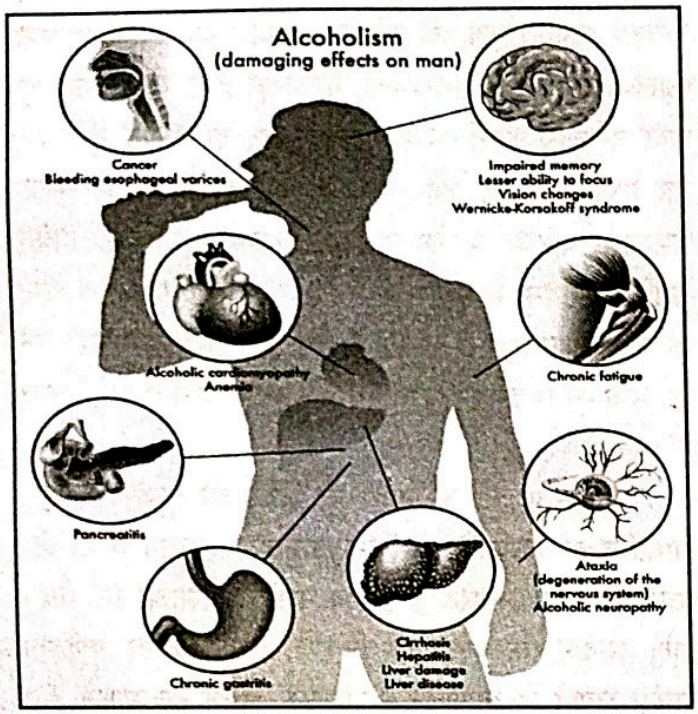


पश्चिमी सभ्यता व आधुनिक विचार अपनाने वाले कितने ही परिवारों की लड़कियां स्कूल व कॉलेज से ही मादक पदार्थों का सेवन करने लगती हैं । आरंभ में वे चोरी-छिपे अपना शौक़ पूरा करती हैं । बाद में यह शौक़ लज्जा व शर्म की तमाम हदें लांघ जाता है । नशे को आधुनिकता का पर्याय व नयी पीढ़ी की पहचान समझने वाली लड़कियां फैशन, पारिवारिक परिस्थिति, कुंठा, हीन भावना व तनाव से मुक्ति के लिए इसे अपनाती हैं ।

इंडियन काउंसिल ऑफ़ मेडिकल रिसर्च लड़कियों के नशा करने के पीछे तीन कारण मानता है–मित्रों का प्रभाव, अपने से बड़ों की नक़ल व भूख को दबाना । इनमें दोस्तों के प्रभाव में नशा करने वाली लड़कियों की संख्या सर्वाधिक है । युवतियों में सिगरेट फूंकने व शराब पीने की निरंतर बढ़ रही प्रवृत्ति तो हानिकारक है ही, मादक पदार्थों का सेवन इससे भी ज़्यादा घातक है ।

पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रची-बसी महिलाओं को अपने भविष्य तक की चिंता नहीं है । नशे के आगोश में डूबी इन महिलाओं का शरीर वास्तविक सुंदरता खोकर खोखला तो हो ही जाता है, नशीले जिस्म के गर्भ में में पल रहे शिशु पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ता है । सिगरेट व मादक द्रव्यों के प्रयोग से गर्भाशय की मांसपेशियां कमज़ोर हो जाने के कारण जहां गर्भधारण में दिक़्क़त आती है, वहीं उन्हें अधिक जटिलताओं का सामना करना पड़ता है । गर्भिणी का रक्त संचार बढ़ जाता है । शिशु मानसिक रूप से विक्षिप्त व शारीरिक रूप से विकलांग पैदा हो सकता है ।

कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि नशे की ज़्यादती के कारण नर-भ्रूण नपुंसक भी हो सकता है । शरीर में मादकता की अधिकता रक्तचाप व विक्षिप्तता को जन्म देती है, जिससे आंखों में मोतियाबिंद की शिकायत अंधत्व में बदल सकती है । महिला की कार्य क्षमता कम हो जाती है । मादक पदार्थों के सेवन से दाम्पत्य जीवन में दरार पैदा हो जाती है । पति, सास-ससुर व बच्चों आदि के साथ मनमुटाव घर के स्वर्ग से नर्क बना देता है । दक्षता प्रभावित होने से कार्य क्षेत्र से जुड़ी महिलाएं दफ़्तर व संस्थानों में उपहास व क्रोध का पात्र बनती हैं । निरंतर तनाव की स्थिति से गुज़रने पर वह कभी-कभी अविवेकपूर्ण निर्णय तक ले लेती हैं ।

जनसाधारण के स्वास्थ्य की रक्षा तथा नयी पीढ़ी को नशीले दलदल में धंसने से रोकने के लिए जहां अन्य देशों ने नियम बनाए, वहीं भारत सरकार ने भी समय-समय पर संशोधन कर नियमों को सख़्त किया । सरकार ने जनसामान्य के स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कर्तव्यों में शामिल करते हुए संविधान के अनुच्छेद-47 के अनुसार, चिकित्सीय प्रयोग के अतिरिक्त स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मादक पदार्थों व वस्तुओं के उपयोग को निषिद्ध करने के लिए 1985 में नशीली दवाएं व मनोविकारी पदार्थ क़ानून-एन॰डी॰पी॰एस॰ एक्स बनाया । इस क़ानून को लागू करने के साथ ही मादक पदार्थों का सेवन करने वालों की पहचान, इलाज,

शिक्षा, बीमारी के बाद देख-रेख, पुनर्वास व समाज में पुनर्स्थापना के लिए ज़ोरदार प्रयास किये गये, किंतु समाज में नशाख़ोरी की बढ़ती संख्या इनको नफ़ी करती है ।

1986 में पिट एन०डी०पी०एस० एक्ट का सृजन किया गया । मादक द्रव्य निषेध अधिनियम के तहत कम से कम एक लाख रुपये जुर्माना व दस वर्ष के कठोर कारावास के दंड का प्रावधान 1989 में किया गया ।

मादक पदार्थों के अवैध धंधे व व्यापार को नियंत्रित करने के उद्देश्य से जहां तस्करी रोकने के लिए विदेशों के साथ करार किये गये, वहीं देश में कार्यरत विभिन्न प्रवर्तन इकाइयों में सामंजस्य व तालमेल स्थापित करने के लिए 'नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो' को राष्ट्रीय स्तर पर समन्वय इकाई बनाया गया है । प्रदेश स्तर पर भी समन्वय प्राधिकारी नामित किये गये । उ०प्र० में पुलिस महानिदेशक, अपराध अनुसंधान विभाग, एन०डी०पी०एस० के प्रयोजनों के लिए समन्वय प्राधिकारी नामित हैं, जिनका मुख्य कार्य, मादक पदार्थों के दुरुपयोग को रोकने के लिए कार्यरत विभिन्न सरकारी व ग़ैर-सरकारी विभागों से सामंजस्य स्थापित करना है ।

अपराध अनुसंधान विभाग के अंतर्गत कार्यरत राज्य नारकोटिक्स सेल द्वारा पुलिस एवं अन्य प्रवर्तन इकाइयों के अधिकारियों को नारकोटिक्स विषयक प्रशिक्षण देकर आवश्यकतानुसार ड्रग्स परीक्षण किट आदि संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं । यह सेल समय-समय पर प्रचार-प्रसार के माध्यम से मादक पदार्थों के दुष्परिणामों की जानकारी भी जनसाधारण को देता है ।

यह आश्चर्यजनक सत्य है कि सरकारी व समाजसेवी संस्थाओं के प्रयासों के बावजूद मादक पदार्थों का प्रचलन घटने के बजाय निरंतर बढ़ रहा है । सरकार कर व लाइसेंस शुल्क की प्राप्ति के लिए जहां मादक पदार्थों का उत्पादक बढ़ा रही है, वहीं विदेशी ताक़तें भारत की युवा पीढ़ी को नशे में डुबाने पर तुली हुई हैं । मादक वस्तुओं के अवैध व्यापारी के रूप में पाकिस्तान शीर्ष पर है । संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार पाकिस्तान संसार में हेरोइन, अफ़ीम व हशीश का सबसे बड़ा उत्पादक व वितरक देश के रूप में विकसित हुआ है ।

शरीर में घुलते ज़हर से मुक्ति के लिए मनुष्य का आत्मविश्वास लौटना बहुत ज़रूरी है । यदि परिजन व दोस्तों की ओर से ड्रग्स लेने वालों की उपेक्षा व घृणा का क्रम रोक कर उन्हें सहयोग दिया जाए, तो इसका मनोवैज्ञानिक लाभ अवश्य होगा । नेश की लत से छुटकारे के लिए मेडिकल कॉलेज तथा अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे नशा उन्मूलन केन्द्र काफ़ी लाभदायक हो सकते हैं, किंतु यह तभी संभव है जब राज्य स्तर पर इस कार्य से संबद्ध समस्त राजकीय व ग़ैर-राजकीय संस्थाएं एकजुट होकर समेकित भावना से प्रयास करें । लोगों को नागरिकों व राष्ट्र के लिए विनाशकारी मादक पदार्थों की पूरी जानकारी देने के साथ-साथ इसकी बुराइयों से अवगत कराना भी ज़रूरी है ।

दूरदर्शन पर मादक पदार्थों के सेवन के दुष्परिणामों पर आधारित कार्यक्रम दिखाए जाने चाहिए । फ़िल्मों व टी०वी० धारावाहिकों में सिगरेट, शराब व नशीली वस्तुओं के सेवन वाले अनावश्यक दृश्यों के चित्रण व प्रदर्शन पर पूर्णतया पाबंदी लगाने से आशाजनक परिणाम सामने आ सकते हैं । टीन एजर्स युवतियां समाज की अमूल्य धरोहर है । घर-परिवार व समाज को आदर्श रूप देने में अहम भूमिका निभाने वाली इन महिलाओं का शिक्षित, प्रशिक्षित व आदर्शवान होना ज़रूरी है ।

अतः दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले धारावाहिकों व फ़िल्मों में उनका आदर्श चित्रण व प्रस्तुतीकरण भी आवश्यक है । समय-समय पर स्कूल-कॉलेजों में वाद-विवाद व निबंध प्रतियोगिता तथा सामाजिक संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत विचार-गोष्ठी व नुक्कड़ नाटक भी मादक पदार्थों को धीरे-धीरे कम कर समाप्त करने में सहायक हो सकते हैं ।

'कान्ति' (मा०) का आगामी विशेषांक

**'इस्लामी जीवन दर्शन'**

**विसंबर 2017 का अंक पढ़िए**

संपादक, 'कान्ति' (मा०), दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-25, editorkanti@yahoo.com

# नशे की लत से बढ़े अपराध

■ सवाई सिंह

करणी विहार थाना क्षेत्र में एक शराबी द्वारा 6 वर्ष की बच्ची का अपहरण कर दुष्कर्म करने की घटना हो या रायपुर हॉस्टिपल में शराबी ऑपरेटर की लापरवाही से ऑक्सीजन गैस सप्लाई रुकने से बच्चों की मौत की घटना, या फिर गंभीर दुर्घटनाओं का कारण बने शराबी ड्राइवर हों। इस तरह की घटनाएं भी सरकार की संवेदना नहीं जगा पाती है। जहां सरकार आय के नाम पर शराब का व्यापार कर रही है, तो वहीं समाज के एक हिस्से ने शराब की संस्कृति को स्टेटस सिंबल बना लिया है। नयी पीढ़ी शराब के साथ-साथ ड्रग्स के शिकंजे में भी फंसती नज़र आ रही हैं।

वैध या अवैध शराब और ड्रग्स के फैलाने के ज़िम्मेदार जहां क़ानून के रक्षक और राजनेता हैं, वहीं आज इसके लिए माहौल बनाने वाले टी॰वी॰ धारावाहिक, फ़िल्म और अन्य मीडिया भी है। शराब को प्रोत्साहन की भूमिका तो सरकार की यहां तक रहती है कि शराब पर जी॰एस॰टी॰ भी लागू नहीं किया गया है, जबकि बहुत सारे खाद्य पदार्थ, कपड़े, और मकान तक पर जी॰एस॰टी॰ लागू किया गया है, जबकि ये चीज़ें जीवन के लिए अनिवार्य है। शराब से सरकारों का इतना प्रेम है कि संविधान के नीति-निर्देशक सिद्धांतों में शराब और नशीले पदार्थों पर नियंत्रण करने का निर्देश दिया गया है। संविधान के इन नीति-निर्देशों की पालना भी हमारी सरकारें नहीं कर पायी हैं।

गांधी जी ने कहा था कि 'मैं एक दिन के लिए भी तानाशाह बन जाऊं तो सबसे पहले शराब एवं नशीली वस्तुओं की दुकानों एवं कारख़ानों को बिना मुआवज़ा दिये बंद कर दूंगा।' गांधी के प्रति श्रद्धा रखने वाली सरकारों ने भी इस तरफ़ उनके विचारों का सम्मान नहीं किया। गांधी जी मानते थे कि शराब एवं नशीली वस्तुएं अपराध की जननी है। शायद नेताओं को लगता है कि जनता खुशहाल हो जाएगी तो उनको कौन पूछेगा.? तभी तो आज़ादी के बाद शराब तो बंद हुई नहीं, हां लोगों की बरबादी का कारण बन गयी। नशे के शिकंजे में ग़रीब तो निराशा के कारण और अमीर शौक़िया तौर पर फंसते नज़र आते हैं। इस नशे ने सभी को नुक़सान पहुंचाया है।

शराब के व्यापक प्रचलन ने मूल्यों को भी धराशाही भी कर दिया है। जिन समुदायों में शराब को हेय समझा जाता था, उन समाजों में भी इसने अपनी जड़ें जमा ली हैं। इससे उन समाजों में भी बरबादी और बिखराव की प्रक्रिया तेज़ हो गयी है। शराब से पीड़ित और परेशान महिलाएं कोई आवाज़ उठाती हैं, तो न तो सरकार सुन पाती है और न ही स्वतंत्र कहलाने वाले मीडिया उसे गंभीरता से लेता है। शराब के ख़िलाफ़ उठी आवाज़ों को तो पुलिस तंत्र और दूसरे हथकंडों से दबाने का प्रयास किया जाता है। राजधानी के जगदम्बा नगर में क़ानूनी रूप से ग़लत शराब के ठेके को हटाने के लिए स्थानीय महिलाएं धरना दे रहीं हैं, लेकिन उसे बंद करवाने के बजाय धरने पर बैठे लोगों को ही धमकाया जा रहा है।

यह तो एक उदाहरण भर है, अन्यथा पूरे प्रदेश में यही हाल है। गुजरात और बिहार सरकार ने यह प्रमाणित कर दिया है कि शराब की आय के बिना भी विकास की प्रक्रिया को तेज़ किया जा सकता है। यह एक राजनीतिक इच्छा शक्ति है, लेकिन इस उदाहरण से भी राजस्थान या अन्य राज्य सरकारें सीख क्यों नहीं ले रही है ? यह समझने की बात हं। हो सकता है कि सत्ता में रहने वाले या उनसे संबंध रखने वालों का यह धंधा हो या शराब लॉबी द्वारा दिए जाने वाले प्रलोभनों का प्रभाव भी एक कारण हो सकता है। तभी शराब का व्यापार सरकार छोड़ने को तैयार नहीं होती है।

यह साफ़-साफ़ बात कहनी होगी कि जो शराब बंद कराएंगे उन्हीं को वोट मिलेगा। वोट की शक्ति ही शराबबंदी करवा सकेगी, क्योंकि आश्वासनों से अभी तक शराबबंदी नहीं हुई है। कई बार कई नेता इस तरह के आश्वासन दे चुके हैं, लेकिन उनके कोई ठोस परिणाम नहीं आए। अब जनता को डंके की चोट पर यह कहना होगा कि जो दल अपने घोषणा पत्र में शराबबंदी की घोषणा करेगा, उसे ही वोट देने पर विचार किया जाएगा। अपराध एकदम ख़त्म तो नहीं किये जा सकते, लेकिन शराब सेवन को हतोत्साहित करके अपराध कम ज़रूर किये जा सकते हैं। (विविधा फीचर्स)

# इस्लाम में पूर्ण नशा-निषेध

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

इस्लाम की सद्क्रान्तियों में से एक है शराब और मादक पदार्थों के सेवन से मानवता को निजात दिलाना । अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के समय में अरब समाज इतना पतित था कि जीवन में भोग-विलास की जो भी सामग्री प्राप्त हो सकती थी उससे आनन्द लेना और आज़ादी के साथ शराब पीना लोगों की दिनचर्या में शामिल हो गयी थी । लेकिन उन पर इस्लामी शिक्षाओं का इतना ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा कि शराब पीना बिल्कुल बंद कर दिया और जब कुरआन की ये आयतें अवतरित हुईं, तो जिन लोगों के पास जो कुछ शराब थी, उसे मदीना की गलियों में बहा दी–

''ऐ ईमान लाने वालो ! यह शराब, जुआ और ये थान एवं पांसे शैतान के गंदे कामों में से है । अत: इनसे बचो ताकि तुम सफल हो सको । शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुए के द्वारा तुम्हारे बीच वैमनस्य व द्वेष पैदा कर दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोक दे । फिर क्या तुम बाज़ आ जाओगे ? अल्लाह का आदेश मानो और रसूल का आदेश मानो और (इन चीज़ों से) बचते रहो । यदि तुमने (हुक्म मानने से) मुंह मोड़ा, तो जान लो कि हमारे रसूल पर केवल स्पष्ट रूप से (संदेश) पहुंचा देने की ही ज़िम्मेदारी है ।''

(कुरआन, 5:90-92)

कुरआन की इन आयतों में शराब के लिए ''ख़म्र'' शब्द प्रयुक्त हुआ है, जिसकी व्याख्या हज़रत उमर (रज़ि॰) ने इन शब्दों में की है, ''ख़म्र उस चीज़ को कहते हैं जो बुद्धि पर परदा डाल दे ।'' शराब मन-मस्तिष्क को सर्वाधिक प्रभावित करती है और बुद्धि को नष्ट कर डालती है । डॉ॰ ई॰ मैक्डोवेल कासग्रेव (एम॰डी॰, एफ॰आर॰सी॰पी॰) के अनुसार, ''अल्कोहल मस्तिष्क को नष्ट कर देती है ।''

इस्लाम ने हर प्रकार की शराब ही को हराम नहीं किया है, बल्कि इसके अन्तर्गत हर वह चीज़ आ जाती है जो नशावर हो और मनुष्य की सोचने-समझने की शक्ति को नष्ट करे या उसे क्षति पहुंचाए ।

इस अवसर पर इस बात को भी ध्यान में रखने की ज़रूरत है कि मनुष्य का जिस चीज़ के कारण समस्त प्राणियों में विशिष्ट और प्रतिष्ठित एवं केन्द्रीय स्थान दिया गया है, वह वास्तव में उसकी सोचने-समझने और सत्य-असत्य और भले-बुरे में अन्तर करने की क्षमता है ।

अब यह स्वाभाविक बात है कि जिस चीज़ या काम से मनुष्य की इस क्षमता और योग्यता को आघात पहुंचा हो या उसके पूर्ण रूप से क्रियाशील होने में बाधा उत्पन्न होती हो, उसको मनुष्य का निकृष्टतम शत्रु समझा जाए । शराब चूंकि मस्तिष्क को स्वाभाविक रूप से कार्य करने में रुकावट डालती है और उसकी तर्कशक्ति को शिथिल करके मनुष्य को मानवता से ही वंचित कर देती है, इसलिए उसे मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु घोषित करना बिल्कुल उचित ही है ।

**शराब चूंकि मस्तिष्क को स्वाभाविक रूप से कार्य करने में रुकावट डालती है और उसकी तर्कशक्ति को शिथिल करके मनुष्य को मानवता से ही वंचित कर देती है, इसलिए उसे मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु घोषित करना बिल्कुल उचित ही है ।**

कुरआन मजीद में शराब के विषय में जो कुछ कहा गया है उसका स्पष्टीकरण अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के बहुत से कथनों से भी होता है । आपने कहा है, 'प्रत्येक मादक चीज़ 'ख़म्र' है और प्रत्येक मादक चीज़ हराम है ।'

'वह हर पेय जो नशा पैदा करे, हराम है और मैं हर मादक चीज़ से वर्जित करता हूं ।'

शराब की हानि और ख़राबी के सिलसिले में इस्लाम के दृष्टिकोण को इससे भी समझा जा सकता है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा, 'अल्लाह ने लानत की है शराब पर, उसके पीने वाले पर, पिलाने वाले पर, बेचने वाले पर,

उसको ख़रीदने वाले पर और उसे निचोड़ने वाले पर और जिसके लिए वह निचोड़ी जाए उस पर, उसे उठाकर ले जाने वाले पर और उस पर भी जिसके पास वह ले जायी जाए ।'

शराब के सिलसिले में इस्लाम की सख़्ती का यह हाल है कि एक व्यक्ति ने नबी (सल्ल०) से पूछा कि 'क्या दवा के रूप में उसे प्रयोग में लाने की इजाज़त है ? तो आपने कहा, 'शराब दवा नहीं बल्कि बीमारी है ।'

एक सहाबी जो हिमियर के रहने वाले थे, कहते हैं कि मैंने नबी (सल्ल०) से निवेदन किया कि 'हम एक ऐसे क्षेत्र के रहने वाले हैं जो अत्यन्त ठंडा है और हमें मेहनत भी बहुत करनी पड़ती है । हम लोग एक प्रकार की शराब बनाते हैं और उसे पीकर थकावट और ठंडक का मुक़ाबला करते हैं ।' आपने पूछा, जो चीज़ तुम पीते हो वह नशा करती है ?' मैंने कहा हां, आपने कहा, 'तो फिर उससे परहेज़ करो ।' मैंने निवेदन किया, 'किन्तु हमारे इलाक़े के लोग नहीं मानेंगे ।' तो आपने कहा, 'यदि वे न मानें तो उनसे युद्ध करो ।'

शराब के सिलसिले में इस्लाम का एक नियम यह भी है कि नशीली चीज़ को कम से कम मात्रा में भी इस्तेमाल करने की इजाज़त नहीं है । और यह मानव दुर्बलता की दृष्टि से एक बुद्धिसंगत बात है, क्योंकि शराब के विषय में जहां यह बात सत्य है कि मुंह को लग जाए तो बड़ी मुश्किल से छूटती है, वहीं यह बात भी सत्य है कि इसमें किसी सीमा का निर्धारण बहुत मुश्किल है, क्योंकि सीमा का निर्धारण बुद्धि ही करेगी और वह शराब के प्रभाव से शिथिल हो जाती है ।

अल्लाह के नबी (सल्ल०) कहते हैं, 'जिस चीज़ की अधिक मात्रा नशा पैदा करे, उसकी थोड़ी मात्रा भी हराम है ।'

बाद के काल में भी मुस्लिम शासकों ने शराब और मादक पदार्थों से समाज को पाक रखने के लिए आदेश और घोषणाएं जारी कीं । इसका व्यावहारिक रूप भी देखने को मिला । भारत में बादशाह जहांगीर ने शराबनोशी के ख़िलाफ़ राजाज्ञा जारी की ।

अलाउद्दीन ख़िलजी के शासनकाल में तो शराबियों को शिक्षाप्रद सज़ाएं दी गयीं, जिसके फलस्वरूप लोगों की यह लत जाती रही । अकबर ने भी इसके विरुद्ध घोषणाएं जारी कीं । औरंगज़ेब के शासनकाल में तो दिल्ली में शराब की एक भी दुकान न थी । बर्नियर (फ्रांसीसी डॉक्टर) भारत आया था और औरंगज़ेब के दरबार में कई दिनों तक ठहरा रहा । वह लिखता है कि ''शराब जो हमारे यहां भोजन का प्रधान अंग है, दिल्ली की किसी भी दुकान में नहीं मिलती ।''

**अल्लाह के नबी (सल्ल०) कहते हैं, 'जिस चीज़ की अधिक मात्रा नशा पैदा करे, उसकी थोड़ी मात्रा भी हराम है ।'**

★★★★★★★

A WELL WISHER

**M/S. WADI BHANDRA**

**NAGPUR**

# KIDS CARE

## MONTESSORI & PRIMARY SCHOOL



- Montessori to Class - V
- A Huge Playground for Outdoor Games
- Efficient and Trained Teachers
- Learning through Computers
- Homely Environment
- CCTV Monitored

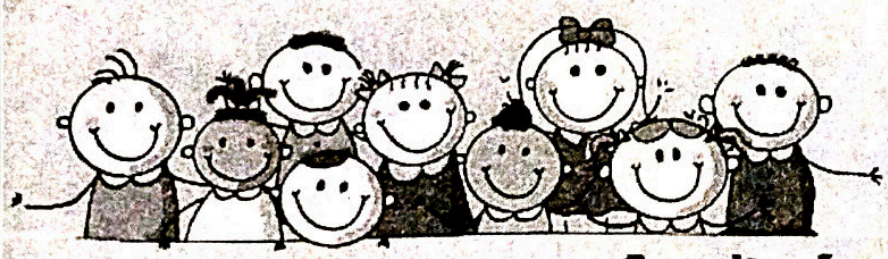

**ADMISSION OPEN**

**A unit of**
**Al-Falah Educational & Welfare Trust**

**58, Tiljala Road, Kolkata - 700046**

**CONTACT : 9874359433 / 9432340275**

**Website: www.kidscareschool.org**

# जनसरोकार के चितेरे धूमिल

■ मुहम्मद इलियास हुसैन

'धूमिल' (1936-1975 ई.) जनसरोकार के कुशल चितेरे हैं। "उनकी कविता हत्यारों के ख़िलाफ़ एक लड़ाई है। उनके दोनों काव्य-संग्रहों– 'संसद से सड़क तक' (1972 ई.) और 'कल सुनाना मुझे' (1977 ई.) में हत्यारों को अनेक रूप-रंगों में देखा जा सकता है।"[1]

धूमिल का एक और काव्य-संग्रह है 'सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र'। 'कल सुनाना मुझे' और 'सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र'– ये दोनों संग्रह धूमिल की मृत्यु के बाद छपे हैं।

धूमिल विद्रोही पीढ़ी के कवि हैं। उनकी कविताएं एक ओर व्यक्तिगत और सामूहिक, सामाजिक और राजनीतिक विद्रूपताओं, विसंगतियों और विषमताओं के कारण उत्पन्न दुख-दर्द, उत्पीड़नजनित त्रासदीपूर्ण स्थिति और जीवन के सड़ांध को तीव्रता से उभारने में सक्षम हैं, तो दूसरी ओर स्थिति की विषमता के ख़िलाफ़ विद्रोह और आक्रोश को ज़ोरदार अंदाज़ में व्यक्त करती हैं। धूमिल के साहित्य-जगत् में आने से पहले आलोचना कहानी-केन्द्रित थी, लेकिन धूमिल के आते ही यह कविता केन्द्रित हो गई। काशीनाथ सिंह के शब्दों में–

"धूमिल के आने तक आलोचना का मुंह कहानी की ओर था। वह आया और आलोचना का मुंह कविता की ओर कर दिया। अपनी ओर कर लिया। अकेले आलोचना का ही नहीं, कवि भी घूम गए। धूमिल ने अकविता, भूखी कविता, रसशानी कविता, दैनिक कविता आदि की लालसाओं को पहरा कर दिया और मूंछों पर गुर्रा देता रहा– उस पट्ठे की तरह जो अखाड़े में चुनौती देते हुए धूम रहा हो कि जो चाहे आए, हाथ मिलाए।"[2]

धूमिल ने अपनी कविता के द्वारा राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक विषमता और विद्रूपता पर तीव्र प्रहार किया है। डॉ॰ कुसुम राय ने धूमिल की अचूक प्रहारक क्षमता और विषय-वैविध्य की परख इन शब्दों में की है–

"धूमिल की कविता अपने निर्भय परिवेश की आलोचनात्मक पहचान करती है। अधिकांश कविता प्रजातंत्रीय व्यवस्था में घुसे अप्रजातंत्रीय तत्वों के परिणामस्वरूप शोषित और उपेक्षित जनता के मोह-भंग की मानसिकता की नहीं, बल्कि तथाकथित 'सुराजियों' के असली, भयावह चेहरों से हमारा साक्षात्कार कराती है, जिनकी बदौलत हमारी आज़ादी तीन थके हुए रंगों को ढोने वाले पहिए में तब्दील हो रही है और प्रजातंत्र– एक ऐसा तमाशा, जिसकी जान मदारी की भाषा है, 'संसद-भवन' प्रवंचना-भवन बनता जा रहा है, क्योंकि रोटी से खेलने वाले 'बिचौलिए' संसद भवन में बड़ी-बड़ी कुर्सियों पर विराजमान हैं। राजनैतिक ढोंग, छल, पाखंड और उसकी मानव-विरोधी हरकतों पर धूमिल की कविता प्रहार करती है।"[3]

धूमिल आम आदमी की भाषा में दीन-हीनों, वंचितों, उपेक्षितों, पीड़ितों इत्यादि के दुख-दर्द का सजीव और यथार्थपरक चित्रण करते हैं और उनकी आवाज़ हुकूमत तक पहुंचाने की हर मुम्किन कोशिश करते हैं। भले ही हुकूमत गूंगी-बहरी की तरह मूक दर्शक बनी देखती रहे।

रोटी और संसद, देश-प्रेम मेरे लिए, अकाल-दर्शन, क़िस्सा जनतंत्र, नक्सलवादी, मुनासिब कार्रवाई, उनके शहर में सूर्यास्त, मकान एवं आदमी, शहर का व्याकरण, नगरकथा, मोचीराम, पटकथा, कविता, प्रौढ़ शिक्षा, लोकतंत्र, ताज़ा ख़बर, संदर्भ, गांव, समाजवाद इत्यादि धूमिल की ऐसी कविताएं हैं, जिनमें आम आदमी की ज़िन्दगी की हक़ीक़ी तस्वीर पेश गई है। यह कहना ज़्यादा सही होगा कि धूमिल की कविता के हर शब्द से आम आदमी के दुख-दर्द टपकते हैं।

आज की विकट परिस्थिति में आम आदमी को रोज़मर्रा की बुनियादी ज़रूरतों की चीज़ें भी मयस्सर नहीं हो पा रही हैं। नेताओं द्वारा उनकी रोटी पर भी राजनीति की रोटियां सेंकी जा रही हैं, बल्कि नेतागण छीना-झपटी कर रहे हैं और बिचौलियों का क्या कहना, वे तो मज़े ले रहे हैं। धूमिल का दर्द, उनकी पीड़ा इन पंक्तियों में टपक रहा है–

एक आदमी
रोटी बेलता है

एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूं-
यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद मौन है ।

आज अपने देश में 'एकता-अखंडता' और 'दया' के नाम पर जो कुछ हो रहा है, उसके बारे में हम सब जानते हैं । धूमिल एकता को युद्ध की और दया को अकाल की पूंजी मानते हैं । वे कहते हैं–

और मैं सोचने लगता हूँ कि इस देश में
एकता युद्ध की और दया
अकाल की पूंजी है ।

आज अपराधी तत्वों और चरित्रहीनों की पांचों उंगलियां घी में हैं । उनकी आन-बान और शान देखते बनती है । वे मज़े कर रहे हैं–

और जो चरित्रहीन है
उसकी रसोई में पकने वाला चावल
कितना महीन है ।

कहा जाता है कि 'संसद देश की धड़कन को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण है।' लेकिन क्या सचमुच ऐसा है? अगर ऐसा है तो यहाँ 'ईमानदार आदमी को अपनी ईमानदारी पर मलाल क्यों है?'–

मुझसे कहा गया कि संसद
देश की धड़कन को
प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण है
जनता को
जनता के विचारों का
नैतिक समर्पण है
लेकिन क्या यह सच है?
हमारे यहां संसद तेल और पानी का मिश्रण है–
यह सच है कि
अपने यहां संसद–
तेली की वह घानी है
जिसमें आधा तेल है
और आधा पानी है
और यदि यह सच नहीं है
तो यहाँ एक ईमानदार आदमी को
अपनी ईमानदारी का मलाल क्यों है?
जिसने सत्य कह दिया है
उसका बुरा हाल क्यों है?

धूमिल कविता को नए नज़रिए से देखते हैं । वह इसको 'भाषा में आदमी होने की तमीज़' और 'एक सार्थक वक्तव्य' मानते हैं–

कविता
भाषा में
आदमी होने की
तमीज़ है ।
एक सही कविता
पहले
एक सार्थक वक्तव्य होती है ।

लेकिन आज के हालात में कविता की भूमिका बदल गयी है–

कविता
घेराव में
किसी बौखलाये हुये
आदमी का संक्षिप्त एकालाप है ।
तथा
कविता
शब्दों की अदालत में
अपराधियों के कटघरे में
खड़े एक निर्दोष आदमी का
हलफ़नामा है ।

धूमिल की लम्बी कविता 'मोचीराम' में जातिवादी समाज का सच्चा दस्तावेज़ है–

वह हँसते हुये बोला–
बाबूजी, सच कहूँ–मेरी निगाह में
न कोई छोटा है
न कोई बड़ा है
मेरे लिये, हर आदमी एक जोड़ी जूता है
जो मेरे सामने
मरम्मत के लिये खड़ा है।.....

इन सबके बावजूद, कवि को पूरी उम्मीद है कि एक न एक दिन संकट के बादल छंटेंगे, अच्छे दिन आएंगे और आम लोगों की ज़िन्दगी में ख़ुशहाली अवश्य आएगी–

'अब कोई आदमी
कपड़ों की लाचारी में
अपना रंगा चेहरा नहीं पहनेगा
अब कोई दवा के अभाव में
घुट-घुटकर नहीं मरेगा
अब कोई किसी की रोटी नहीं छीनेगा
अब कोई किसी को नंगा नहीं करेगा
अब यह ज़मीन,
आसमान अपना है
जैसा पहले हुआ करता था
मैं इन्तिज़ार करता रहा ।

कवि 'लोकतंत्र' को 'मदारी की भाषा' कहता है–

अपने यहां जनतंत्र
एक ऐसा तमाशा है
जिसकी जान मदारी की भाषा है ।

नेता हरफ़न मौला होते हैं । वे कुछ भी कह और कर सकते हैं । उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं । वे किसी मसले को सुलझाने और उलझाने में माहिर होते हैं । वे हर शंका और सवाल का एक ही जवाब देते हैं । फिर भी जनता बार-बार उन्हें ही चुनती है, चुनने को मजबूर है–

उसी लोकनायक को
बार-बार चुनता रहा
जिसके पास हर शंका और
हर सवाल का एक ही जवाब था ।

और आलेख के अन्त में धूमिल की 'शिल्प-चेतना' और 'भाषा की ख़ूबी' पर दो साहित्येतिहासकारों की सम्मतियां पेश हैं । पहली सम्मति डॉ॰ कुसुम राय की है । धूमिल की शिल्प-चेतना के संबंध में वह लिखती हैं, "काव्य-चेतना के साथ ही शिल्प-चेतना में भी धूमिल साठोत्तरी कवियों के लिए 'प्रतिमान' रहे हैं । शब्दों को खोलकर रखने की कला धूमिल की काव्य-भाषा की प्रमुख विशेषता है । सपाटबयानी, संबोधनात्मक शैली तथा सार्थक शब्दों की तलाश उनकी अपनी विशेषताएं हैं।"[4]

और दूसरी सम्मति डॉ॰ बच्चन सिंह की है । धूमिल की 'भाषा की ख़ूबियों' पर डॉक्टर साहब इन शब्दों में प्रकाश डालते हैं–

"वस्तु के बदलाव के साथ धूमिल ने कविता को नई भाषा और नए मुहावरे दिए हैं, जो विपक्ष का पक्ष प्रस्तुत करने में पूर्णत: समर्थ है, 'क्योंकि बनिया की भाषा तो सहमति की भाषा है।' बनिया भाषा के निषेध के साथ लोरियों की गंधावती भाषा भी उसे ग्राह्य नहीं और न रूमान की हरी-भरी शब्दावली।.....धूमिल की भाषा में सचेतता है, बदलाव का उपक्रम है और कर्म की प्रेरणा है।"[5]


1. डॉ॰ बच्चन सिंह, आधुनिक साहित्य का इतिहास
2. हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, खण्ड-3, पृ. 578
3. हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, खण्ड-3, पृ. 579
4. हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, खण्ड-3, पृ. 580
5. आधुनिक साहित्य का इतिहास, पृ. 300


# सरवरे आलम

जब इन्सां था दीन से जाहिल
दुनिया थी अल्लाह से ग़ाफ़िल
उस दम बनकर दीन के हामिल
आये इक इन्साने मुकर्रम

कौन? मुहम्मद सरवरे आलम[1]
सल लल लाहु अलैहि व सल्लम[2]

वुफ़्रो बदी से लड़ने वाले
जुल्मो सितम को सहने वाले
बात मगर इक़ कहने वाले
करने वाले रोशन आलम

कौन? मुहम्मद सरवरे आलम
सल लल लाहु अलैहि व सल्लम

मालिक का फ़रमान सुनाकर
इन्सां को इन्सान बनाकर
हाथों में क़ुरआन थमा कर
आये दीन को करने क़ायम

कौन? मुहम्मद सरवरे आलम
सल लल लाहु अलैहि व सल्लम ।

■ **कौसर आज़मी**

1. जगत-नायक
2. उन पर अल्लाह की सलामती और रहमत हो ।

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

# HALAL
## INVESTMENT & FINANCE

**Eat Halal Earn Halal**

**HALAL**
**INVESTMENT & FINANCE**

**Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions**

## Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE INVESTMENT & FINANCE

**Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99**
**Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,**
**N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)**
**Mumbai (Maharashtra)**

**Chairman : Janab Imammuddin Nihaluddin Shaikh**

**Contact Us : 9022665544, 9869641648**

# अनुभवी दादा जी

■ देवेन्द्र कुमार मिश्रा
चंदन गांव, छिंदवाड़ा (म०प्र०)

जब मां, बेटे को लेकर चिंताग्रस्त रहने लगे और पिता के चेहरे पर तनाव दिखने लगे और मामूली से विवाद पर वह चाहे परिवार के किसी भी सदस्य के साथ हो, पिता के मुंह से निकल जाए कि कब तक बैठे-बैठे मुफ़्त की खाते रहोगे। कुछ करते-धरते क्यों नहीं ? और बेटे के जवान ख़ून का स्वाभिमान उसे ललकारने लगे और ऐसे में भी कोई नौकरी हाथ न लगने की निराशा से बेटा स्वयं को परिवार से अलग मानने लगे। उसे लगने लगे कि यह घर उसका नहीं। माता-पिता का है। अब इस घर में गुज़ारा संभव नहीं है। और मां भी चुप-चुप सी रहकर बेटे को अपने पैर पर खड़ा होने की सलाह यदा-कदा देने लगे तब बेटा क्या करें ? वही जो कार्तिक ने किया।

उसने शहर के ही एक मेडिकल शॉप में काम करना शुरू कर दिया। मध्यवर्गीय पिता को इस बात से ठेस पहुंची। उन्होंने कहा–"क्या इसलिए ख़ून-पसीना बहाकर पढ़ाया कि तुम इसी शहर में पांच हज़ार रुपये माह की नौकरी करके मेरी नाक कटवाओ ? मुझे हंसी का पात्र बनाओ ? क्या कहेंगे लोग कि बड़े बाबू का लड़का और दूसरे की दुकान में नौकर। कोई ढंग की नौकरी नहीं तलाश सकते ?"

इसका एक ही अर्थ हुआ कि शहर छोड़ दिया जाए, क्योंकि व्यवसाय करने के लिए पिता से रुपये मांगे जाए तो यही उत्तर मिलेगा कि मकान बनाने में, बेटी की शादी करने में जीवन भर की जमा पूंजी ख़र्च हो गयी। जो थोड़ा-बहुत पैसा अपने बुढ़ापे के लिए बचा रखा है। उस पर भी तुम अपनी गिद्ध दृष्टि जमा कर बैठे हो। उनका कहना सही भी है, लेकिन सरकारी नौकरी तो मिलने से रही। सारे प्रयास विफल हो चुके हैं।

फिर बस एक अंतहीन बहस...। कुछ सार तो निकलना नहीं है। मध्यमवर्गीय आदमी को अपनी इज़्ज़त की बड़ी फ़िक्र लगी रहती है। जीवन गुज़र जाता है उसका, इज़्ज़ बनाने में, फिर उसने बचाने में। दूसरे की दुकान पर नौक करना उनके सम्मान के ख़िलाफ़ था। सो बेटे कार्तिक शहर छोड़ने का फ़ैसला कर लिया मन ही मन। दिन-रात यही सोचता रहता कि कहां जाऊं, क्या करूं हिन्दी मीडियम से एम०ए० पास व्यक्ति को कौन नौक देगा ? बड़ी प्राइवेट कंपनियों में अंग्रेज़ी बोलने वा चाहिए। उसे कंप्यूटर में दक्षता हासिल होनी चाहिए, तो क्या करें ? जब सीधे रास्ते सारे बन्द नज़र आने लगे व्यक्ति उल्टा-सीधा सभी तरह से सोचने लगता है। कार्ति को रुपये चाहिए थे। अच्छी नौकरी चाहिए थी। जो मिलती नज़र नहीं आ रही थी। चारों तरफ़ अंधेरा ही अंध नज़र आ रहा था।

इससे पहले कि पिता फिर कोई ऐसी कठोर बात क बैठे। इससे पहले कि मां प्रेम से उलाहने देने लगे कि बे जल्दी से कोई नौकरी तलाश ले। शादी की उम्र हो ग है। लड़की वाले आने लगे हैं। पूछने पर उनसे क्या क कि बेटे को अभी तक कोई नौकरी नहीं लगी। इस उम्र भी बेटा रोज़गारहीन है। ऐसे में कौन अपनी लड़की देगा और एक दिन वह अपनी डिग्रियां लेकर घर से निकल प महानगर की ओर कि शायद कुछ बात न जाए घर में उ इतना ही कहा–"यहां तो नौकरी मिलने से रही। मैं नौक की तलाश में बाहर जा रहा हूं। शायद कोई बात जाए। पिता के ये पूछने पर कि कहां जा रहे हो ?"

उसने कहा–"नौकरी की तलाश में।"

"कब तक लौटोगे और वहां रहोगे कहां ?"

"एक माह तक कोशिश करूंगा। मेरा एक दोस्त रह है मुंबई में उसी के घर जाकर रहूंगा। उससे बात कर है।"

"और एक माह में भी बात नहीं बनी तो।" पिता प्रश्न दागा, जो तोप के गोले की तरह था।

कार्तिक चुप रहा। उसे चुप देखकर पिता ने कहा–"ए

ह बाद ख़ाली हाथ वापस आ जाओगे । नौकरी की तलाश जा रहे हो या मौज-मस्ती करने ।''

''मौज-मस्ती के लिए रुपये चाहिए होते हैं ।'' कार्तिक नाराज़गी से कहा ।

पिता ने उसके हाथ पर दस हज़ार रुपये रखते हुए हा–''ये रख लो । और हो सके तो ख़ाली हाथ मत टना । इतनी कमाई वाली नौकरी ज़रूर ढूंढ़ लेना कि विष्य में अपने साथ-साथ अपने परिवार का पालन-पोषण र सको । रोटी-कपड़ा जुटा सको ।''

जवान बेटे पर वृद्ध बाप को भरोसा नहीं रहता । क्यों हीं रहता, पता नहीं । उन्हें शायद लगता होगा कि बेटा घूम-र के वापस आ जाएगा । इससे कुछ होने वाला नहीं । पिता के गुस्से से उनके कड़वे बोल से बेटे के मन में ड़वाहट भर जाती । आपस में दूरियां भी । और एक दिन टे ने नौकरी की तलाश कहकर शहर छोड़ दिया । उस हर में दूर जो उसकी जन्मभूमि थी वहां रहने के लिए कुछ वा भी नहीं था । उसके सारे दोस्त या तो सरकारी, ऊंची पनी में नौकरी कर रहे थे या शहर में ही कोई स्वयं का च्छा बिजनेस । ऐसे में बेकारी और रोज़गारी । ग़रीबी और मीरी का अंतर मित्रता समाप्त करने के लिए भी कभी ाफ़ी होता है । सफल दोस्त मुंह टेढ़ा करके निकल जाते । घर-बाहर, मित्रों से मिलते अपमान से तिलमिलाता वह हानगर जाने वाली ट्रेन में सवार हो गया । दिमाग़ में -रहकर प्रश्न उठ रहे थे कि वह कहां जाए ? करे या ? अब तो ईश्वर ही कुछ कर सकता है ।

महीने भर कार्तिक मुंबई में भटकता रहा । काम मिला तो होटल का, हॉकर का, किसी दुकान में पार्ट इम-फुल टाइम । कुछ जगह उसे टेक्सी चलाने का भी ाम मिला, किंतु उसके पास लाइसेंस नहीं था । हर बड़ी पनी से अंग्रेज़ी न बोल पाने के कारण उसे रिजेक्ट कर या गया । एक कंपनी के मैनेजर ने कहा–''पोस्ट ग्रेजुएट और अंग्रेज़ी नहीं आती ।'' उसे आश्चर्य हुआ । और अपने ाश्चर्य के साथ उसने काम देने से मना कर दिया । उसने ह ज़रूर कहा कि मैं तुम्हें कंपनी में वॉचमैन की नौकरी सकता हूं । रहने को एक कमरा दिया जाएगा । वह न रने वाला था कि उसे पिता के गुस्से, तनाव में कहीं बात द आ गयी ।

''कब तक मुफ़्त की रोटियां तोड़ते रहोगे ?'' कार्तिक ने 'हां' कर दी । वह रात भर कंपनी की रखवाली में हाथ में लाठी लिए घूमता रहता । सीटी बजाता रहता और दिन भर सोता रहता । अपने हाथ से अपना खाना पकाता । बर्तन धोता । वॉचमैन की ड्रेस पहनता और चल देता नौकरी पर । एक दिन पिता का फ़ोन आया । कार्तिक ने बताया कि उसे नौकरी मिल गयी है एक कंपनी में । शुरुआती वेतन 8000 रुपये प्रतिमाह है । रहने को एक कमरा भी मिला है कंपनी की तरफ़ से ।

''किस पोस्ट पर हो ।'' पिता ने पूछा ।

कुछ देर वह सोचता रहा । फिर उसने जवाब दिया ।

''एकाउंटेंट ।''

''न तूमने कॉमर्स लिया था । न तुमने एकाउंट का कोर्स किया था । फिर एकाउंटेंट कैसे बना दिया तुम्हें ?'' कार्तिक ने फ़ोन काट दिया ।

कुछ दिनों बाद मां का फ़ोन आया ।

''बेटा एक अच्छा रिश्ता आया है । अब तो तुम्हारी नौकरी भी लग गयी है तुम्हारी शादी की बात करूं ।''

''अभी नहीं ।''

''तो कब करेगा शादी ?''

''पहले मुझे ढंग से सेटल तो हो जाने दो ।''

कहते हुए कार्तिक ने फ़ोन काट दिया । पता नहीं मां-पिताजी मुझे मनाने के लिए या यह देखने के लिए कि मैं सचमुच नौकरी कर रहा हूं या नहीं एक दिन मेरे ऑफ़िस में चले आये ।

कंपनी से उन्हें मेरे क्वार्टर का पता मिला । क्वार्टर क्या था ? एक कच्चा, सीलन भरा कमरा था, जिसमें सांस लेने में भी दिक़्क़त होती थी ।

कार्तिक मां-बाबूजी को सामने देखकर घबरा गया । मां की आंखों में तो आंसू थे और पिताजी का चेहरा उतरा हुआ था ।

''जब काम ढंग का नहीं मिला तो वापस क्यों नहीं आ गया ?'' पिताजी ने गरजती आवाज़ में कहा ।

''आपने ही तो कहा था कि कब तक मुफ़्त की...।''

''पिता हूं तुम्हारा । पिता गुस्से में बहुत कुछ कह जाते हैं । इसका मतलब यह तो नहीं कि हर बात दिल पर लगा लो ।''

''काम कोई छोटा-बड़ा नहीं होता । पिताजी । मैं ईमानदारी से अपने पैर पर खड़ा हूं ।'' कार्तिक ने कहा ।

"हां, वह तो मैं समझ गया बेटा कि तुम अपनी ज़िम्मेदारी समझते हो, लेकिन इतनी ख़राब हालत भी नहीं हमारी कि तुम्हें इतनी छोटी नौकरी करना पड़े । तुम वापस चलने की तैयारी करो । मैंने तुम्हारे लिए नौकरी की व्यवस्था कर ली है । हम आज रात ही लौटेंगे । मैं रात की ट्रेन की टिकट बुक करवाकर आता हूं ।" पिताजी स्टेशन चले गये । मां ने कहा–"बेटा, यदि अच्छी नौकरी होती । तुम बढ़िया तरीक़े से रहते तो नौकरी छोड़ने को नहीं कहती । बेटा दूर भी रहे मां-बाप से और सुखी भी न रहे । आजीविका अनुकूल न हो तो अपने घर में दाल-रोटी खाकर रहेंगे साथ में ।"

"लेकिन मां, अपने शहर में भी तो पिताजी को मेरा किसी की दुकान पर काम करना मंज़ूर नहीं ।"

"हां, लेकिन यह काम भी उन्हें मंज़ूर नहीं । मुझे भी नहीं । तुम चिंता मत करो । तुम्हारे लिए अच्छी नौकरी का बंदोबस्त कर लिया जाएगा ।

"लेकिन मां तब तक मैं बेरोज़गार घूमूंगा ।"

"बेरोज़गार क्यों घमेगा ? अपने घर में रहोगे । तुम्हारे दादाजी ने बहुत डांटा मुझे और तुम्हारे पिताजी को । जब उन्हें पता चला कि मेरी उपेक्षा और पिताजी के कटुवचनों से तुम रोज़गार के लिए शहर छोड़कर मुंबई चले गये हो ।"

दादा जी ने कहा–"जवान बेटे से बात करने का ये तरीक़ा नहीं होता । गरम ख़ून है कहीं गुस्से और निराशा में कुछ कर बैठे या कोई ग़लत रास्ता पकड़ ले तो फिर ज़िन्दगी भर रोते रहोगे । जैसे बेटी के विवाह की ज़िम्मेदारी निभानी पड़ती है । वैसे ही आज के बेरोज़गारी के दौर में बेटे को पढ़ाना-लिखाना ही काफ़ी नहीं होता । पिता को उसे रोज़गार से भी लगाना पड़ता है । मेरे एक दोस्त ने अपने बेटे को यही कहा था ।

एक बेटे ने बेरोज़गारी के कारण पहले शहर छोड़ा, फिर वहां किसी ईसाई लड़की से शादी करके घरजमाई बन गया । उसके बाद ससुर और पत्नी की जली-कटी सुनना पड़ती उसे । मजबूरन दो नम्बर के काम करने लगा और एक दिन पकड़ा गया, तो पुलिस ने नारकोटिक्स का केस बनाकर जेल भेज दिया । वर्षों बाद जेल से छूटा तो पत्नी दूसरी शादी कर चुकी थी । ससुर ने घर के बाहर से अपराधी कहकर भगा दिया । अंत में उसने आत्महत्या कर ली । बेटे के भविष्य के लिए एक खेत नहीं बेच सकते । छाती पर रखकर ले जाओगे । अपने मरने पर बेटे को हिस्सा दो लेकिन तब तक बेटा ही न रहा तो । तुम्हारे पास है तो अ करो बेटे के लिए कुछ । उसे रोज़गार से लगा दो । त उसकी शादी कर पाओगे । अपने हाथों से बेटे का शुभ-श देखना, करना चाहते हो तो तुम्हें ही कुछ करना पड़ेगा के लिए । अपने मान-सम्मान के चलते यदि उसे कि की दुकान में नौकर बने नहीं देखना चाहते तो माल बनाओ । भले ही छोटा-सा व्यापार क्यों न हो ।

हां यदि तुम्हारी स्थिति इस लायक़ नहीं होती तब पि बात अलग होती । फिर तुम्हें भी उसका किसी की दुक पर नौकरी करने में शर्म महसूस नहीं होती । मैंने भी तु पढ़ा-लिखाकर छोड़ नहीं दिया दुनिया की भीड़ में जाओ और कमाओ । नौकरी से लगाया उस समय नौक मिलना आसान था । फिर तुमने बेटे की पढ़ाई पर ध्य दिया होता तो उसे तकनीकी शिक्षा देते । डिग्री न सही क डिप्लोमा करवाते । आज के तकनीकी युग में एम०ए० डिग्री से क्या होता है ? इंजीनियर न सही मैकेनिक कोर्स करवा देते । आई०टी०आई० में दाख़िला करवा देते कम से कम अपने लिए रोज़गार तो ढूंढ़ लेता । ख़ुद का क काम शुरू कर सकता था । इलेक्ट्रीशियन, प्लम्बर, कंप्यू का ही काम कर लेता ।"

मां के कहने से लगा कि पिताजी को शायद अप ग़लती समझ में आ गयी है । उन्हें दुख हुआ कि उन डांटने, घर से भगाने वाले तरीक़े से बेटा हाथ से निक सकता है । दादाजी की बुज़ुर्ग बुद्धि का तो मैं क़ायल गया । इसलिए नहीं कि उनके कहने पर मुझे घर ले ज आए है मां-पिताजी । बल्कि इसलिए कि इतनी सम वर्तमान समय की इतनी जानकारी । जवान पोते के दिल चल रही उथल-पुथल पर इतनी पकड़ । मां ने कहा–"तुम दादाजी ने कहा है कि यदि किसी ग़लत रास्ते पर नहीं चला होगा, तो मुंबई में ऑटो-टैक्सी चला रहा होगा किसी होटल में काम कर रहा होगा । यह भी हो सकता कि किसी कॉलोनी, किसी कंपनी में चौकीदार हो । जा देखकर आओ । संतुष्ट हो तो मिलकर लौट आना न हो मनाकर लेते आना ।"

"वाह ! दादाजी" मैंने मन ही मन कहा । कार्तिक पिताजी तीन टिकट लेकर आ गये । वर्दी और क्वार्टर चाबी मैनेजर को सौंपी । रात की ट्रेन से कार्तिक, मां-पिता

साथ अपने शहर, अपने घर की ओर चल पड़े ।

गांव से दादाजी शहर आ चुके थे । दादाजी ने कार्तिक सीने से लगाकर 'जीते रहो' का आशीर्वाद दिया । फिर ा–"खेती करोगे या व्यापार ।"

"व्यापार का तो कोई अनुभव नहीं है दादाजी ।" र्तिक ने लाचारी भरे स्वर में कहा ।

दादाजी ने समझाते हुए कहा–ऐसे उदास, हताश होने से म नहीं चलेगा । अनुभव काम करते-करते ही आता है । हारा रुझान किस तरफ़ है ?" "दादाजी मैं खेती करना हता हूं ।" कार्तिक ने कहा ।

"बेटे, किसानी तुम कर पाओगे । मुझे नहीं लगता । ब तुम थोड़ी-थोड़ी सी बात पर उदास हो जाते हो, तो सानी तो बहुत जोखिम और हिम्मत का काम है । कभी काल कभी बाढ़ । कभी सब्ज़ियों के, फ़सल के उचित म न मिलना । कभी सरकार की उदासीनता । कई किसान आत्महत्या तक कर लेते हैं । बहुत हिम्मत चाहिए किसान ने के लिए । सरकारी अमले के भ्रष्टाचार से गुज़रते हुए डी के व्यापारियों की क़ीमत पर अनाज बेचना पड़ता है ड़ी के दामों पर । लागत भी नहीं निकलती कई बार । किन है राजा काम । आप अपने मालिक खुद । लाभ-हानि लगी रहती है ।"

मैंने दादाजी की बात काटते हुए कहा–"दादाजी मैं सान ही बनूंगा । फिर सरकार कर तो रही है बहुत छ । किसानों के लिए क़र्ज़ माफ़ी तक ।

"नहीं बेटा, क़र्ज़ हमें लेना भी नहीं है । बस अकाल, ढ़ में फ़सल नष्ट होने पर सरकार मुआवज़ा किसानों के स ईमानदारी से पहुंच जाए, इसके लिए हारे जैसे पढ़े-लिखे व्यक्ति का किसान ना बहुत ज़रूरी है । हमारी सरकार से बस नी लड़ाई है कि उपज का उचित मूल्य ले । अब बोलो क्या कहते हो ? चाहो तो र में कोई दुकान खोलकर बैठ जाओ चाहे किसानी करो ।"

"दादाजी मैं शहर में अपना गोदाम बनाकर ना अनाज स्वयं बेचूंगा और भी किसानों अनाज बेचूंगा । ताकि जल्दबाज़ी में सानों का शोषण न हो सके । किसान ना अनाज स्वयं खुले मार्केट में बेचेंगे । किसान, खेती भी करेंगे । फ़सल आने पर शहर आकर उसे स्वयं बाज़ार में बेचेंगे ।"

यह तो बहुत बढ़िया बात हुई । किसान पढ़ा-लिखा हो । उसके पास बाज़ार में अनाज बेचने के साधन हो, तो फिर कौन उसका शोषण कर सकता है ? किसान स्वयं अपनी क़ीमत पर अपनी फ़सल बेचेगा । तो क्या समझूं मैं ?"

"दादाजी मैं किसान बनूंगा । खेती करूंगा ।" पोते की बात सुनकर दादाजी खुश हो गये । मां-पिताजी के चेहरे पर भी प्रसन्नता छा गयी । कार्तिक का विवाह संपन्न हो गया । गुज़रते समय के साथ वह दो बच्चों का पिता भी बन गया ।

खेत में काम करते हुए मज़दूरों को देखते दादा-पोते एक साथ टहल रहे थे । कार्तिक ने अचानक पूछा–"दादाजी आपको मुंबई के विषय में इतनी जानकारी कैसे है ? वहां के जीवन अपराध, रोज़गार और जैसा कि आपने पिताजी से कहा था कि ग़लत काम नहीं कर रहा होगा, तो होटल में बैरा बना होगा या टैक्सी, ऑटो चला रहा होगा या कहीं चौकीदारी कर रहा होगा ।"

दादाजी के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आ गयी । उन्होंने धीरे से कार्तिक के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा–"किसी से कहना मत । अपने बाप से तो बिल्कुल नहीं ।" एक बार मैं भी घर से भागकर मुंबई गया था । उस समय उसे बम्बई कहते थे । कार्तिक बिस्मित था । अवाक था । फिर उसने एक ठहाका लगाया । उसके ठहाके के उत्तर में दादाजी ने और भी ज़ोरदार ठहाका लगाया ।




# कैसा होगा 2022 का न्यू इंडिया ?

■ वेदव्यास

लालक़िले की प्राचीर से देशवासियों के नाम प्रधानमंत्री का संबोधन मैं 1947 से सुन रहा हूं, लेकिन अब 2017 का संबोधन सुनकर मुझे लगता है कि जैसे भारत अब एक बार फिर किसी नयी क्रांति के किनारे पर खड़ा है और कह रहा है कि 15 अगस्त 2022 तक देखना, हम भारत माता के सभी सपने पूरे कर देंगे । पता नहीं इन आने वाले पांच वर्षों में अब ऐसा क्या होगा जो पिछले 70 साल में नहीं हुआ है । लेकिन लालक़िले का चेहरा, चाल और चरित्र देखकर मुझे फिर अनुमान होता है कि अब आगे वही होने वाला है जो 9 अगस्त 1942 और 15 अगस्त 1947 के बीच हुआ था । यानी कि महात्मा गांधी की सत्य और अहिंसा को भूलकर हम सांप्रदायिक सद्भाव से भारत को मुक्त बना देंगे ।

आप अगस्त क्रांति के लिए 8 अगस्त 1942 का मुंबई के आज़ाद मैदान का गांधी जी का ऐतिहासिक भाषण पढ़िए और उसके बाद पांच साल तक गांधी की उपेक्षा का राजनैतिक तूफ़ान फिर से जानिए ताकि आप आगे के 2022 तक सावधान रह सकें ।

लालक़िला इस देश में लोकतंत्र का स्वागत करती हुई स्वतंत्रता का प्रतीक है और इसकी विशेषता यह है कि वह बोलता है किंतु सुनता नहीं है । और कहीं सुनता भी होगा तो मानता नहीं है । फ़र्क़ यह है कि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने 14 अगस्त 1947 की आधी रात को देश की जनता से जिस नियम के साक्षात्कार जैसा संबोधन किया था वह हमारे संपूर्ण स्वतंत्रता संग्राम का प्रतिफल था परंतु उसके बाद से आज तक लालक़िला केवल आम चुनाव से निकले जनादेश की राजनैतिक आवश्यकताओं के अनुसार ही बोल रहा है । यही कारण है कि भारत आज 70 साल बाद भी ग़रीब, ग़ैर बराबरी और जाति-धर्म की असहिष्णुता से पीड़ित है ।

हमें लगता है कि नेहरू, इंदिरा और लाल बहादुर शास्त्री के बाद लालक़िले के भाषणों की विश्वस- नीयता घटती जा रही है, क्योंकि अब घोषणाओं, सपनों, अध्यादेशों की भाषा लालक़िले से अधिक बोली जा रही है । अब स्वच्छ भारत और शौचालयों की बात तो हो रही है लेकिन हाथों से गटर साफ़ करते 21वीं शताब्दी के दलित शहीदों की बात कोई नहीं बोल रहा है । अब बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ की प्रचार माला तो सुनायी जा रही है परंतु महिला उत्पीड़न का धारावाहिक महापुराण अब कोई नहीं रोक रहा है ।

लालक़िला अब नेहरू का और गांधी का नाम लेने से डरता है और किसान, मज़दूर, युवा सपनों और जनधन के लुटेरों का नाम लेने तक से परहेज़ करता है । बाज़ार और कारोबारी कंपनियों का शोर तो लालक़िले से सुनाई देता है, लेकिन यह रहस्य कोई नहीं बताता कि आदिवासी और अल्पसंख्यक भारत को विकास की मुख्यधारा से बाहर धकेलने की राजनीति कौन और क्यों कर रहा है ? आश्चर्यजनक परिवर्तन तो यह है कि लालक़िला आजकल भारत गौरव की जगह हिंदुत्व के गौरव का आख्यान अधिक सुना रहा है । इसीलिए आम भारतीय जनता को लगता है कि 2022 में यह नया भारत-राष्ट्रवाद और धर्मोन्माद के रथ पर सवार होकर टेक्नोलॉजी तथा सैन्यवाद के साथ महाजनी क्रांति का बिगुल बजाएगा और ग़रीब की अंतरआत्मा का विलाप फिर कोई नहीं सुनेगा ।

हमें लोकतंत्र के इस जनादेश को भी समझना होगा कि राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री से लेकर अब सत्ता व्यवस्था के हर मोर्चे पर वही लोग क़ाबिज़ हैं जो स्वयंसेवक तो हैं पर स्वतंत्रता सेनानी नहीं है । गांधी, अंबेडकर, विवेकानंद, भगत सिंह, सरदार पटेल का नाम दोहराना इनके लिए आसान है किंतु ऐसा कुछ बनना बहुत कठिन है । ऐसे में 2022 का न्यू इंडिया धर्मानुरागी देशभक्तों का स्वर्ग होगा जो भारत को केवल हिंदी, हिन्दू, हिंदुस्तान बना देगा और इतिहास के नायक, संविधान की बुनियाद और सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक सहिष्णुता की विचारधारा की दिशा ही बदल देगा । (विविधा फ़ीचर्स)

# आंखों की नियमित देखभाल

■ राखी बंसल

प्रकृति द्वारा प्रदत्त उपहारों में दृष्टि का स्थान सर्वोपरि है । इस अनमोल उपहार की सुरक्षा एवं स्वस्थता के लिए हमें निरंतर सजग रहना पड़ता है । दृष्टि यानी आंखों के द्वारा ही हम संसार की ख़ूबसूरती को देख सकते हैं, लेकिन यदि हम आंखों के प्रति उपेक्षा और असावधानी बरतेंगे तो इसके हमें गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं । यदि आंखों की उचित देखभाल और सुरक्षा की जाए तो यह ऐसा प्रकाश बिंब है जो हमारी ज़िन्दगी को ही नहीं बल्कि कई लोगों के जीवन को ज्योतिर्मय कर सकता है ।

कहने का तात्पर्य यह है कि यदि हमारी आंखें स्वस्थ रहेंगी तो इस संसार में रहने पर भी हमारी आंखें कई नेत्रहीनों को ज्योति दे सकती हैं । इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को सावधानीपूर्वक अपनी आंखों की देखभाल करनी चाहिए क्योंकि यह शरीर का सबसे संवेदनशील हिस्सा है । सामान्यत: आंखों की सुरक्षा के लिए निम्न उपायों पर ध्यान देना आवश्यक है ।

● आंखों को स्वस्थ रखने के लिए पर्याप्त नींद लेना बहुत आवश्यक है । पर्याप्त नींद न लेने से आंखें भारी और लाल नज़र आती हैं । उनके चारों तरफ़ काले धब्बे पड़ जाते हैं इसलिए आंखों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए कम से कम सांत घंटे की नींद लेना बहुत ज़रूरी है ।

● आंखों को स्वस्थ रखने के लिए खान-पान पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए । नेत्र चिकित्सा विज्ञानियों के अनुसार विटामिन 'ए' नेत्रों के स्वास्थ्य से बहुत अधिक संबंध रखता है । विटामिन 'ए' की कमी से रतौंधी जैसे रोग लग सकते हैं । गाजर, टमाटर, पालक, पपीता, दूध, मक्खन, अंडे, मछली व हरी तथा पत्तेदार सब्ज़ियों में विटामिन 'ए' पाया जाता है, आंवले का मुरब्बा खाने से भी नेत्र ज्योति बढ़ती है ।

● आंखों को स्वस्थ रखने के लिए त्रिफला जल काफ़ी गुणकारी है । किसी साफ़-सुथरे बर्तन में एक-दो चम्मच त्रिफलाचूर्ण को रात के समय एक गिलास पानी में डाल दें और सुबह उस पानी से आंखों को धोएं जिससे आंखों की सफ़ाई के साथ-साथ आंखों को प्राकृतिक पोषण भी मिलेगा ।

● आंखों के लिए अनेक प्रकार के व्यायाम भी हैं जिनसे आंखों को आराम मिलता है । आंखों को राहत पहुंचाने के लिए हथेली के उभरे हुए भाग से आंखों को धीरे से दबाएं, दबाने से उत्पन्न हुए अंधकार को देखने का प्रयास करें । आंखों की मांसपेशियों की थकान दूर करने के लिए सिर को स्थिर रखकर आंखों को दाएं से बाएं और फिर सिर को दाएं घुमाएं ।

● टी॰वी॰ वीडियो आंखों के लिए काफ़ी नुक़सानदेह साबित हो सकते हैं । अंधेरे में तथा नज़दीक बैठकर टी॰वी॰ नहीं देखना चाहिए । अंधेरे में टी॰वी॰ से आने वाले प्रकाश के कारण आंखें चुंधियाने लगती हैं और जब टी॰वी॰ के और समीप बैठा जाए तो यह चकाचौंध बढ़ जाती है । जिससे आंखों पर बुरा प्रभाव पड़ता है । अंधेरे कमरों में टी॰वी॰ देखने से उसके पर्दे पर चित्रों के उतार-चढ़ाव स्पष्ट दिखने से आंखों की अधिक थकान पहुंचती है जबकि हल्के प्रकाश में टी॰वी॰ देखने से आंखें जल्दी नहीं थकतीं । इसके अलावा आंखों को हानिकारक प्रभाव से बचाने के लिए टी॰वी॰ से 3-4 मीटर (10-12 फुट) की दूरी पर बैठना चाहिए । टेलीविज़न की ऊंचाई भी कम से कम 4 फुट होनी चाहिए ।

आंखों को गर्म पानी से नहीं धोना चाहिए । गर्म पानी से आंखों को धोने पर नेत्र-ज्योति क्षीण पड़ सकती है । आंखों को धुएं व आग की तेज़ आंच से भी बचाना चाहिए । जहां धूल व गर्द अधिक हो, वहां अधिक समय तक खड़ा नहीं होना चाहिए ।

चलती गाड़ी या बस में पढ़ना भी आपकी आंखों को नुक़सान पहुंचा सकता है । इससे आंखों पर ज़ोर पड़ता है, लेटकर किताबें पढ़ने की आदत छोड़ने से ही आंखों की भलाई है । लगातार कई घंटे पढ़ने से भी आंखों पर बुरा असर पड़ता है ।

कंप्यूटर पर काम करने वालों को अपनी आंखों की सुरक्षा के लिए एंटीग्लेयर ग्लासिस का प्रयोग करना चाहिए ।

लघुकथाएं

# माता-पिता का बंटवारा

नर्मदा एवं नकुल की शादी को दस साल हो चुके थे, किन्तु संतान के लिए तरस रहे थे । आख़िर अनेकों उपचारों के बाद एक साथ दो जुड़वां बेटे ने जन्म लिया । बड़े लाड-प्यार से दोनों का पालन किया जाता रहा । देखते-देखते कमल एवं किशोर बड़े हो गये । स्कूल में दाख़िला हुआ । पढ़ने में दोनों तेज़ थे, ग्रेज्युएट के बाद नौकरी में लग गये ।

नर्मदा-नकुल के माता-पिता का सपना साकार हुआ । ईश्वर के यहां देर है पर अंधेर नहीं । हमारे दोनों बेटे नौकरी पर लग गये । अब हम उनके सहारे बुढ़ापा बिता देंगे ।

नकुल-नर्मदा, बात तो तेरी सौ प्रतिशत सही है । हम उनके साथ रहने चले जाएंगे । शहर में रहने का मज़ा और होती है । तूं देखना फिर कहना मुझे ।

समय गुज़रता गया । नर्मदा एवं नकुल साठ साल को पार कर चुके थे, शरीर के कुछ अंगों ने काम करना कम कर दिया था, इसलिए अपने बेटों के पास रहना चाहते हैं । दोनों बेटे ने माता-पिता का बंटवारा किया कि महीने के पन्द्रह दिन कमल के घर रहेंगे और बाद वाले पन्द्रह दिन किशोर के यहां दोनों ने मंज़ूर रखा ।

पर मुसीबत तब खड़ी होती थी, जिस महीने के इकतीस दिन होते । तब बूढ़े मां-बाप जाए तो कहां जाए, सोलहवें दिन ।

**डॉ॰ धीरजभाई वणकर**
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बी॰डी॰ आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद (गुजरात)

# सकारात्मक सोच

एक महिला अपने घर में खाने की मेज पर परेशान बैठी थी । उसे घर का ढेर सारा काम निबटाना है, टैक्स भरना है और ऊपर से कल रिश्तेदार भी आ रहे हैं । वह सोच रही थी कि उसके जीवन में कोई ख़ुशी नहीं बची है । बस सब परेशानी ही परेशानी है । तभी उसकी नज़र अपनी लड़की पर पड़ी जो कि सामने ही बैठकर अपने स्कूल का होमवर्क कर रही थी । पूछने पर लड़की ने बताया कि टीचर ने एक निबंध लिखने को दिया है कि ईश्वर द्वारा दी गयी उन कुछ चीज़ों के बारे में लिखकर लाओ जिनसे तुम्हें ख़ुशी मिलती है । लड़की ने कुछ इस प्रकार लिखा–

• मुझे अंतिम परीक्षा की ख़ुशी है, क्योंकि इसके बाद स्कूल समाप्त हो जाएगा ।

• मुझे कड़वी दवाई पीने की ख़ुशी है, क्योंकि इससे मैं जल्दी स्वस्थ हो जाऊंगी ।

• मुझे सुबह उठाने वाली अलार्म की आवाज़ अच्छी लगती है क्योंकि इससे लगता है कि मैं समय पर उठकर अपने काम निबटा सकूंगी ।

• मेरी मां के जीवन में भी ऐसी बहुत-सी ख़ुशी की चीज़ें हैं–

• वह घर का काम करती है, क्योंकि उसके पास अपना घर है ।

• वह टैक्स भरती है क्योंकि उसके पास नौकरी है ।

• उसको रिश्तेदारों के लिए खाना बनाना है, क्योंकि वह अकेली नहीं है । मां हैरान थी कि जिन बातों को सोचकर वह दुखी हो रही थी, इस छोटी-सी बच्ची ने उनमें भी ख़ुशी तलाश कर ली । वह उठी और काम में लग गयी क्योंकि अब उसकी भी सोच बदल चुकी थी ।

# राह में रुकना मना है

हर तरफ़ कुहरा घना है
सूर्य का आना मना है ।

उल्लुओं का बोलबाला
हंस बेबस अनमना है

पार्थ ! बचना है असंभव
आज भीषण रण ठना है

दीप की ज़िद है जलेगा
आंधियों की गर्जना है

है ग़ज़ल मेरी सजल यह
अश्रुधर्मा सर्जना है

मत निराशा ओढ़ साथी
धूप की संभावना है

एक 'यायावर' चला' है
राह में रुकना मना है ।

■ **राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर'**

# मदारी

■ चांद ख़ां रहमानी

बचपन में जो चीज़ें मुझे बहुत आकर्षित करती थीं, उनमें मदारी का तमाशा, भालू का खेल, नटों की कलाबाज़ियां, सपेरे का न्योला और सांप की लड़ाई, स्वांग (नौटंकी) और मेला। मुझे ही क्या शायद हर बच्चे को मदारी के खेल और मेला अच्छा लगता होगा। उस समय ये मनोरंजन के सस्ते और सुलभ साधन थे जिनसे बच्चों का मन आसानी से खुश किया जाता था। स्वांग (जिसे उस समय गांव में मंडली, कंपनी के नाम ने भी जानते थे) जो बड़ों का मनोरंजन ज़्यादा करते थे। नट की कलाबाज़ियां लोगों को अचंभित करती थीं।

दिलदली में बसने के बाद हो सकता है कि बहुत बार रास्ते में कहीं मदारी का मजमा दिखायी दिया हो लेकिन व्यस्तता के चलते बाइक न रोकी हो और मदारी या दूसरे खेल न देख पाया, लेकिन अब फुर्सत के क्षण हैं सो अभी कालोनी में घर के सामने मदारी आया तो वह माहौल देखकर बैठ गया और खेल दिखाने लगा। मैं भी अपने पोते को लेकर खेल देखने लगा, तो बचपन की यादें ताज़ा हो गयीं कि किस तरह मदारी के कहने पर हम भी गोला बनाकर बैठ जाते थे।

मैं यादों में डूब गया कि किस तरह मदारी अपनी डुगडुगी और लोहे की बांसुरी बजाता हुआ मजमें के अन्दर चक्कर लगाता था। जब बच्चों के साथ महिलाओं, युवाओं और बड़े लोगों की भीड़ जमा हो जाती थी तो वह अपने एक बच्चे के साथ खेल शुरू कर देता था। जब मदारी के साथ कोई बच्चा नहीं होता था तो वह मजमें में बैठे लोगों में से किसी किशोर को जमूरा बनाकर बैठाकर खेल शुरू करता था। वह अपने 'जादुई' थैले में से लकड़ी छोटा का डंडा निकालकर ज़मीन पर रगड़ता था फिर चुर्रैट-मुर्रैट कर हाथ में थोड़ी मिट्टी उठाकर एक सिक्के के दो बना देता था। उस समय पांच या दस पैसे के सिक्के को बना देना कितना कौतूहल पैदा करता था।

फिर बांसुरी बजाता और झोले में से कटोरा निकाल कर दूसरे करतब दिखाना शुरू कर देता था। उस समय मदारी या दूसरे खेल दिखाने वाले सबसे बड़ा सवाल एक रुपये का करते थे जो कोई अमीर या दयावान आदमी उनकी मांग को पूरा कर देता था। हम बच्चे लोग एक कटोरी अनाज या आटा दे आते थे क्योंकि तब लोगों के पास पैसे कम ही होते थे। तब ज़्यादातर अनाज से ही ट्रांजेक्शन चलता था। आज सब काम पैसे से ही चलता है। अब अनाज हाथ में नहीं है। मैं यादों का सामान जैसी छोटी-मोटी चीज़ें होती थीं उससे कहीं बहुत ज़्यादा भीड़, दुकाने दिल्ली के किसी भी साप्ताहिक बाज़ार में होती है लेकिन इसमें घुटन और घबराहट महसूस होती है, जबकि उस मेला में उल्लास, उत्साह और अपनापन लगता था।

आज शहर में सिनेमा हाल हैं, मल्टीप्लेक्स हैं, बहुमंज़िला इमारतें हैं, चौड़ी सड़कें हैं, मॉल्स हैं, भीड़ है, सड़कों पर कारों, बसों और बाइकों का रेला है लेकिन अब न स्वांग हैं, नटों के खेल हैं, न सपेरों और भालू का खेल दिखाने वाले हैं। गांव जैसी झुग्गियां तो हैं मगर उनमें गांव जैसा खुलापन और खुली हवा नहीं है। दिल्ली से सटे ग़ाज़ियाबाद में मदारियों की एक छोटी-सी बस्ती तो है, लेकिन ज़्यादातर मदारी इस परंपरागत काम को छोड़ चुके हैं या छोड़ रहे हैं। कुछ लोग अपने बच्चों को पढ़ा भी रहे हैं। कारण शहरों में बच्चे अब मदारी का खेल देखने में कम दिलचस्पी लेते हैं। बच्चे अब कंप्यूटर और मोबाइल के गेमों में उलझकर रह गये हैं। इससे वे अपनी पुरानी संस्कृति से कटते जा रहे हैं। अब मदारियों के खेल, स्वांग, नटों के करतब शायद क़िस्से-कहानियों में भी न मिलें तो कोई हैरत की बात नहीं।

# एशियाई खेलों का इतिहास

● संपादन प्रभाग

एशियाई खेल प्रत्येक चार वर्ष बाद आयोजित होने वाली बहु-खेल प्रतियोगिता है जिसमें केवल एशिया के विभिन्न देशों के खिलाड़ी भाग लेते हैं । एशियाई खेलों को एशियाड के नाम से भी जाना जाता है । इन खेलों का नियामन एशियाई ओलंपिक परिषद द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय ओलंपिक परिषद के पर्यवेक्षण में किया जाता है । इसमें प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान के लिए स्वर्ण, दूसरे के लिए रजत और तीसरे के लिए कांस्य पदक दिये जाते हैं, एशियाई खेलों का आरंभ 1951 में हुआ था ।

### एशियाई खेल की प्रतियोगिताएं

एशियाई खेलों में निम्नलिखित खेल प्रतियोगिताएं होती हैं–

- जलक्रीड़ा - ग़ोताख़ोरी
- जलक्रीड़ा - तैराकी
- जलक्रीड़ा - लयबद्ध तैराकी
- जलक्रीड़ा - वाटर पोलो
- तीरंदाज़ी ● दंगल

● बैडमिंटन, ● बेसबॉल ● बास्केटबॉल ● बोर्ड क्रीड़ाएं ● बॉक्सिंग ● डोंगीयन ● क्रिकेट ● क्यू क्रीड़ाएं ● साइक्लिंग ● नृत्य क्रीड़ाएं ● ड्रैगन नौका ● घुड़सवारी ● असिक्रीड़ा ● फुटबॉल ● गोल्फ़ ● जिम्नास्टिक ● हैंडबॉल ● हॉकी ● जूडो ● कबड्डी ● कराटे ● रोलर क्रीड़ाएं ● रग्बी यूनियन ● पाल नौकायन ● सेपाक्टाक्रौ ● निशानेबाज़ी ● साफ्ट बॉल ● साफ्ट टेनिस ● स्क्वैश ● टेबल टेनिस ● ताइक्वांडो ● टेनिस ● वॉलीबॉल ● भारोत्तोलन ● कुश्ती ● वूशू

### एशियाई खेलों का इतिहास

प्रथम एशियाई खेलों का आयोजन नयी दिल्ली, भारत में किया गया था, जिसने 1982 में पुन: इन खेलों की मेज़बानी की । 16वें एशियाई खेलों का आयोजन 12 नवम्बर से 27 नवम्बर, 2010 के बीच किया गया, जिनकी मेज़बानी ग्वांगझोउ, चीन ने की । 17वें एशियाई खेलों का आयोजन




17 सितम्बर से 4 अक्तूबर 2014 में दक्षिण कोरिया के इंचियोन में हुआ ।

### एशियाई खेलों का आयोजन

**वर्ष : 1951, मेज़बान देश : नयी दिल्ली, भारत**

**संक्षिप्त विवरण :** पहले एशियाई खेल 4 से 11 मार्च 1951 के बीच नयी दिल्ली में आयोजित हुए थे । ये खेल पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 1950 में होने थे, मगर तैयारियों में देरी के चलते इन्हें 1951 तक के लिए टाल दिया गया । हालांकि जापान को लंदन में 1948 में हुए ओलंपिक में हिस्सा लेने नहीं दिया गया था और एशियाई खेल महासंघ की संस्थापक बैठक में भी वह शामिल नहीं हुआ, मगर इन खेलों में उसने हिस्सा लिया । इन खेलों का उद्घाटन भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद ने किया था ।

**वर्ष : 1954, मेज़बान देश : मनीला, फ़िलीपींस**

**संक्षिप्त विवरण :** दूसरे एशियाई खेल फ़िलीपींस की राजधानी मनीला में 1 से 9 मई 1954 के बीच आयोजित हुए । इन खेलों के उद्घाटन की घोषणा राष्ट्रपति रैमन मैगसेसे ने की थी और ये रिजाल मेमोरियल स्टेडियम में आयोजित हुए ।

**वर्ष : 1958, मेज़बान देश : टोकियो, जापान**

**संक्षिप्त विवरण :** तीसरे एशियाई खेलों का आयोजन पान की राजधानी टोकियो में हुआ । 24 मई से 1 जून 58 के बीच ये आयोजन हुए, जिसमें 20 देशों के 1820 लीट्स ने 13 स्पर्धाओं में हिस्सा लिया । पिछली बार के ाबले इस बार पांच स्पर्धाएं ज़्यादा थीं । एशियाई खेलों मशाल की परंपरा भी यहीं शुरू की गयी ।

**र्ष : 1962 मेज़बान देश : जकार्ता, इंडोनेशिया**

**संक्षिप्त विवरण :** चौथे एशियाई खेल 24 अगस्त से सितम्बर 1962 के बीच इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता आयोजित हुए । इसराईल और ताइवान के एथलीट्स इन ों में हिस्सा नहीं ले सके । अरब देशों और चीन के ाव के चलते इंडोनेशिया सरकार ने इसराईली और वानी प्रतिनिधियों को वीज़ा देने से इन्कार कर दिया । 16 ों के 1460 एथलीट्स ने एशियाड में हिस्सा लिया और वर्ष बैडमिंटन इन खेलों में शामिल किया गया । ोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो ने इन खेलों के उद्घाटन की षणा की थी ।

**वर्ष : 1966 मेज़बान देश : बैंकॉक, थाईलैंड**

**संक्षिप्त विवरण :** पांचवें एशियाई खेल 9 से 20 म्बर, 1966 के बीच थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में योजित हुए । यहां ताइवान और इसराईल की इन खेलों में सी हुई । कुल 18 देशों के ढाई हज़ार एथलीट और धिकारी इन खेलों में शामिल हुए । इस वर्ष महिलाओं के ीबॉल को इन खेलों में शामिल किया गया । थाईलैंड के ाराज भूमिबोल अदुल्यदेज ने इन खेलों का उद्घाटन या था ।

**वर्ष : 1970 मेज़बान देश : बैंकॉक, थाईलैंड**

**संक्षिप्त विवरण :** छठे एशियाई खेल 24 अगस्त से 4 तंबर 1970 के बीच बैंकॉक में ही आयोजित हुए । आती योजना के मुताबिक़ दक्षिण कोरिया के सिओल इसका आयोजन करना था मगर उत्तर कोरिया से सुरक्षा धमकी को देखते हुए उसने दावेदारी छोड़ दी । 18 देशों 2400 एथलीट्स और अधिकारी इन खेलों में शामिल । इस वर्ष यॉटिंग पहली बार इन खेलों में शामिल हुआ र एक बार फिर भूमिबोल अदुल्यदेज ने खेलों का घाटन किया ।

**वर्ष : 1974 मेज़बान देश : तेहरान, ईरान**

**संक्षिप्त विवरण :** सातवें एशियाई खेल 1 से 16




सितंबर 1974 के बीच ईरान की राजधानी तेहरान में आयोजित किये गये थे । इन खेलों के लिए आज़ादी खेल परिसर बनवाया गया था और पहली बार मध्य पूर्व के किसी देश ने इसका आयोजन किया । तेहरान में हुए इस आयोजन में 25 देशों के 3010 एथलीट शामिल हुए जो कि खेलों की शुरुआत से लेकर तब तक का सबसे बड़ा आयोजन साबित हुआ । तलवारबाज़ी, जिम्नास्टिक्स और महिलाओं का बास्केटबॉल इन खेलों में शामिल हुआ । फ़िलिस्तीन से ख़तरों को देखते हुए सुरक्षा की ज़बरदस्त व्यवस्था की गयी थी । मगर ये खेल राजनीति का भी शिकार हुए क्योंकि अरब मूल के देशों, पाकिस्तान, चीन और उत्तर कोरिया ने इसराईल के विरुद्ध टेनिस, तलवारबाज़ी, बास्केटबॉल और फुटबॉल के मुक़ाबलों में उतरने से इन्कार कर दिया ।

**वर्ष : 1978 मेज़बान देश : बैंकॉक, थाईलैंड**

**संक्षिप्त विवरण :** आठवें एशियाई खेल 9 से 20 दिसम्बर 1978 के बीच बैंकॉक में ही आयोजित हुए । बंगलादेश और भारत के साथ तनाव के बाद पाकिस्तान ने एशियाई खेलों के आयोजन की योजना छोड़ दी । सिंगापुर ने वित्तीय कारणों से खेलों का आयोजन करने से इंन्कार कर दिया । इसके बाद एक बार फिर थाईलैंड ने मदद की पेशकश की और खेल बैंकॉक में आयोजित हुए । राजनीतिक कारणों से इसराईल को खेलों से बाहर कर दिया गया । 25 देशों के 3842 एथलीट इसमें शामिल हुए और तीरंदाज़ी के साथ ही बोलिंग को खेलों में शामिल किया गया ।

**वर्ष : 1982 मेज़बान देश : नयी दिल्ली, भारत**

**संक्षिप्त विवरण :** 9वें एशियाई खेल 19 नवंबर से 4 दिसंबर 1982 के बीच नयी दिल्ली में आयोजित हुए ।

पहले खेलों के बाद दूसरी बार दिल्ली ने ये खेल आयोजित किये । ये एशियाई खेल एशियाई ओलंपिक परिषद के नेतृत्व में हुए । एशियाई खेल महासंघ को भंग करके ही एशियाई ओलंपिक परिषद का गठन हुआ । 33 देशों के 3411 एथलीट खेलों में शामिल हुए । घुड़सवारी, गोल्फ़, हैंडबॉल, नौकायन और महिलाओं की हॉकी इन खेलों में शामिल हुआ । इससे पहले के खेलों में जापान सर्वाधिक पदक जीतने वाला देश था, मगर इन खेलों में पहली बार चीन ने जापान की जगह ले ली और उसके बाद से उसे कोई हटा नहीं सका है । इन खेलों की तैयारी में भारत में बड़े पैमाने पर रंगीन टेलिविज़न का प्रसार हुआ । इन खेलों का शुभंकर अप्पू नाम का हाथी था । राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंह ने खेलों का उद्घाटन किया, पी॰टी॰ उषा ने खिलाड़ियों की ओर से शपथ ली और ये खेल जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित किये गये थे ।

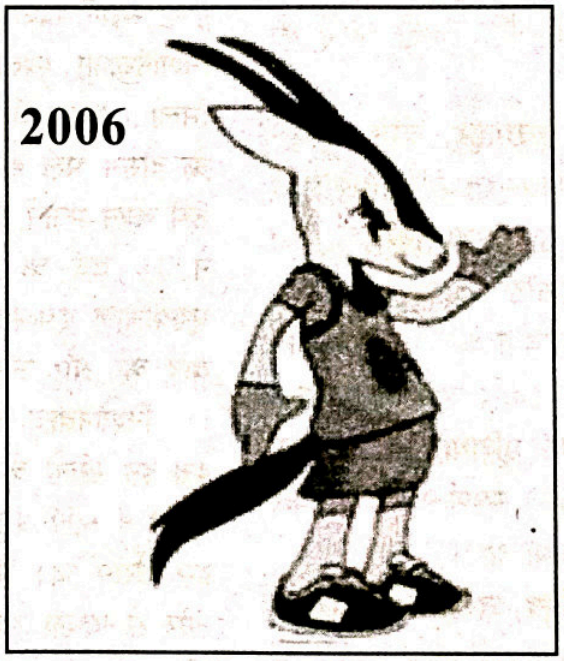


**वर्ष : 1986 मेज़बान देश : सिओल, दक्षिण कोरिया**

**संक्षिप्त विवरण :** दसवें एशियाई खेल 20 सितंबर से 5 अक्तूबर 1986 के बीच दक्षिण कोरिया के सिओल में आयोजित किये गये । इन खेलों में 27 देशों के 4839 एथलीट्स शामिल हुए और कुल 25 स्पर्धाओं में पदक बांटे गये । जूडो, ताइक्वांडो, महिलाओं की साइक्लिंग और महिलाओं की निशानेबाज़ी को इन खेलों में शामिल किया गया । इन खेलों में 83 एशियाई रिकार्ड और तीन विश्व रिकार्ड टूटे । पी॰टी॰ उषा इन खेलों की स्टार एथलीट थी जिन्होंने चार स्वर्ण और एक रजत पदक जीता । दक्षिण कोरिया ने जापान को हटाकर पदक तालिका में दूसरा स्थान हासिल कर लिया ।

**वर्ष : 1990 मेज़बान देश : बीजिंग, चीन**

**संक्षिप्त विवरण :** ग्यारहवें एशियाई खेलों का आयोजन 22 सितंबर से 7 अक्तूबर, 1990 के बीच चीन के बीजिंग में हुआ । चीन में बड़े पैमाने पर आयोजित हुआ ये पहला खेल आयोजन था । 37 देशों के कुल 6122 एथलीट उनमें शामिल हुए और 29 स्पर्धाएं आयोजित हुईं । इन खेलों में सॉफ्टबॉल, सेपक टाकरॉ, वुशु, कबड्डी और कनूइंग पहली बार शामिल किये गये । कुवैत पर इराक़ी हमले में एशि ओलंपिक परिषद के प्रमुख शेख फ़हद अल-सबा भी म गये थे और ग्यारहवें एशियाड में यही चर्चा का बड़ा वि था । इन खेलों में सात विश्व रिक़ार्ड और 89 एशि रिकार्ड टूटे ।

**वर्ष : 1994 मेज़बान : हिरोशिमा, जापान**

**संक्षिप्त विवरण :** बारहवें एशियाई खेल 2 से अक्तूबर 1994 के बीच जापान के हिरोशिमा में आयोजि हुए । इन खेलों का मुख्य संदेश एशियाई देशों में शांति औ सौहार्द को बढ़ाना था । इस पर ख़ासा ज़ोर दिया ग क्योंकि 1945 में इस जगह पर पहला परमाणु बम गिर गया था । पूर्व सोवियत संघ से स्वतंत्र हुए कज़ाकिस्त किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज़बेकिस्त को इन खेलों में शामिल किया गय ये पहले एशियाई खेल थे जो कि देश की राजधानी में आयोजित न हुए थे । पहले खाड़ी युद्ध के द इराक़ को खेलों से निलंबित र गया था । 42 देशों के 6828 एथल ने इस प्रतियोगिता में हिस्सा लि और कुल 34 स्पर्धाएं आयोजित हु बेसबॉल, कराटे और आधुनिक पेंटाथ इन खेलों में शामिल हुए ।

**वर्ष : 1998 मेज़बान : बैंकॉक, थाईलैंड**

**संक्षिप्त विवरण :** तेरहवें एशि खेल 6 से 20 दिसंबर, 1998 के बीच बैंकॉक में आयोजि हुए । इन खेलों में कुल 41 देशों ने हिस्सा लिया । बैंक ने इस तरह चौथी बार एशियाई खेलों का आयोजन किय इससे पहले 1966 में ये खेल बैंकॉक को दिये गये जबकि 1970 और 1978 में उसे दूसरे देशों के आयो नहीं कर पाने की वजह से ये आयोजन करना पड़ा था । बार फिर थाईलैंड के नरेश भूमिबोल अदुल्यदेज ने इन ख का उद्घाटन किया ।

**वर्ष : 2002 मेज़बान : बुसान, दक्षिण कोरिया**

**संक्षिप्त विवरण :** चौदहवें एशियाई खेलों का आयो 29 सितंबर से 14 अक्तूबर 2002 के बीच दक्षिण कोरि के बुसान में हुआ । 44 देशों के 6572 एथलीट्स ने

खेलों में हिस्सा लिया । 38 खेलों में मुक़ाबले हुए बड़ी संख्या में पत्रकार, अधिकारी और एथलीट भी इसमें शामिल हुए । खेलों के इतिहास में पहली बार एशियाई ओलंपिक परिषद के सभी 44 सदस्य देश इसमें शामिल हुए । इनमें उत्तर कोरिया और अफ़ग़ानिस्तान भी शामिल हुए ।

**वर्ष : 2006 मेज़बान : दोहा, क़तर**

**संक्षिप्त विवरण :** 15वें एशियाई खेल क़तर के दोहा में 1 से 15 दिसंबर 2006 के बीच आयोजित हुए । मध्य पूर्व क्षेत्र से दोहा दूसरा शहर बना जिसने एशियाड का आयोजन किया था । उससे पहले 1974 में तेहरान इन खेलों का आयोजन कर चुका था । 29 खेलों की 46 स्पर्धाएं आयोजित हुईं । परिषद के सभी 45 देशों ने इन खेलों में हिस्सा लिया । खेलों के दौरान ही दक्षिण कोरियाई घुड़सवार किम ह्युंग चिल की मौत हो गयी और इसकी खेलों के दौरान काफ़ी चर्चा रही थी ।

**वर्ष : 2010 मेज़बान : ग्वांगझू, चीन**

**संक्षिप्त विवरण :** चीन के ख़ूबसूरत शहर ग्वांगझू ने 16वें एशियाड की मेज़बानी की । 12 से 29 नवम्बर 2010 तक समाप्त हुए इस खेलकुंभ में रेकॉर्ड 42 खेलों की 476 स्पर्धाओं में 14 हज़ार एथलीट ने शिरकत की । मेज़बान होने के नाते चीन का सबसे बड़ा दल (1454 एथलीट) रहा । क़तर (2006) में आयोजित 15वें एशियाड में चीन ने हमेशा की तरह सबसे अधिक (165) स्वर्ण पदक जीतकर पदक तालिका में अव्वल स्थान पाया था ।

**वर्ष : 2014 मेज़बान : इंचियोन, दक्षिण कोरिया**

**संक्षिप्त विवरण :** 17वें एशियाई खेल 2014 में दक्षिण कोरिया के इंचियोन में आयोजित हुए । इनका आयोजन 17 सितम्बर से 4 अक्तूबर 2014 के मध्य हुआ । इस दौरान जहां प्रतिभागियों के बीच हर पदक के लिए बेहद कड़ा संघर्ष देखने को मिला वहीं देश-विदेश से आए दर्शकों ने बेहद दोस्ताना माहौल में प्रतिस्पर्धाओं का लुत्फ़ उठाया । अंततः 17वें एशियाई खेलों में 439 स्वर्ण पदकों के लिए 45 देशों के 14,000 खिलाड़ियों ने 36 खेलों में हिस्सेदारी की । आर्चरी, वेटलिफ्टिंग और शूटिंग में जहां 14 नये वर्ल्ड रेकार्ड्स बने, वहीं बड़ी संख्या में गेम्स रिकार्ड भी टूटे । चीन 151 स्वर्ण पदक सहित कुल 342 पदक जीत एशिया में खेलों का सिरमौर बना रहा । मेज़बान साउथ कोरिया ने 79 स्वर्ण सहित कुल 234 पदक हासिल किये, जबकि जापान ने 47 स्वर्ण पदक के साथ कुल 200 पदक अपनी झोली में डाले ।

भारत ने इन खेलों में 11 स्वर्ण, 10 रजत और 36 कांस्य सहित कुल 57 पदक हासिल किये और आठवें स्थान पर रहा । भारत 2010 ग्वांग्झू खेलों के अपने 65 पदकों की संख्या में सुधार करने या इसकी बराबरी करने के इरादे से उतरा था । भारतीय दल हालांकि पिछली बार की तुलना में कम ही पदक जीत पाया । भारत ने 11 स्वर्ण जीते, जो पिछली बार की तुलना में 3 कम रहे । भारत पदक तालिका में 8वें स्थान पर रहा, जो पिछली बार के चीन खेलों की तुलना में 2 स्थान नीचे है । ग्वांग्झू में भारत ने 14 स्वर्ण, 17 रजत और 34 कांस्य पदक जीतकर छठा स्थान हासिल किया था । भारत ने एथलेटिक्स और कबड्डी में 2-2 स्वर्ण पदक जीते जबकि तीरंदांज़ी, मुक्केबाज़ी, हाकी, निशानेबाज़ी, स्क्वाश, टेनिस और कुश्ती में 1-1 स्वर्ण पदक मिला । भारत के पदकों की संख्या में यहां एशियाई खेलों के दौरान भले ही गिरावट आयी हो लेकिन इसके बावजूद उसे जश्न मनाने के काफ़ी मौक़े मिले, जब पुरुष हॉकी टीम ने 16 वर्ष के बाद स्वर्ण पदक जीता, जबकि महान मुक्केबाज़ एम॰सी॰ मैरीकॉम ने स्वर्ण पदक जीतकर अपने क़द को और ऊंचा किया ।

निशानेबाज़ जीतू राय और फ्रीस्टाइल पहलवान योगेश्वर दत्त इन खेलों के नायकों में शामिल रहे । वर्ष 2010 में भारत ने 609 प्रतिभागियों को मैदान में उतारा था, जबकि इस दौरान 541 खिलाड़ियों ने चुनौती पेश की । भारत की ओर से पहला स्वर्ण पदक सेना के प्रतिभावना निशानेबाज़ जीतू राय ने पुरुष 50 मीटर पिस्टल स्पर्धा में प्रतियोगिताओं के पहले ही दिन जीता । भारत के लिए अंतिम स्वर्ण पदक महिला और पुरुष कबड्डी टीमों ने जीते । देश को कुछ स्वर्ण कबड्डी जैसे ग़ैर-ओलंपिक खेलों में मिले, जो एशिया के अधिकांश हिस्सों में भी लोकप्रिय नहीं है ।

इस बार भी भारत ग्लास्गो में राष्ट्रमंडल खेलों में अच्छा प्रदर्शन करने के बाद यहां था और एक बार फिर राष्ट्रमंडल खेलों और एशियाई खेलों के स्तर में अंतर देखने को मिला । एशियाई खेलों में एक बार फिर चीन ने दबदबा बनाया । स्वर्ण पदकों की गिरती संख्या के बीच सरदार सिंह की अगुआई वाली भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने फ़ाइनल में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को पेनल्टी शूट आउट में हराकर देश को जश्न मनाने का मौक़ा दिया ।

# हाथी के बारे में रोचक तथ्य

1. आपने हमेशा देखा होगा कि हाथी दिन भर अपने कान हिलाता रहता है, क्या आपने कभी सोचा कि ऐसा क्यों ? अस्ल में हाथी अपने विशालकाय शरीर की गर्मी को कानों के ज़रिये बाहर छोड़ता है । यह काम हाथी के कानों की कोशिकाएं करती हैं । यही कारण है कि अफ़्रीक़ा के हाथियों के कान बहुत बड़े होते हैं, क्योंकि वहां गर्मी ज़्यादा पड़ती है ।

2. रेलवे की शुरुआत में ट्रेन के डिब्बे को धकेलने, उठाने व माल ढ़ोने के लिए क्रेन की जगह हाथी का इस्तेमाल किया जाता था । ये बात 1963 की है, जब बड़ौदा में ट्रेन को खींचने से लेकर माल ढ़ोने तक हाथियों का इस्तेमाल किया गया था ।

3. हाथियों में यौवन अवस्था आमतौर पर 13 या 14 साल की आयु में आ जाती है । हाथी एक मात्र ऐसा जानवर है, जिसको यौन क्रिया के लिये प्रकृति ने अलग से एक ग्लैंड दिया है, जिसे 'टेंपोरल ग्लैंड' कहते हैं, जो कान और आंख के बीच में शरीर के अंदर होता है ।

4. एक हाथी पानी की गंध को 4.5 किलोमीटर की दुरी से सूंघ सकता है । लेकिन हाथी एक मिनट में केवल 2 से 3 बार सांस लेते व छोड़ते हैं ।

5. हाथी इकलौता ऐसा जानवर है जो कि कूद नहीं सकता और जिसके चार घुटने होते हैं ।

6. शेर को भले ही जंगल का राजा कहा जाता है, लेकिन वह गेंडे और हाथी से कभी भी लड़ना नहीं चाहता ।

7. हर हाथी की गरज भी हम मनुष्यों की आवाज़ की तरह अलग-अलग होती है । हाल के अध्ययनों से पता चला है कि हाथी जिस आवाज़ को सुनते हैं, उसकी नक़ल कर सकते हैं ।

8. हाथी के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये कभी भी आपस में नहीं लड़ते । अगर किसी झुंड का एक हाथी मर जाए तो सारा झुंड अजीब-अजीब तरह से गरज कर शोक मनाता है ।

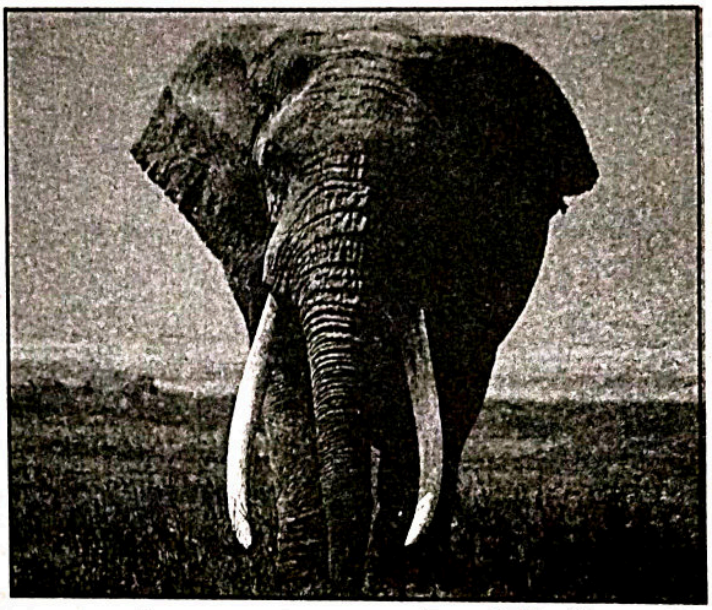

9. हाथी साफ़-सुथरा रहना पसंद करते हैं और हर रोज़ नहाते हैं ।

10. हाथी अपनी सूंड से फ़र्श पर गिरा एक छोटा-सा सिक्का भी उठा सकते हैं । कई अन्य प्रजातियों की तरह, हाथी अपनी सूंड से ब्रश को पकड़ कर 'कलाकारी' भी करते हैं ।

11. हाथी की आंखों की रोशनी कम होती है, लिहाज़ा वह अपनी सूंड का इस्तेमाल उसी प्रकार करता है, जिस तरह एक नेत्रहीन व्यक्ति लकड़ी का । हाथी चलते वक़्त सूंड से नीचे की ओर फूंकता है और हवा ज़मीन से टकरा कर वापस आती है, उससे उसे आगे की राह का अंदाज़ा हो जाता है । हाथी एक बार में अपनी सूंड में क़रीब 8 से 9 लीटर तक पानी भर सकता है । वह सूंड से 350 किलोग्राम तक वज़न उठा सकता है ।

12. मादा हाथी हर 4 साल में एक बच्चे को जन्म देती है । उसका गर्भकाल औसतन 22 महीने का होता है । एक प्रतिशत मामलों में ही हाथी के जुड़वां बच्चे जन्म लेते हैं । नवजन्मे हाथी की लंबाई लगभग 83 सेंटीमीटर और वज़न 112 किलो तक का होता है ।

13. हाथी के शरीर का सबसे मुलायम हिस्सा उनके कान के पीछे होता है जिन्हें 'कुनुले' कहते हैं । हाथियों को

संभालने वाले महावत अपने पैरों का उपयोग करके कुनुले के ज़रिये हाथियों को निर्देश देते हैं ।

14. हाथी की आंखों की रोशनी बहुत कम होती है । ख़ास बात यह है कि तेज़ रोशनी में उन्हें कम दिखाई देता है और कम रोशनी में ज़्यादा । हाथी की आंख की पुतलियां बहुत जल्दी सूख जाती हैं, जिस वजह से वह अपनी आंख की पुतलियां हिला नहीं पाता है । पुतलियां आसानी से हिल सकें, इसके लिए उन्हें नम रखना ज़रूरी होता है, यही कारण है कि हाथी की आंख में एक तरल पदार्थ की सप्लाई होती रहती है, जो ज़्यादा होने पर आंख से बाहर निकल आता है, जिसे हम आंसू समझ बैठते हैं ।

15. जवान अफ़्रीक़ी हाथी की लंम्बाई 13 फ़ीट तक बढ़ जाती है और भारतीय हाथियों की 10 फीट ।

16. जवान अफ़्रीक़ी हाथी का वज़न लगभग 6,160 किलोग्राम तक होता है और भारतीय हाथियों का 5000 किलोग्राम तक ।

17. हाथियों का जीवन काल औसतन हम मनुष्यों की तरह 70 साल तक का ही होता है ।

18. हाथी आमतौर पर 6 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ़्तार से चलते हैं । इतना विशाल शरीर होनें के बावजूद हाथी दिन भर में क़रीब 10 से 20 किलोमीटर चलते हैं और सोते सिर्फ़ 3 से 4 घंटे । ख़ास बात यह है कि हाथी लेट कर नहीं बल्कि खड़े होकर ही सोते हैं ।

19. जानवरों में हाथियों का दिमाग़ सबसे बड़ा होता है और हाथी लंबे समय तक पानी में तैर सकते हैं ।

20. हाथी दिन के 16 घंटे सिर्फ़ खाने में ही बिता देते हैं । ये लगभग एक दिन में 120 किलो तक भोजन खा जाते हैं । ख़ास बात यह है कि वह उसका सिर्फ़ 35 फ़ीसदी ही पचा पाता है, बाक़ी मलद्वार से बाहर निकल जाता है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223

**संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद**

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

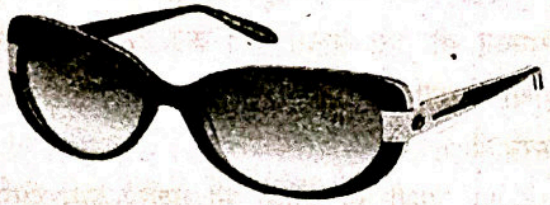


Asian Optics

a multibrand showroom

SNP Area, Sakchi ,Jsr.
2221184

Main Road, Golmuri ,Jsr.
2341175

अल्लाह के रसूल ( सल्ल० ) ने
इरशाद फ़रमाया–
"जिसका घर मस्जिद से दूर है और
दूर से नमाज़ पढ़ने आता है,
उसे हश्र में
सबसे बड़ा इनाम मिलेगा ।"
( बुख़ारी, मुस्लिम )

★ ★ ★

A WELL WISHER

ABDUL RAHMAN SHAHI
NAGPUR

Posted on 20-21 September 2017
October 2017
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.09.2017
Total Pages-52 (With Covers)

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017
Posted at DELHI R.M.S. Delhi-6

अल्लाह के रसूल ( सल्ल० ) ने
इरशाद फ़रमाया–
"जो व्यक्ति इशा की नमाज़ जमाअत से पढ़ता है वह ऐसा है,
जैसे उसने आधी रात तक नफ़्ल नमाज़ पढ़ी और
उसने फ़ज्र की नमाज़ भी जमाअत से पढ़ी,
तो मानो उसने सारी रात नफ़्ल नमाज़ पढ़ी ।"
( मुस्लिम )

☆ ☆ ☆

*A WELL WISHER*

**ABDUR RAUF SANGLANI**
**NAGPUR**